PSC ACADEMY

HISTORY OF CHHATTISGARH

By RAKESH SAO

WWW.PSCACADEMY.IN

2ND Edition 2018

Printing and Publishing Rights with the Publishers….

No part of this book may be reproduced or copied in any form or by any means without the written permission of the publishers. Breach of this condition is liable for legal action.

Information and Facts given in this book is yet to be authenticated. Please refer and consist with original source.

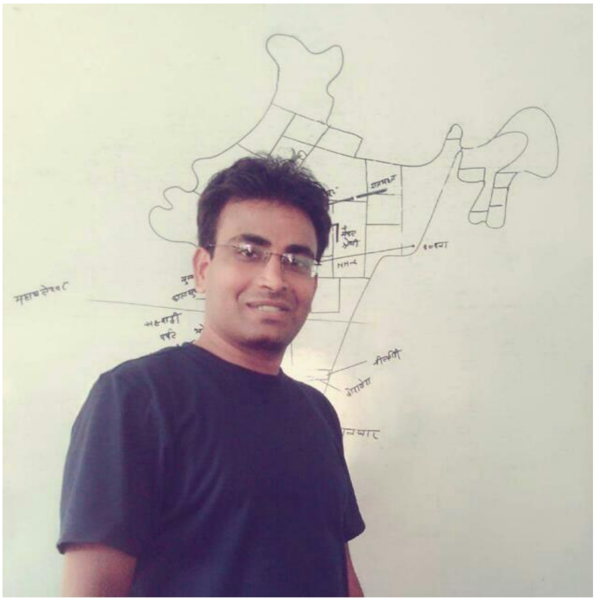

RAKESH SAO

CSE (BIT , Durg)

DIRECTOR (PSC ACADEMY)

काकतीय वंश

- काकतीय वंश (1324 – 1947)
- मराठा अधीन काकतीय वंश (1778 – 1800)
- आंग्ल - मराठा अधीन काकतीय वंश (1800 – 1854)
- ब्रिटिश शासन अधीन काकतीय वंश (1854 – 1947)
- काकतीय वंशीय महत्वपूर्ण तथ्य
- बस्तर का रथयात्रा (गोंचा पर्व)
- बस्तर का दशहरा
- जनजातीय विद्रोह
- महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
- मुख्य परीक्षा आधारित महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

काकतीय वंश (1324 – 1947)

- छत्तीसगढ़ के प्राचीन इतिहास में **काकतीय वंश** का स्थान महत्वपूर्ण है |
- **प्रतापरूद्रदेव प्रथम** ने वारंगल को राजधानी के रूप में स्थापित कर काकतीय वंश की स्थापना किया |
- **प्रतापरूद्रदेव प्रथम** काकतीय वंश का आदिपुरुष थे |
- काकतीय वंश की राजधानी **वारंगल** में काकतीय वंश के अंतिम शासक **प्रतापरूद्रदेव द्वितीय (1289 – 1323)** का साम्राज्य था |
- 1310 ई. में **अलाउद्दीन खिलज़ी** के सेनापति **मलिक काफ़ूर** ने प्रतापरूद्रदेव के साम्राज्य पर आक्रमण किया |
- प्रतापरूद्रदेव ने कोहिनूर का हीरा तथा अपनी सोने की प्रतिमा को सोने की जंजीर से बंधवाकर मलिक काफ़ूर को समर्पित कर उनकी अधीनता को स्वीकार किया |
- 1316 ई. में अलाउद्दीन खिलज़ी की मृत्यु के पश्चात् प्रतापरूद्रदेव ने पुन: स्वतंत्र शासन की शुरुवात किया |
- 1321 ई. में **गयासुद्दीन तुगलक** के पुत्र **मुहम्मद बिन तुगलक** ने प्रतापरूद्रदेव के साम्राज्य पर आक्रमण किया तथा प्रतापरूद्रदेव ने उनकी अधीनता को स्वीकार किया |
- 1324 ई. प्रतापरूद्रदेव के अनुज **अन्नमदेव** ने छिंदक नागवंश के अंतिम शासक **हरीशचन्द्र देव** को पराजित कर **मंदोता** को राजधानी के रूप में स्थापित कर में **काकतीय वंश** की नींव रखीं |
- बस्तर के लोकगीतों में इस राजवंश को **कुम्हड़ा फलिमा वंश** व **चालकी वंश** की संज्ञा से सुशोभित किया जाता है |

शासन

- शासनकाल - 1324 – 1947
- शासन क्षेत्र - बस्तर [CGVyapam Asst. Account Officer 2017]
- संस्थापक - अन्नमदेव
- वास्तविक संस्थापक - अन्नमदेव
- अंतिम स्वतंत्र शासक - अजमेर सिंह
- अंतिम शासक - प्रवीरचंद भंजदेव

राजधानी

- प्रथम राजधानी - मंदोता (1324 : अन्नमदेव)
- द्वितीय राजधानी - बस्तर (1468 : पुरुषोत्तम देव)
- तृतीय राजधानी - जगदलपुर (1770 : दलपत देव)

महत्वपूर्ण तथ्य

- धर्म - शैव धर्म
- मंदिर - शिव / माता
- कुलदेवी - दंतेश्वरी देवी (मणिकेश्वरी देवी) [CGPSC MAINS 2011]
- साक्ष्य - दंतेवाड़ा अभिलेख
- अधीनता - मराठा वंश
- समकालीन - मराठा वंश , फणिनाग वंश , छिंदकनाग वंश

वारंगल काकतीय वंश के प्रमुख शासक

प्रमुख शासक	शासनकाल	विवरण
प्रतापरूद्रदेव प्रथम	1000 - 1020	▪ वारंगल में काकतीय वंश का संस्थापक ▪ काकतीय वंश का आदिपुरुष
प्रतापरूद्रदेव द्वितीय	1289 – 1323	▪ वारंगल में काकतीय वंश का अंतिम शासक ▪ अन्नमदेव के बड़े भाई

काकतीय वंश के शासक

क्र.	शासक	क्र.	शासक	क्र.	शासक	क्र.	शासक
1	अन्नमदेव	7	प्रतापराज देव	13	चंदेलमामा	19	भैरम देव
2	हमीरदेव	8	जगदीश राज देव	14	दलपत देव	20	रानी चोरिस
3	भैरव देव	9	वीर नारायण देव	15	अजमेर सिंह	21	रूद्रप्रताप देव
4	पुरुषोत्तम देव	10	वीर सिंह देव	16	दरिया देव	22	प्रफुल्ल कुमारी देवी
5	जयसिंह देव	11	दिकपाल देव	17	महिपाल देव	23	प्रवीरचंद भंजदेव
6	नरसिंह देव	12	राजपाल देव	18	भूपाल देव		

काकतीय वंश

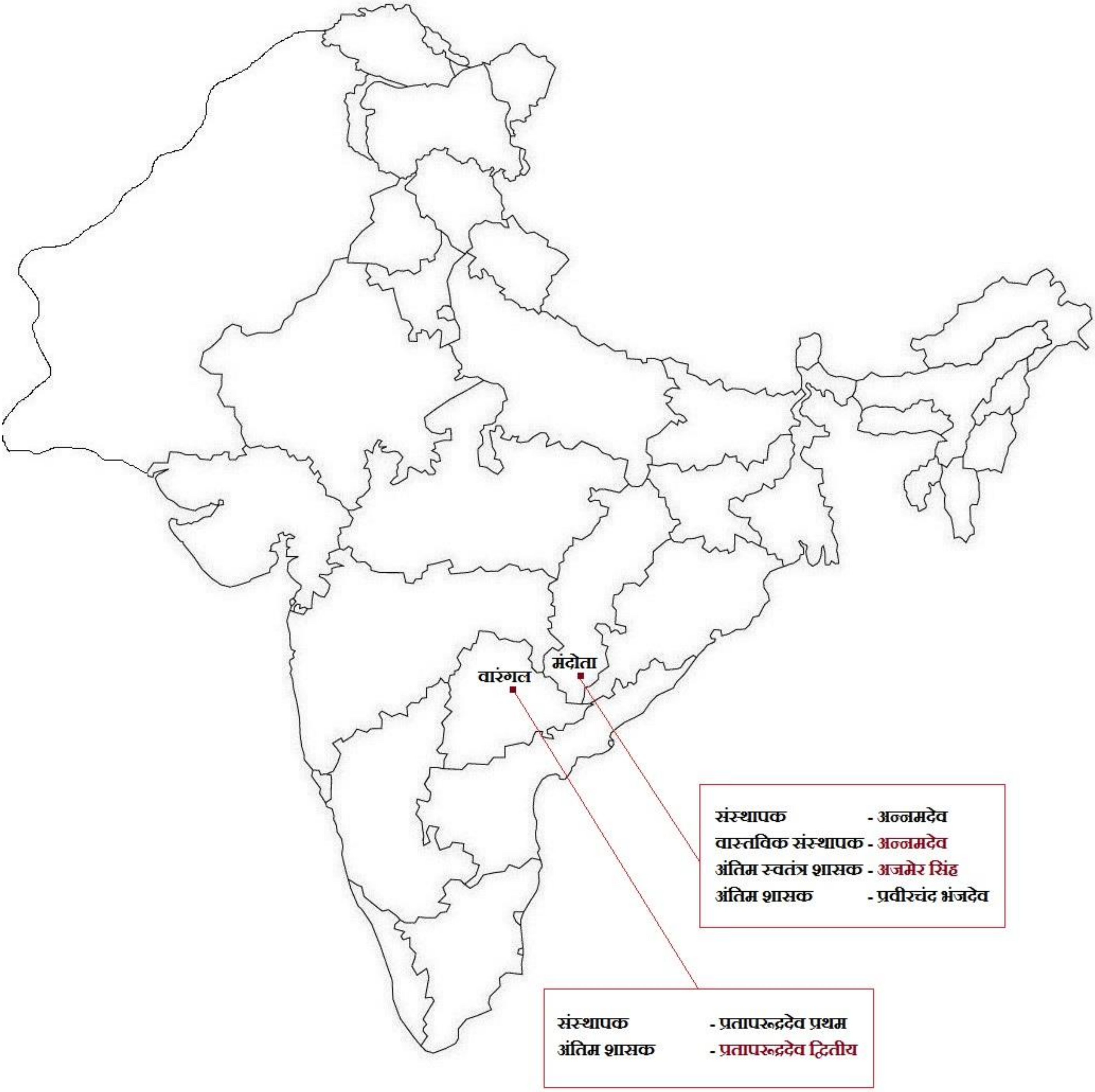
मंदोता
वारंगल
संस्थापक - अन्नमदेव
वास्तविक संस्थापक - अन्नमदेव
अंतिम स्वतंत्र शासक - अजमेर सिंह
अंतिम शासक - प्रवीरचंद भंजदेव
संस्थापक - प्रतापरूद्रदेव प्रथम
अंतिम शासक - प्रतापरूद्रदेव द्वितीय

काकतीय वंश

प्रतापरूद्रदेव द्वितीय (1289 – 1323)

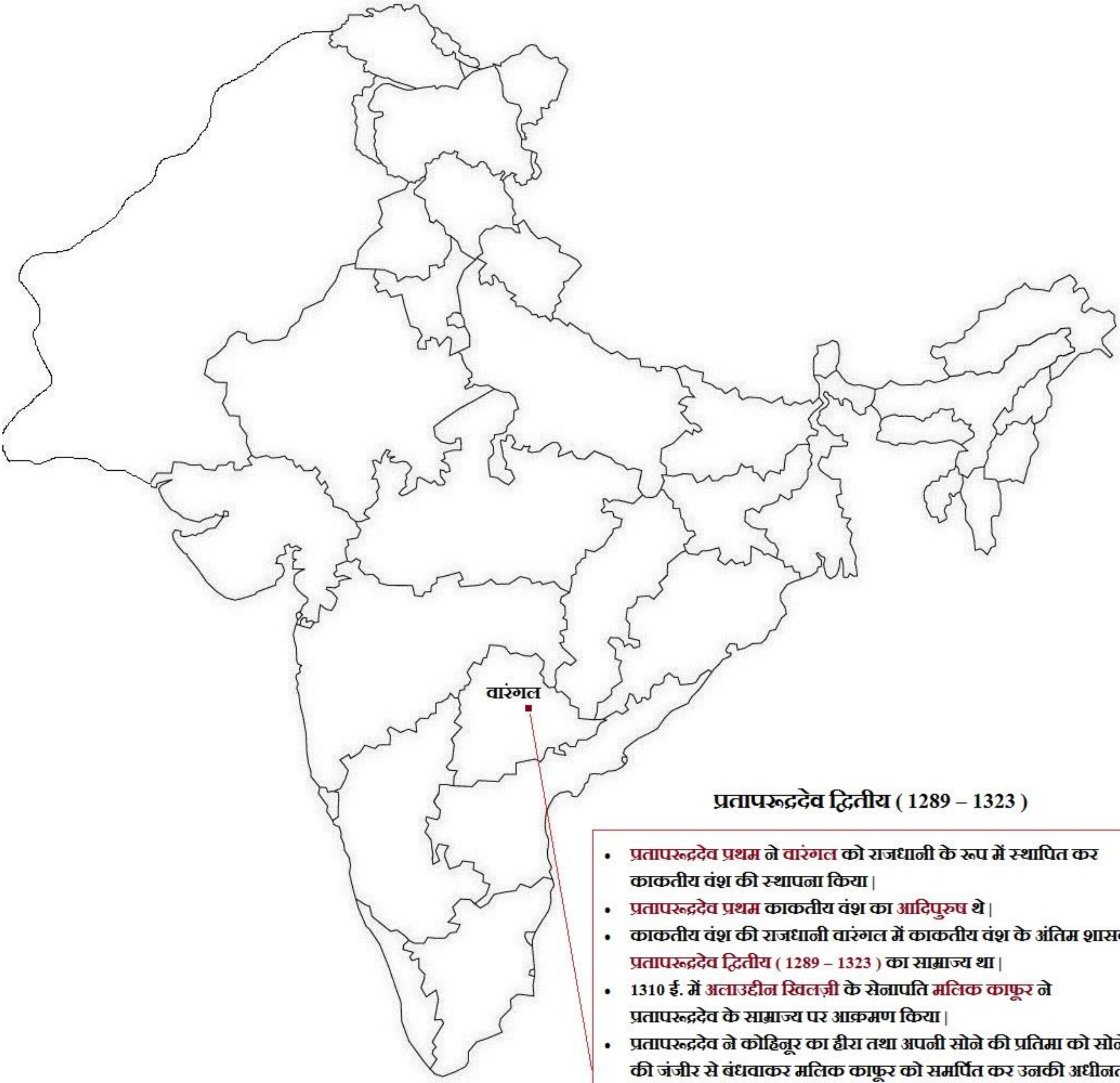

प्रतापरूद्रदेव द्वितीय (1289 – 1323)

- प्रतापरूद्रदेव प्रथम ने वारंगल को राजधानी के रूप में स्थापित कर काकतीय वंश की स्थापना किया |
- प्रतापरूद्रदेव प्रथम काकतीय वंश का आदिपुरुष थे |
- काकतीय वंश की राजधानी वारंगल में काकतीय वंश के अंतिम शासक प्रतापरूद्रदेव द्वितीय (1289 – 1323) का साम्राज्य था |
- 1310 ई. में अलाउद्दीन खिलज़ी के सेनापति मलिक काफूर ने प्रतापरूद्रदेव के साम्राज्य पर आक्रमण किया |
- प्रतापरूद्रदेव ने कोहिनूर का हीरा तथा अपनी सोने की प्रतिमा को सोने की जंजीर से बंधवाकर मलिक काफूर को समर्पित कर उनकी अधीनता को स्वीकार किया |
- 1316 ई. में अलाउद्दीन खिलज़ी की मृत्यु के पश्चात् प्रतापरूद्रदेव ने पुन: स्वतंत्र शासन की शुरुवात किया |
- 1321 ई. में गयासुद्दीन तुगलक के पुत्र मुहम्मद बिन तुगलक ने प्रतापरूद्रदेव के साम्राज्य पर आक्रमण किया तथा प्रतापरूद्रदेव ने उनकी अधीनता को स्वीकार किया |

काकतीय वंश

राजधानी

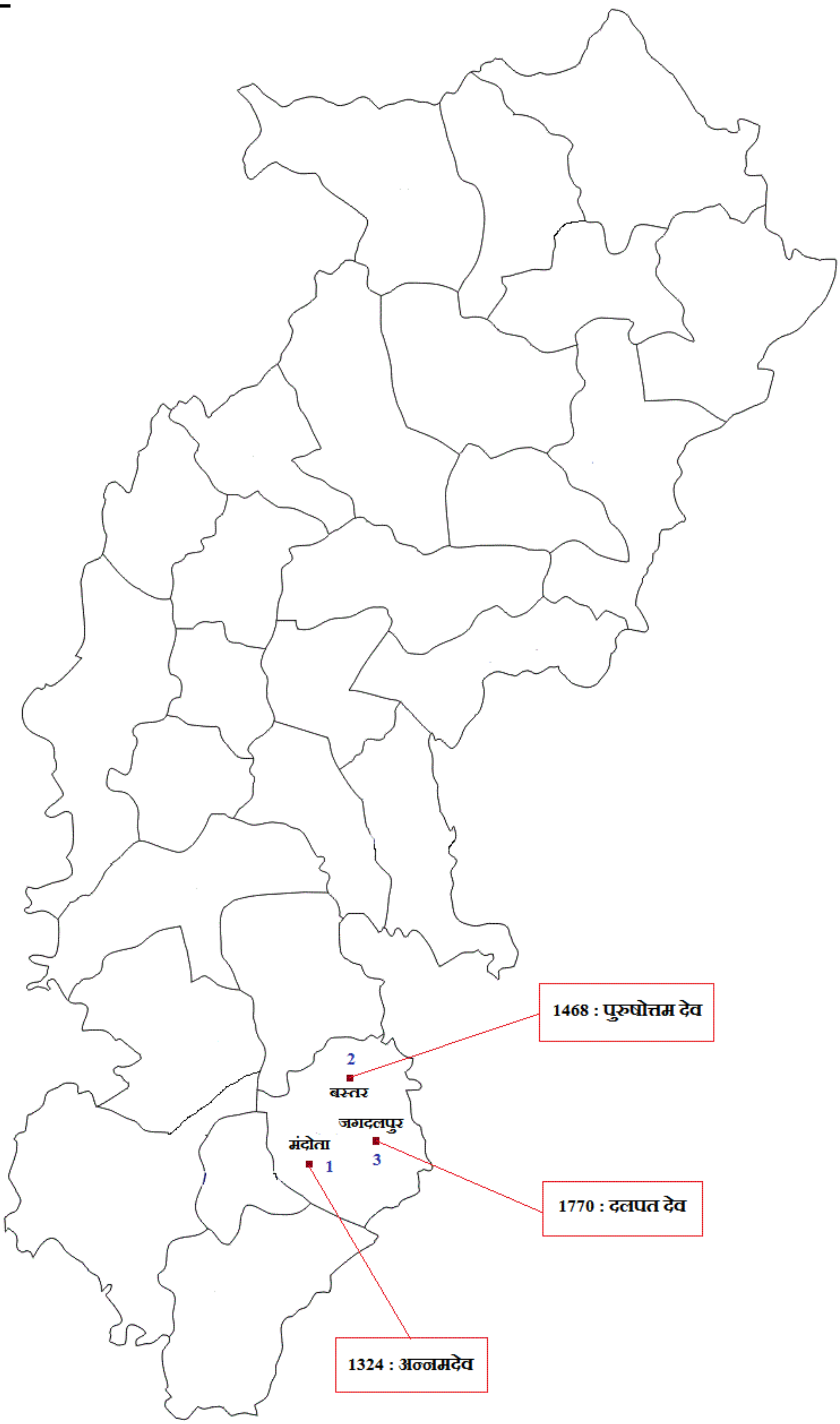

काकतीय वंश

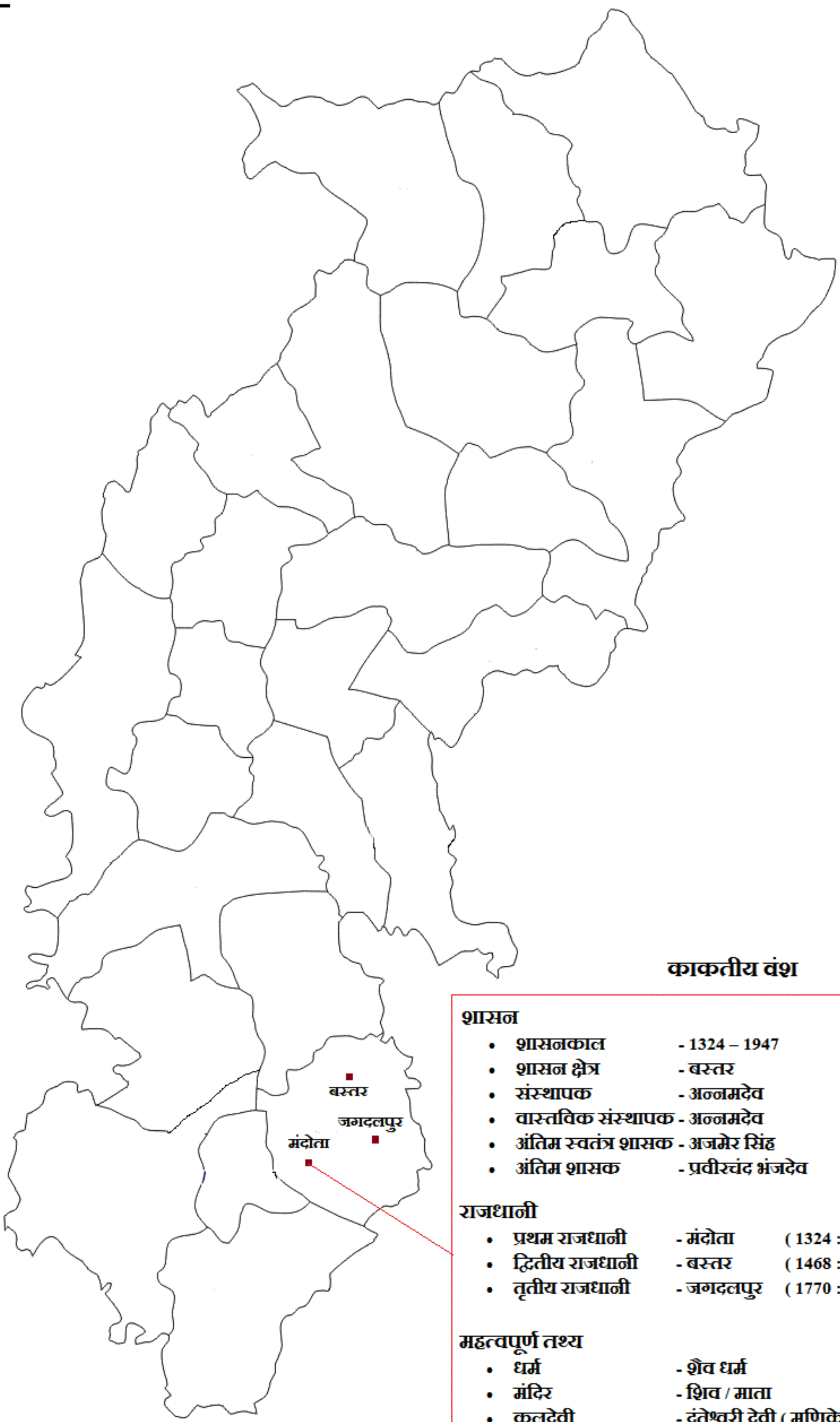

काकतीय वंश

शासन

- शासनकाल - 1324 – 1947
- शासन क्षेत्र - बस्तर
- संस्थापक - अन्नमदेव
- वास्तविक संस्थापक - अन्नमदेव
- अंतिम स्वतंत्र शासक - अजमेर सिंह
- अंतिम शासक - प्रवीरचंद भंजदेव

राजधानी

- प्रथम राजधानी - मंदोता (1324 : अन्नमदेव)
- द्वितीय राजधानी - बस्तर (1468 : पुरुषोत्तम देव)
- तृतीय राजधानी - जगदलपुर (1770 : दलपत देव)

महत्वपूर्ण तथ्य

- धर्म - शैव धर्म
- मंदिर - शिव / माता
- कुलदेवी - दंतेश्वरी देवी (मणिकेश्वरी देवी)
- साक्ष्य - दंतेवाड़ा अभिलेख
- अधीनता - मराठा वंश
- समकालीन - मराठा वंश, फणिनाग वंश, छिंदकनाग वंश

काकतीय वंश

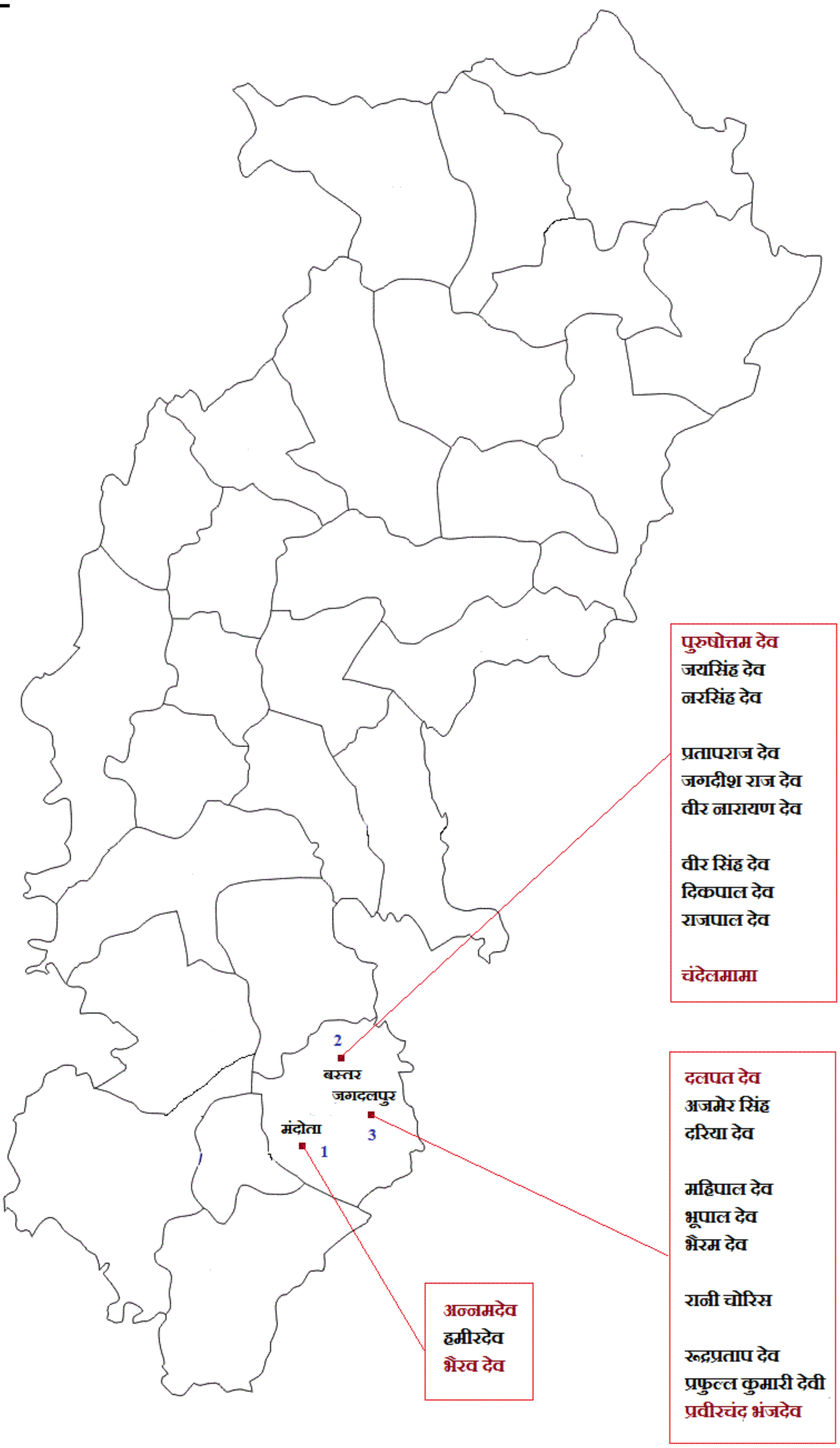

2
बस्तर
जगदलपुर
मंदोता
3
1
पुरुषोत्तम देव
जयसिंह देव
नरसिंह देव
प्रतापराज देव
जगदीश राज देव
वीर नारायण देव
वीर सिंह देव
दिकपाल देव
राजपाल देव
चंदेलमामा
दलपत देव
अजमेर सिंह
दरिया देव
महिपाल देव
भूपाल देव
भैरम देव
रानी चोरिस
रूद्रप्रताप देव
प्रफुल्ल कुमारी देवी
प्रवीरचंद भंजदेव
अन्नमदेव
हमीरदेव
भैरव देव

काकतीय वंश

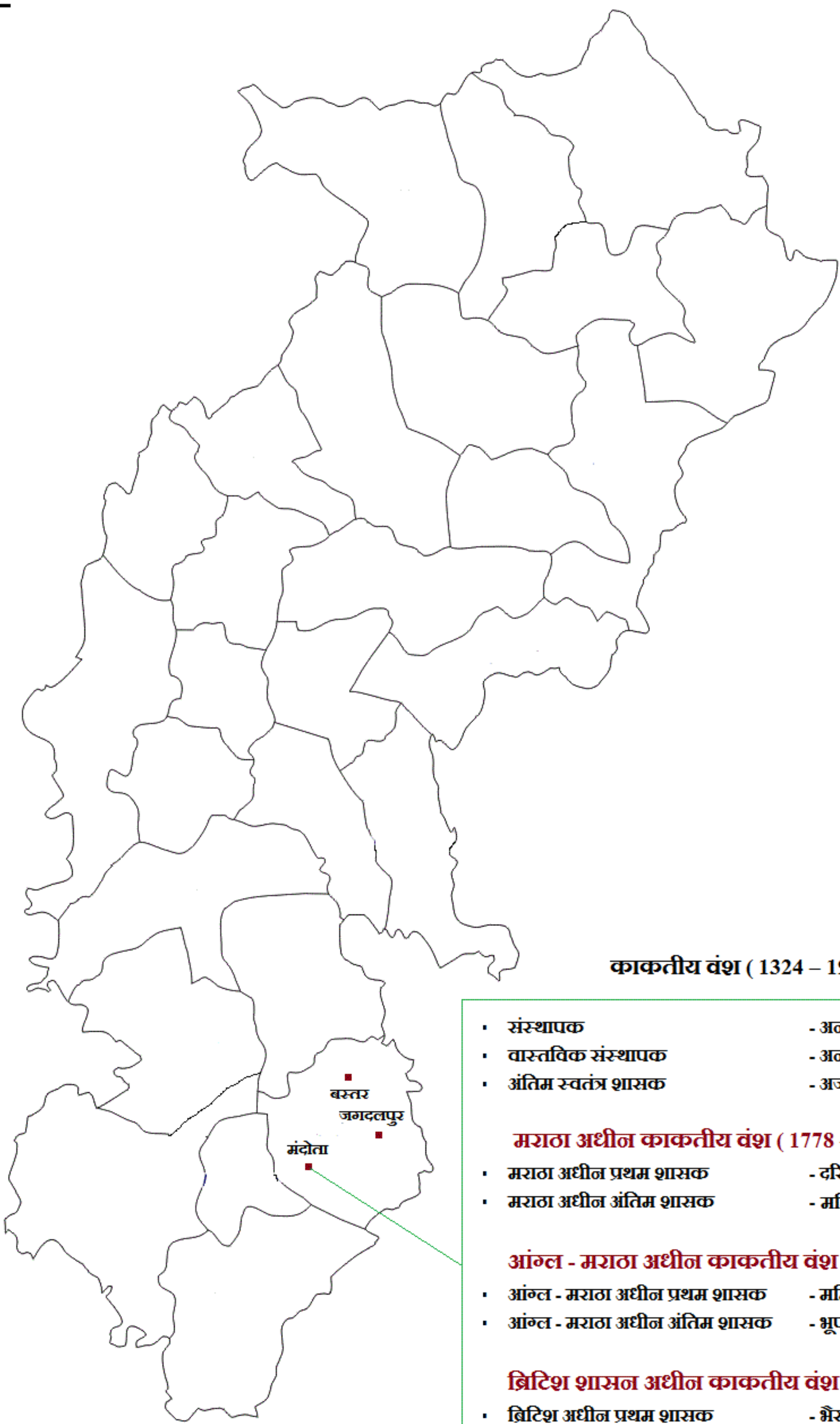

काकतीय वंश (1324 – 1947)

- संस्थापक - अन्नमदेव
- वास्तविक संस्थापक - अन्नमदेव
- अंतिम स्वतंत्र शासक - अजमेर सिंह

मराठा अधीन काकतीय वंश (1778 – 1800)

- मराठा अधीन प्रथम शासक - दरियादेव
- मराठा अधीन अंतिम शासक - महिपाल देव

आंग्ल - मराठा अधीन काकतीय वंश (1800 – 1854)

- आंग्ल - मराठा अधीन प्रथम शासक - महिपाल देव
- आंग्ल - मराठा अधीन अंतिम शासक - भूपाल देव

ब्रिटिश शासन अधीन काकतीय वंश (1854 – 1947)

- ब्रिटिश अधीन प्रथम शासक - भैरम देव
- ब्रिटिश अधीन अंतिम शासक - प्रवीरचंद भंजदेव
- अंतिम शासक - प्रवीरचंद भंजदेव

काकतीय वंश के प्रमुख शासक

प्रमुख शासक	शासनकाल	विवरण

अन्नमदेव	1324 – 1369	▪ समकालीन - अलाउद्दीन खिलजी (मलिक काफूर)
		▪ युद्ध - 1324 में अन्नमदेव ने हरीशचन्द्र देव (छिंदकनागवंश के अंतिम शासक) को हराकर बस्तर में काकतीय वंश की स्थापना किया |
		▪ पत्नी - **सोनकुंवर चंदेलिन** (चंदेल राजकुमारी)
		▪ उपाधि - अन्नराज (दंतेवाड़ा शिलालेख)
		▪ नगर स्थापत्य- दंतेवाड़ा (शंखनी – डंकिनी नदी के संगम पर)
		▪ राजधानी - मंदोता (राजधानी परिवर्तन : 1324 - बारसूर से मंदोता)
		▪ स्थापत्य - **दंतेश्वरी (मणिकेश्वरी) माता मंदिर** , तारला ग्राम (दंतेवाड़ा)
		▪ संज्ञा - बस्तर के लोक गीतों में **"चालकी वंश राजा"** (काकतीय वंश के संस्थापक)
		▪ संघर्ष - **चमेली देवी का संघर्ष** अन्नमदेव के साथ (हरीशचन्द्र देव की पुत्री)
		▪ **विशेष**
		  ▪ बस्तर में काकतीय वंश के संस्थापक
		  ▪ बस्तर में काकतीय वंश के वास्तविक संस्थापक
		  ▪ मध्ययुगीन बस्तर के शासन का विधिवत संस्थापक

हमीरदेव	1369 – 1410	▪ पत्नी - श्यामकुंवर बघेलिन ▪ उपाधि - हमीरुदेव , एमीराजदेव
भैरवदेव	1410 – 1468	▪ पत्नी - मेघावती ▪ पुत्र - पुरुषोत्तम देव ▪ उपाधि - भयरदेव ▪ प्रसिद्धि - पत्नी **मेघावती** की स्मृति में प्रचलित **मेघा साड़ी** (मेघई गोहड़ी भृति) बस्तर में आज भी प्रचलित है |
पुरुषोत्तम देव	1468 – 1534	▪ राजधानी - बस्तर (राजधानी परिवर्तन : 1468 - मंदोता से बस्तर) ▪ उपाधि - लाहरू रथपति (पुरी के शासक द्वारा) ▪ आयोजन - बस्तर का दशहरा तथा बस्तर का रथयात्रा (गोंचा पर्व) का प्रारंभ किया |
नरसिंह देव	1558 – 1602	▪ पत्नी - लक्ष्मीकुंवर बघेलिन ▪ विशेष - लक्ष्मीकुंवर बघेलिन ने अनेक तालाब व बगीचे बनवाए |
प्रतापराज देव	1602 – 1625	▪ गोलगुण्डा के **कुलीकुतुब शाह** ने बस्तर पर आक्रमण किया परंतु पराजित हुआ |
जगदीशराज देव	1625 – 1639	▪ गोलगुण्डा के **अब्दुल्ला कुतुबशाह** ने बस्तर पर आक्रमण किया परंतु पराजित हुआ |

वीरसिंह देव	1654 – 1680	▪ पत्नी - बदनकुंवर चंदेलिन ▪ स्थापत्य - राजपुर का किला ▪ विद्रोह - **भेजी जमींदारों का विद्रोह (1680)**
राजपाल देव **(रक्षपाल देव)**	1709 – 1721	▪ पत्नी - इंद्रकुंवर चंदेलिन ▪ साला - चंदेल मामा (चंदेलवंशी शासक) ▪ पुत्र - दलपत देव ▪ उपाधि - **प्रौढ़ प्रताप चक्रवर्ती** ▪ विशेष - राजपाल देव की मृत्यु के बाद चंदेल मामा शासक बना |
चंदेल मामा	1721 – 1731	▪ संबंध - दलपत देव के मामा ▪ हत्या - दलपत देव ने रक्षाबंधन के शुभ अवसर पर चंदेल मामा की हत्या कर दिया |
दलपत देव	1731 – 1774	▪ राजधानी - जगदलपुर (राजधानी परिवर्तन : 1770 : बस्तर से जगदलपुर) ▪ दलपत देव पर **भोंसले सेनापति नीलू पंत** का आक्रमण हुआ तथा नीलू पंत पराजित हुआ |
अजमेर सिंह	1774 – 1777	▪ संज्ञा - क्रांति का मसीहा ▪ संबंध - दलपत देव के पटरानी का पुत्र ▪ हल्बा विद्रोह (1774 – 1777)
मराठा अधीन काकतीय वंश (1778 – 1800)		
दरियादेव	1777 – 1800	▪ संज्ञा - दरियादेव मराठा अधीन प्रथम शासक ▪ संबंध - दलपत देव के बड़ी रानी का पुत्र ▪ 6 अप्रैल 1778 - कोटपाड़ की संधि (दरियादेव व बिम्बजी भोंसलें) ▪ 1795 - भोपालपट्टनम विद्रोह (**कैप्टन ब्लंट** का बस्तर आगमन) ▪ 1795 - कैप्टन ब्लंट (बस्तर आने वाले पहले अंग्रेज)
आंग्ल - मराठा अधीन काकतीय वंश (1800 – 1854)		
महिपाल देव	1800 – 1842	▪ संबंध - दरियादेव का ज्येष्ठ पुत्र ▪ पुत्र - 1. भूपालदेव 2. दलगंजन सिंह ▪ 1818 - तृतीय आंग्ल – मराठा युद्ध ▪ 1824 – 25 - परलकोट विद्रोह ▪ 1830 - **व्योमकोजी भोंसलें** के सेनापति **रामचंद्र बाघ** के नेतृत्व में बस्तर पर आक्रमण किया गया |
भूपाल देव	1842 – 1853	▪ नगर स्थापत्य - भोपालपट्टनम ▪ 1842 - तारापुर विद्रोह ▪ 1842 - मेरिया विद्रोह (माड़िया विद्रोह)

ब्रिटिश शासन अधीन काकतीय वंश (1854 – 1947)		
भैरमदेव	1853 – 1891	▪ संज्ञा - अंग्रेजों के अधीन प्रथम काकतीय शासक ▪ नगर स्थापत्य - भैरमगढ़ ▪ स्थापत्य - भैरम महादेव मंदिर (भैरमगढ़) ▪ 1856 - छत्तीसगढ़ के प्रथम डिप्टी कमिश्नर **चार्ल्स सी. इलियट** का पहली बार छत्तीसगढ़ आगमन ▪ 1856 - लिंगागिरी विद्रोह ▪ 1859 - कोई विद्रोह ▪ 1876 - मुड़िया विद्रोह (मुरिया विद्रोह)
रानी चोरिस		छत्तीसगढ़ की प्रथम विद्रोहिणी
रूद्रप्रताप देव	1891 – 1921	▪ पिता - भैरमदेव ▪ पुत्री - प्रफुल्ल कुमारी देवी ▪ शिक्षा - राजकुमार कॉलेज (रायपुर) ▪ राज्याभिषेक - 1908 ▪ उपाधि - सेंट ऑफ़ जेरुसलेम (प्रथम विश्व युद्ध में अंग्रेजो की सहायता) ▪ 1898 - घैटीपोनी प्रथा (ब्रिटिश अधिकारी **चैपमेन** की रिपोर्ट) ▪ 1900 - रूद्रप्रताप पुस्कालय (ब्रिटिश अधिकारी **फेगन** व **गेयर**) ▪ 1910 - भूमकाल विद्रोह
प्रफुल्लकुमारी देवी	1921 – 1936	▪ संज्ञा - **छत्तीसगढ़ की प्रथम महिला शासिका** ▪ उपाधि - **THE INDIAN WOMANHOOD** ▪ पिता - रूद्रप्रताप देव ▪ पति - प्रफुल्लचंद भंजदेव (मयुरभंज का राजकुमार) ▪ पुत्र - प्रवीरचंद भंजदेव ▪ राज्याभिषेक - 1922 (12 वर्ष की आयु में) ▪ मृत्यु - **1936** (लंदन में) - **अपेंडी साइटिस** नामक रोग से
प्रवीरचंद भंजदेव	1936 – 1947	▪ **अंतिम काकतीय शासक** ▪ स्वतंत्रता के पश्चात् बस्तर का पहला शासक ▪ बस्तर के पूर्व विधायक ▪ 1948 - बस्तर रियासत का भारत संघ में विलय ▪ 1966 - गोलीकाण्ड में मृत्यु ▪ **महाराजा प्रवीरचंद भंजदेव राजकीय सम्मान** - तीरंदाजी के क्षेत्र में

अन्नमदेव (1324 – 1369)

- संबंध - **वीर प्रतापरूद्रदेव द्वितीय** के अनुज
- समकालीन - अलाउद्दीन खिलजी (मलिक काफूर)
- युद्ध - 1324 में अन्नमदेव ने हरीशचन्द्र देव (छिंदकनागवंश के अंतिम शासक) को हराकर बस्तर में काकतीय वंश की स्थापना किया |
- पत्नी - **सोनकुंवर चंदेलिन** (चंदेल राजकुमारी)
- उपाधि - अन्नराज (दंतेवाड़ा शिलालेख)
- नगर स्थापत्य - दंतेवाड़ा (शंखनी – डंकिनी नदी के संगम पर)
- राजधानी - मंदोता (राजधानी परिवर्तन : 1324 - बारसूर से मंदोता)
- स्थापत्य - **दंतेश्वरी (मणिकेश्वरी) माता मंदिर** , तारला ग्राम (दंतेवाड़ा)
- संज्ञा - बस्तर के लोक गीतों में **"चालकी वंश राजा"** (काकतीय वंश के संस्थापक)
- संघर्ष - **चमेली देवी का संघर्ष** अन्नमदेव के साथ
- **विशेष**
  - बस्तर में काकतीय वंश के संस्थापक
  - बस्तर में काकतीय वंश के वास्तविक संस्थापक
  - मध्ययुगीन बस्तर के शासन का विधिवत संस्थापक

पुरुषोत्तम देव (1468 – 1534)

- राजधानी - बस्तर (राजधानी परिवर्तन : 1468 - मंदोता से बस्तर)
- उपाधि - लाहरू रथपति (पुरी के शासक द्वारा)

जगन्नाथ पुरी की यात्रा

- पुरुषोत्तम देव ने **जगन्नाथ पुरी की यात्रा** पेट के बल पहुंचकर **भगवान जगन्नाथ** का दर्शन किया |
- रथपति - पुरी के शासक ने पुरुषोत्तम देव को **रथपति की उपाधि** प्रदान किया |
- रथ - पुरी के शासक ने पुरुषोत्तम देव को **16 पहियों वाला रथ** प्रदान किया |
  - पुरुषोत्तम देव ने 4 पहिएं **भगवान जगन्नाथ** को अर्पित कर दिए |
  - पुरुषोत्तम देव 12 पहिएं के रथ साथ बस्तर वापस आये |
  - वर्तमान में 12 पहिएं के रथ के स्थान पर 8 पहिएं व 4 पहिएं वाला 2 रथ चलाया जाता है |
- पर्व - **बस्तर का दशहरा तथा बस्तर का रथयात्रा (गोंचा पर्व)** का प्रारंभ किया |
  - बस्तर का दशहरा तथा गोंचा पर्व में रथ चलाने की प्रथा की शुरुवात

वीरसिंह देव (1654 – 1680)

- पत्नी - बदनकुंवर चंदेलिन
- स्थापत्य - राजपुर का किला
- विद्रोह - भेजी जमींदारों का विद्रोह

भेजी जमींदारों का विद्रोह (1680)

- स्थान - भेजी (सुकमा)
- शासक - वीरसिंह देव (काकतीय वंश)
- परिणाम - जमींदार विजयी

दलपत देव (1731 – 1774)

- राजधानी - जगदलपुर (राजधानी परिवर्तन : 1770 : बस्तर से जगदलपुर)
- युद्ध - दलपत देव पर **भोंसले सेनापति नीलू पंत** का आक्रमण हुआ तथा नीलू पंत पराजित हुआ |

क्र.	पुत्र	रानी
1	दरियादेव	दलपत देव के बड़ी रानी का पुत्र
2	अजमेर सिंह	दलपत देव के पटरानी का पुत्र

अजमेर सिंह (1774 – 1777)

- संज्ञा - क्रांति का मसीहा
- संबंध - दलपत देव के पटरानी का पुत्र

क्र.	वर्ष	घटना	विवरण
1	1774	अजमेर सिंह शासक बना	▪ 1774 - दरियादेव को पराजित कर शासक बना | ▪ दरियादेव ने विक्रमदेव (जयपुर के शासक) के यहाँ शरण लिया |
2	1774	हल्बा विद्रोह (1774 – 1777)	▪ नेतृत्व - अजमेर सिंह ▪ शासक - अजमेर सिंह ▪ क्षेत्र - डोंगर ▪ कारण - उत्तराधिकार का युद्ध (अजमेर सिंह व दरियादेव) ▪ 1777 - अजमेर सिंह को फांसी
3	1777	दरियादेव शासक बना	▪ 1777 - दरियादेव ने विक्रमदेव (जयपुर के शासक) , बिम्बाजी भोंसलें तथा जॉनसन की सहायता से अजमेर सिंह पर आक्रमण किया | ▪ परिणामस्वरुप अजमेर सिंह पराजित हुआ तथा दरियादेव शासक बना |

मराठा अधीन काकतीय वंश (1778 – 1800)

दरियादेव (1777 – 1800)

- संज्ञा - दरियादेव मराठा अधीन प्रथम शासक
- संबंध - दलपत देव के बड़ी रानी का पुत्र

क्र.	वर्ष	घटना	विवरण
1	6 अप्रैल 1778	कोटपाड़ की संधि	▪ संधि - दरियादेव व बिम्बजी भोंसले ▪ समझौता - बस्तर का रतनपुर के अधीन छत्तीसगढ़ में विलय ▪ विशेष - बस्तर पहली बार छत्तीसगढ़ का अंग बना ▪ अधीनता - दरियादेव मराठा अधीन प्रथम शासक ▪ टकोली - **59000 टकोली** देना स्वीकार्य
2	1795	भोपालपट्टनम विद्रोह	▪ कारण - **कैप्टन ब्लंट** का बस्तर आगमन
3	1795	कैप्टन ब्लंट	▪ छत्तीसगढ़ आने वाले दूसरे अंग्रेज ▪ बस्तर आने वाले पहले अंग्रेज

आंग्ल - मराठा अधीन काकतीय वंश (1800 – 1854)

महिपाल देव (1800 – 1842)

- संबंध - दरियादेव का ज्येष्ठ पुत्र
- पुत्र - 1. भूपालदेव 2. दलगंजन सिंह

क्र.	वर्ष	घटना	विवरण
1	1818	तृतीय आंग्ल – मराठा युद्ध	▪ विलय - तृतीय आंग्ल – मराठा युद्ध के पश्चात् सहायक संधि के तहत मराठा वंश का विलय ▪ अधीनता - महिपाल देव आंग्ल - मराठा अधीन प्रथम शासक
2	1824 – 25	परलकोट विद्रोह	▪ नेतृत्व - गेंदसिंह ▪ शासक - महिपाल देव ▪ क्षेत्र - परलकोट
3	1830	रामचंद्र बाघ का आक्रमण	▪ कारण - कोटपाल की संधि का उल्लंघन - भोंसलों को टकोली देना बंद कर दिया | ▪ युद्ध - **व्योमकोजी भोंसलें** के सेनापति **रामचंद्र बाघ** के नेतृत्व में बस्तर पर आक्रमण किया गया | ▪ परिणाम - महिपाल देव पराजित हुए तथा **सिहावा परगना** मराठों को देना पड़ा |

भूपाल देव (1842 – 1853)

- पिता - महिपाल देव
- दलगंजन सिंह - भूपाल देव का छोटा सौतेला भाई **दलगंजन सिंह** तारापुर परगना का शासक था |
- नगर स्थापत्य - भोपालपट्टनम

क्र.	वर्ष	घटना	विवरण
1	1842	तारापुर विद्रोह	▪ नेतृत्व - दलगंजन सिंह ▪ शासक - भूपाल देव ▪ क्षेत्र - तारापुर
2	1842	मेरिया विद्रोह (माड़िया विद्रोह)	▪ नेतृत्व - हिरमा मांझी ▪ शासक - भूपाल देव ▪ क्षेत्र - दंतेवाड़ा

ब्रिटिश शासन अधीन काकतीय वंश (1854 – 1947)

- **11 दिसम्बर 1853** - रघुजी III की मृत्यु
- **1854** - लार्ड डलहौजी के **गोद प्रथा निषेध नीति (हड़प नीति)** के तहत नागपुर रियासत का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय हो गया |
- हड़प नीति के तहत छत्तीसगढ़ का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय हो गया |
- **1 फरवरी 1854** - अंतिम जिलेदार कृष्णाराव अप्पा ने द्वारा सत्ता प्रथम डिप्टी कमिश्नर **चार्ल्स सी. इलियट** को सौंपा गया |

भैरमदेव (1853 – 1891) "अंग्रेजों के अधीन प्रथम काकतीय शासक"

- नगर स्थापत्य - भैरमगढ़
- स्थापत्य - भैरम महादेव मंदिर (भैरमगढ़)

क्र.	वर्ष	घटना	विवरण
1	1856	चार्ल्स सी. इलियट का पहली बार छत्तीसगढ़ आगमन	▪ भैरमदेव के शासनकाल में छत्तीसगढ़ के प्रथम डिप्टी कमिश्नर **चार्ल्स सी. इलियट** का पहली बार छत्तीसगढ़ आगमन
2	1856	लिंगागिरी विद्रोह	▪ नेतृत्व - धुरवा राम माड़िया ▪ शासक - भैरम देव ▪ कारण - बस्तर का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय ▪ क्षेत्र - लिंगागिरी
3	1859	कोई विद्रोह	▪ नेतृत्व - नांगुल दोरला ▪ शासक - भैरम देव ▪ कारण - साल वृक्ष की कटाई ▪ क्षेत्र - भेजी
4	1876	मुड़िया विद्रोह (मुरिया विद्रोह)	▪ नेतृत्व - झाड़ा सिरहा ▪ शासक - भैरम देव ▪ कारण - दीवान गोपीनाथ कपड़दार का आतंक ▪ स्थान - आरापुर ▪ दमनकर्ता - मैक जार्ज

रूद्रप्रताप देव (1891 – 1921)

- पिता - भैरमदेव
- पुत्री - प्रफुल्ल कुमारी देवी
- शिक्षा - राजकुमार कॉलेज (रायपुर)
- राज्याभिषेक - 1908
- उपाधि - सेंट ऑफ़ जेरुसलेम (प्रथम विश्व युद्ध में अंग्रेजो की सहायता)

क्र.	वर्ष	घटना	विवरण
1	1891	रुद्रप्रताप देव शासक	भैरम देव की मृत्यु के पश्चात् 6 वर्ष की आयु में शासक बना।
2	1891 - 1908	बस्तर में ब्रिटिश शासन	दीवान **आलमचंद** व दीवान **रामचंद्रराव** का शासन
3	1898	घैटीपोनी प्रथा	▪ घैटीपोनी प्रथा - स्त्री विक्रय की प्रथा ▪ उल्लेख - ब्रिटिश अधिकारी **चैपमेन** की रिपोर्ट (1898)
4	1900	रूद्रप्रताप पुस्कालय	▪ बस्तर में अनिवार्य शिक्षा ▪ श्रेय - ब्रिटिश अधिकारी **फेगन** व **गेयर**
5	1908	राज्याभिषेक	रुद्रप्रताप देव का 23 वर्ष आयु में राज्याभिषेक
6	1910	भूमकाल विद्रोह	▪ नेतृत्व - वीर गुण्डाधुर ▪ शासक - रुद्रप्रताप देव ▪ कारण - दीवान बैजनाथ पण्डा का आतंक ▪ स्थान - पुसपाल बाज़ार ▪ दमनकर्ता - कैप्टन गेयर

प्रमुख स्थापत्य

- **जगदलपुर को चौराहों का शहर** बनाया।
- जगदलपुर का सौंदर्यीकरण
- **रूद्रप्रताप पुस्कालय** की स्थापना
- बस्तर में शिक्षा के विकास का कार्य किया

प्रफुल्लकुमारी देवी (1921 – 1936)

- संज्ञा - **छत्तीसगढ़ की प्रथम महिला शासिका**
- उपाधि - **THE INDIAN WOMANHOOD**
- पिता - रुद्रप्रताप देव
- पति - प्रफुल्लचंद भंजदेव (मयुरभंज का राजकुमार)
- पुत्र - प्रवीरचंद भंजदेव
- राज्याभिषेक - 1922 (12 वर्ष की आयु में)
- मृत्यु - **1936** (लंदन में)
  - **अपेंडी साइटिस** नामक रोग से

प्रवीरचंद भंजदेव (1936 – 1947)

- **अंतिम काकतीय शासक**
- स्वतंत्रता के पश्चात् बस्तर का पहला शासक
- बस्तर के पूर्व विधायक
- 1948 - बस्तर रियासत का भारत संघ में विलय
- 1966 - गोलीकाण्ड में मृत्यु
- **महाराजा प्रवीरचंद भंजदेव राजकीय सम्मान** - तीरंदाजी के क्षेत्र में

अन्नमदेव (1324 – 1369)

अन्नमदेव (1324 – 1369)

- समकालीन - अलाउद्दीन खिलजी (मलिक काफूर)
- युद्ध - 1324 में अन्नमदेव ने हरिश्चंद्र देव (छिंदकनागवंश के अंतिम शासक) को हराकर बस्तर में काकतीय वंश की स्थापना किया |
- पत्नी - सोनकुंवर चंदेलिन (चंदेल राजकुमारी)
- उपाधि - अन्नराज (दंतेवाड़ा शिलालेख)
- नगर स्थापत्य - दंतेवाड़ा (शंखनी – डंकिनी नदी के संगम पर)
- राजधानी - मंदोता (1324 - बारसूर से मंदोता)
- स्थापत्य - दंतेश्वरी (मणिकेश्वरी) माता मंदिर तारला ग्राम (दंतेवाड़ा)
- संज्ञा - बस्तर के लोक गीतों में "चालकी वंश राजा" (काकतीय वंश के संस्थापक)
- संघर्ष - चमेली देवी का संघर्ष अन्नमदेव के साथ
- विशेष
  - बस्तर में काकतीय वंश के संस्थापक
  - बस्तर में काकतीय वंश के वास्तविक संस्थापक
  - मध्ययुगीन बस्तर के शासन का विधिवत संस्थापक

अन्नमदेव (1324 – 1369)

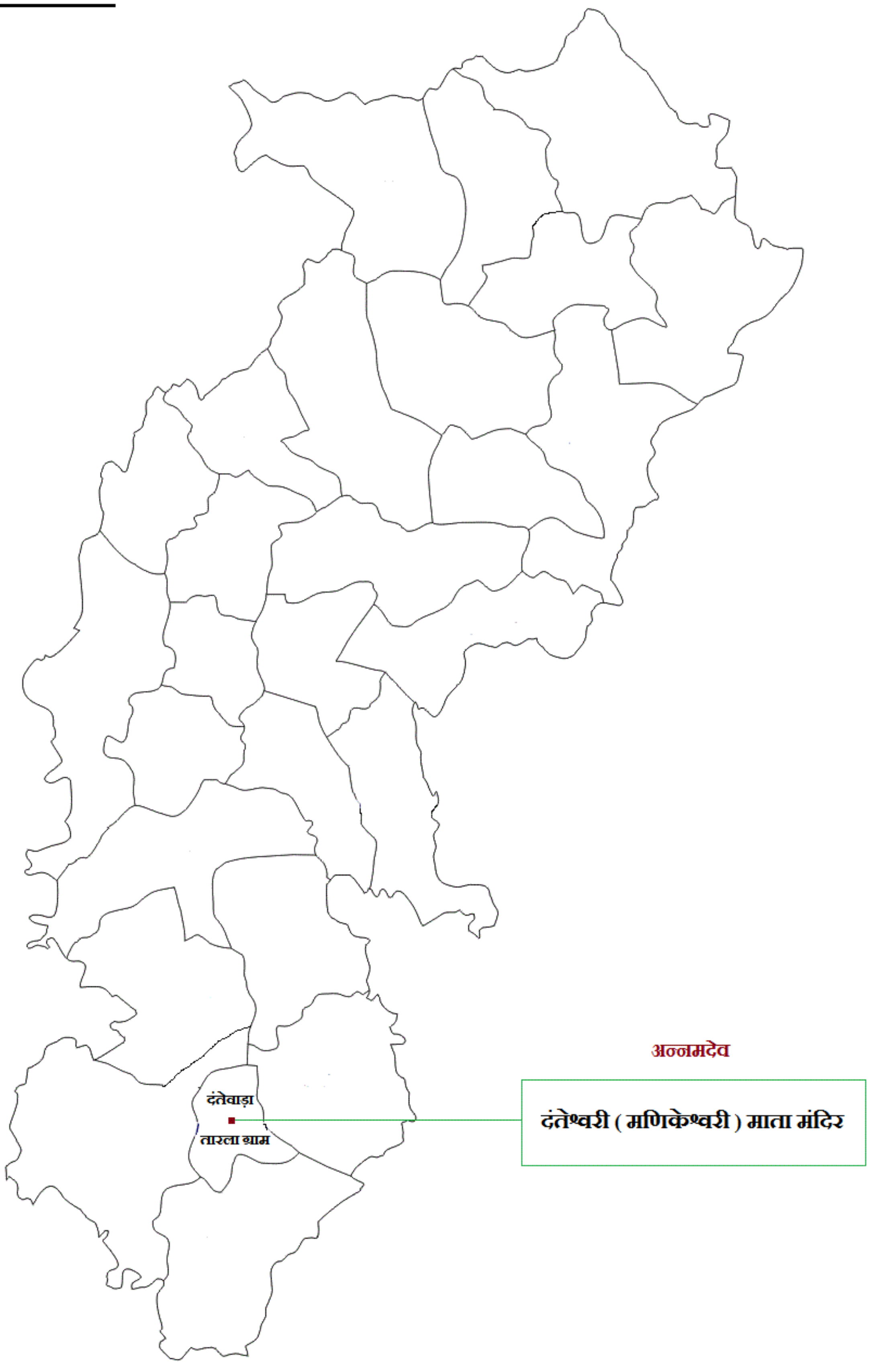

काकतीय वंश (1324 – 1947)

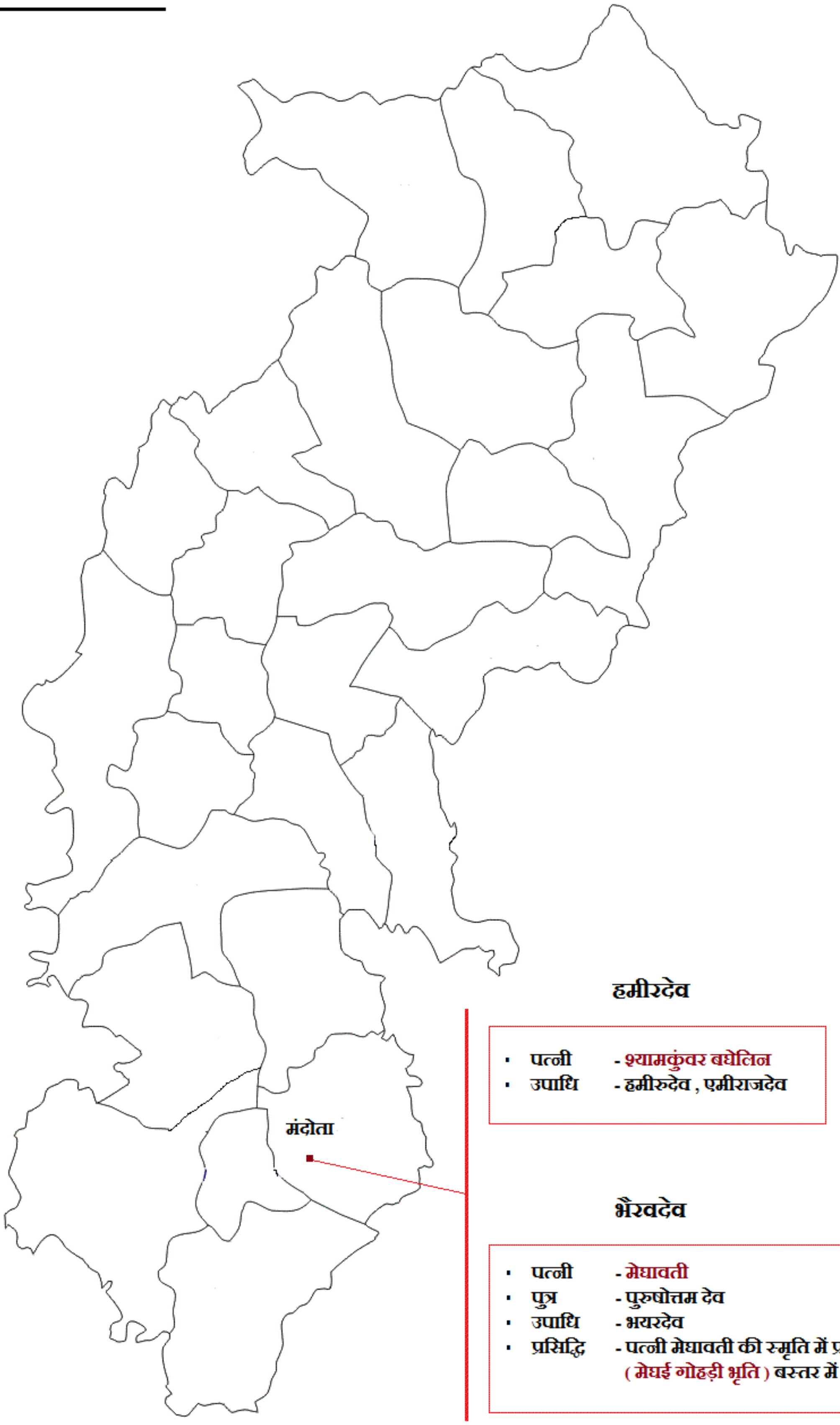

हमीरदेव

- पत्नी - श्यामकुंवर बघेलिन
- उपाधि - हमीरुदेव , एमीराजदेव

भैरवदेव

- पत्नी - मेघावती
- पुत्र - पुरुषोत्तम देव
- उपाधि - भयरदेव
- प्रसिद्धि - पत्नी मेघावती की स्मृति में प्रचलित मेघा साड़ी (मेघई गोहड़ी भृति) बस्तर में आज भी प्रचलित है |

काकतीय वंश (1324 – 1947)

पुरुषोत्तम देव (1468 – 1534)

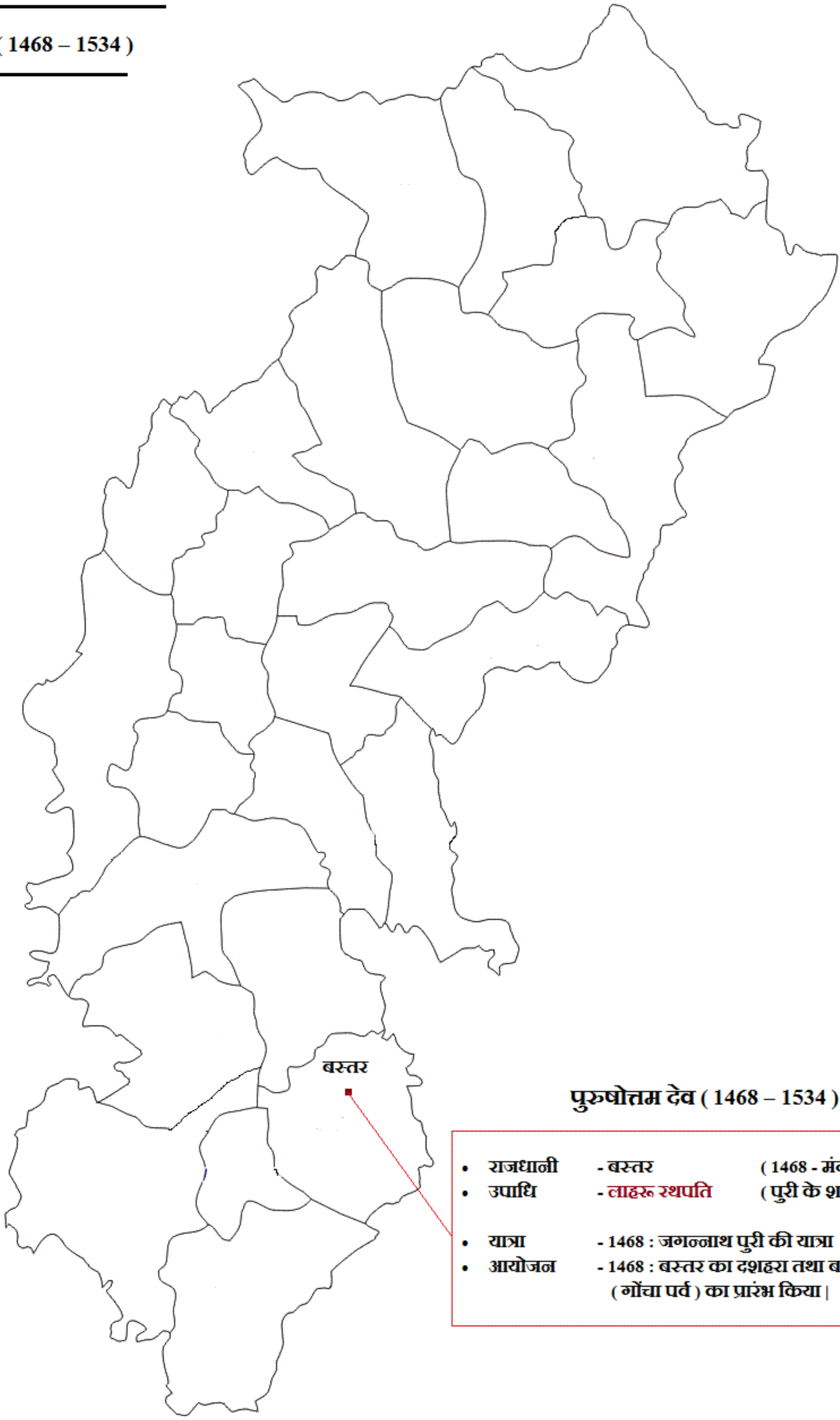

पुरुषोत्तम देव (1468 – 1534)

- राजधानी - बस्तर (1468 - मंदोता से बस्तर)
- उपाधि - लाहरू रथपति (पुरी के शासक द्वारा)
- यात्रा - 1468 : जगन्नाथ पुरी की यात्रा
- आयोजन - 1468 : बस्तर का दशहरा तथा बस्तर का रथयात्रा (गोंचा पर्व) का प्रारंभ किया |

पुरुषोत्तम देव (1468 – 1534)

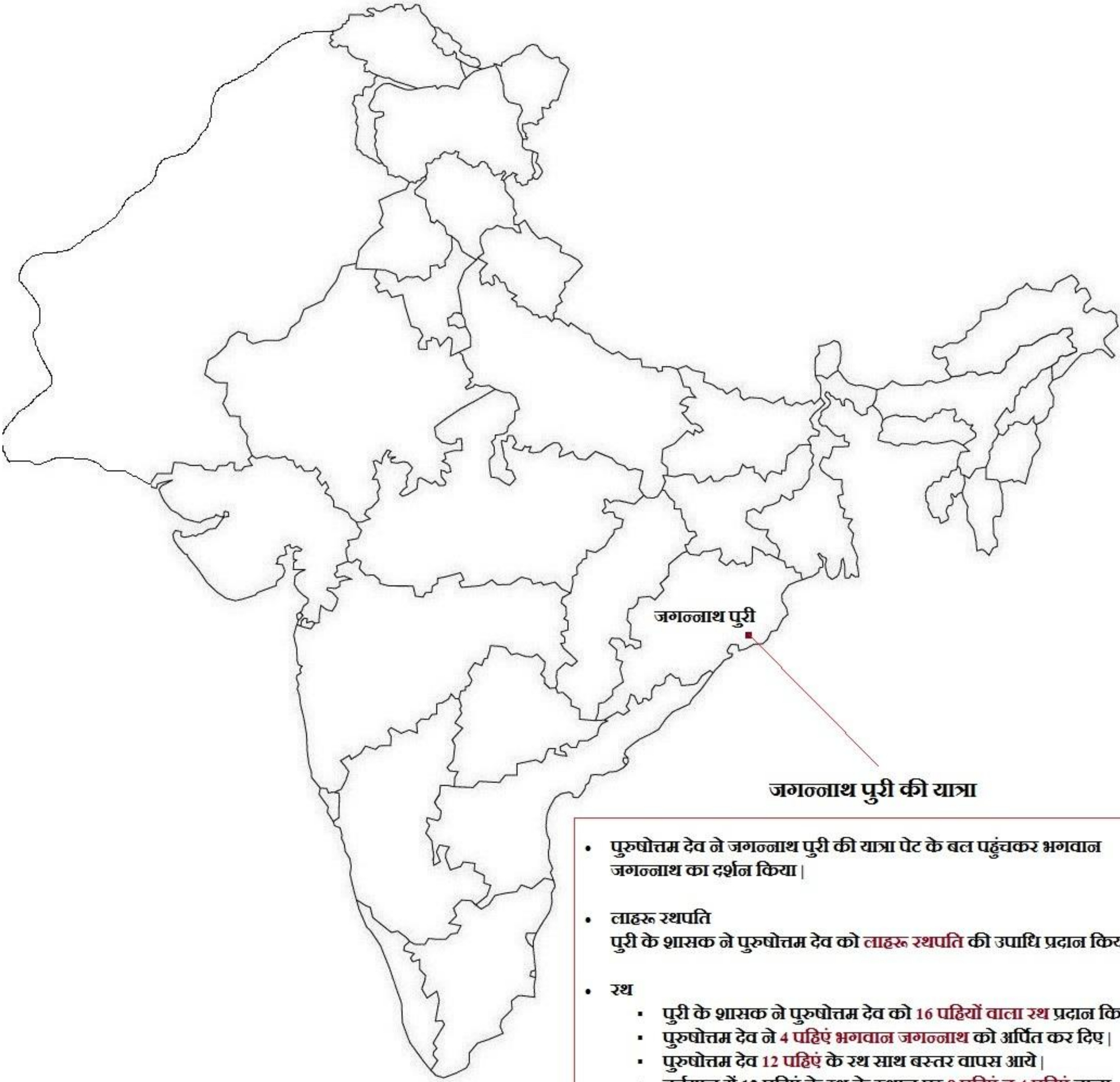

जगन्नाथ पुरी की यात्रा

- पुरुषोत्तम देव ने जगन्नाथ पुरी की यात्रा पेट के बल पहुंचकर भगवान जगन्नाथ का दर्शन किया |
- लाहरू रथपति
  पुरी के शासक ने पुरुषोत्तम देव को लाहरू रथपति की उपाधि प्रदान किया |
- रथ
  - पुरी के शासक ने पुरुषोत्तम देव को 16 पहियों वाला रथ प्रदान किया |
  - पुरुषोत्तम देव ने 4 पहिएं भगवान जगन्नाथ को अर्पित कर दिए |
  - पुरुषोत्तम देव 12 पहिएं के रथ साथ बस्तर वापस आये |
  - वर्तमान में 12 पहिएं के रथ के स्थान पर 8 पहिएं व 4 पहिएं वाला 2 रथ चलाया जाता है |
- पर्व
  - बस्तर का दशहरा तथा बस्तर का रथयात्रा (गोंचा पर्व) का प्रारंभ किया |
  - बस्तर का दशहरा तथा गोंचा पर्व में रथ चलाने की प्रथा की शुरुवात

काकतीय वंश (1324 – 1947)

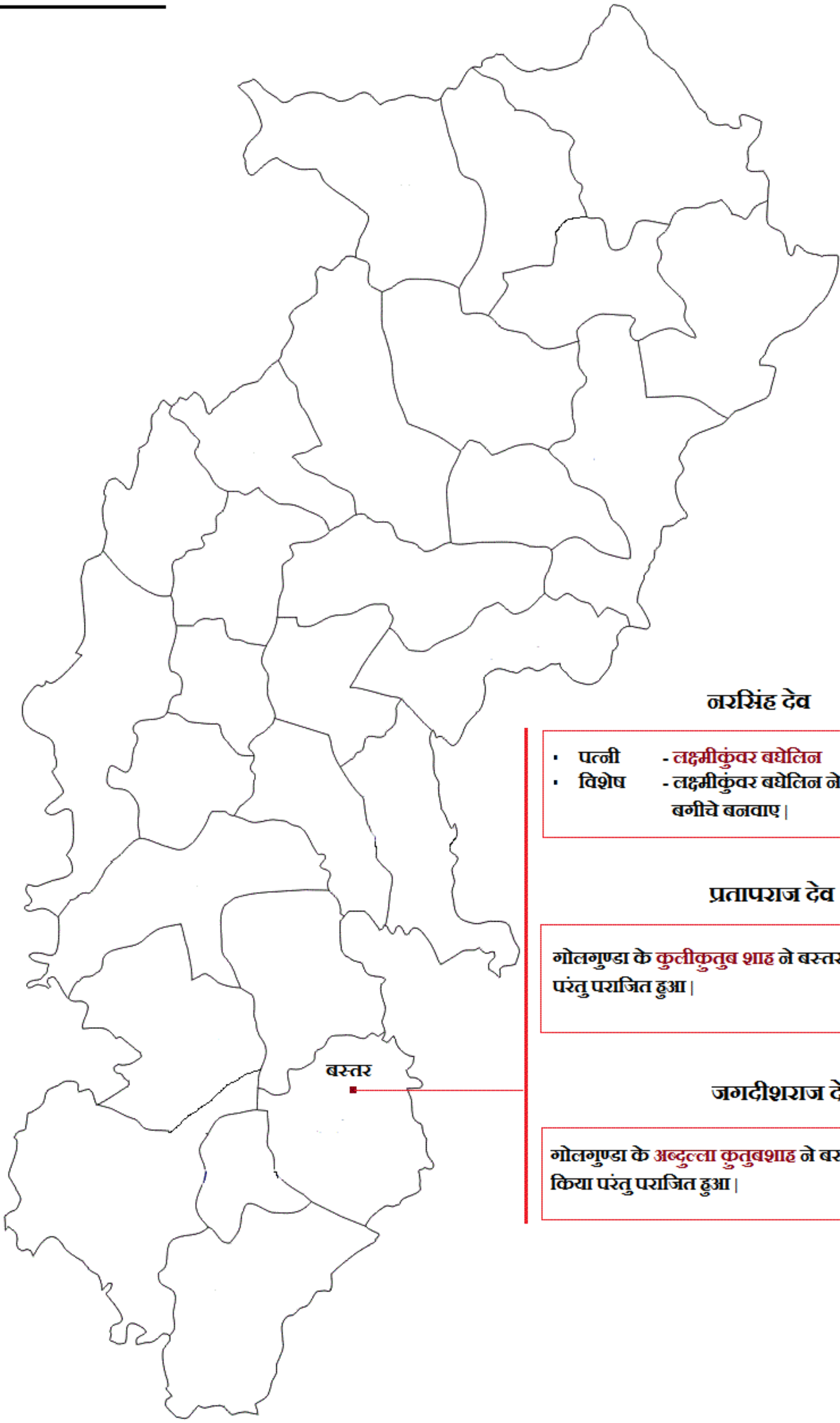

नरसिंह देव

- पत्नी - लक्ष्मीकुंवर बघेलिन
- विशेष - लक्ष्मीकुंवर बघेलिन ने अनेक तालाब व बगीचे बनवाए।

प्रतापराज देव

गोलगुण्डा के कुलीकुतुब शाह ने बस्तर पर आक्रमण किया परंतु पराजित हुआ।

जगदीशराज देव

गोलगुण्डा के अब्दुल्ला कुतुबशाह ने बस्तर पर आक्रमण किया परंतु पराजित हुआ।

काकतीय वंश (1324 – 1947)

वीरसिंह देव

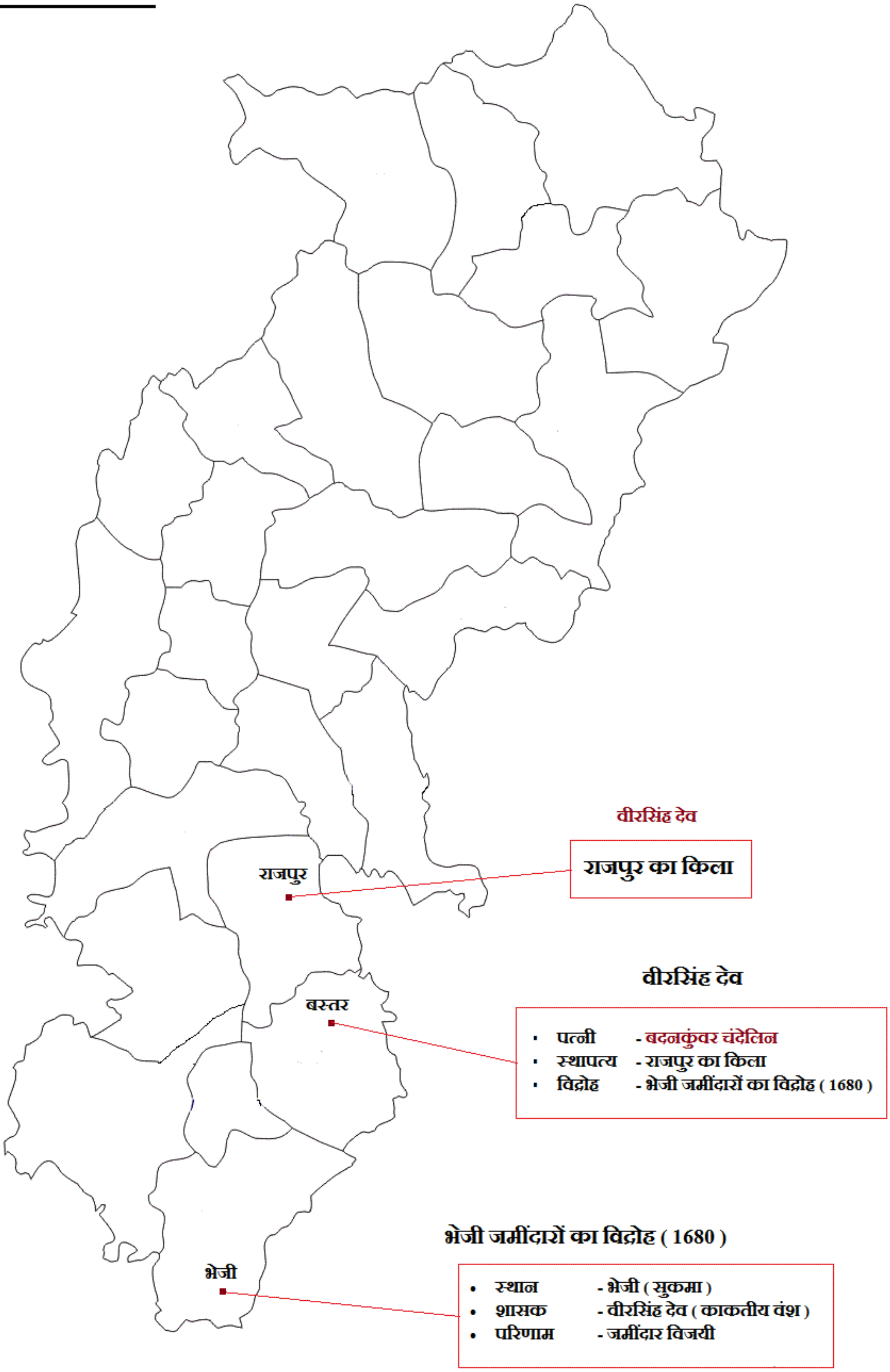

काकतीय वंश (1324 – 1947)

राजपाल देव (रक्षपाल देव)

- पत्नी - इंद्रकुंवर चंदेलिन
- साला - चंदेल मामा (चंदेलवंशी शासक)
- पुत्र - दलपत देव
- उपाधि - प्रौढ़ प्रताप चक्रवर्ती
- विशेष - राजपाल देव की मृत्यु के बाद चंदेल मामा शासक बना |

चंदेल मामा

- संबंध - दलपत देव के मामा
- हत्या - दलपत देव ने रक्षाबंधन के शुभ अवसर पर चंदेल मामा की हत्या कर दिया |

काकतीय वंश (1324 – 1947)

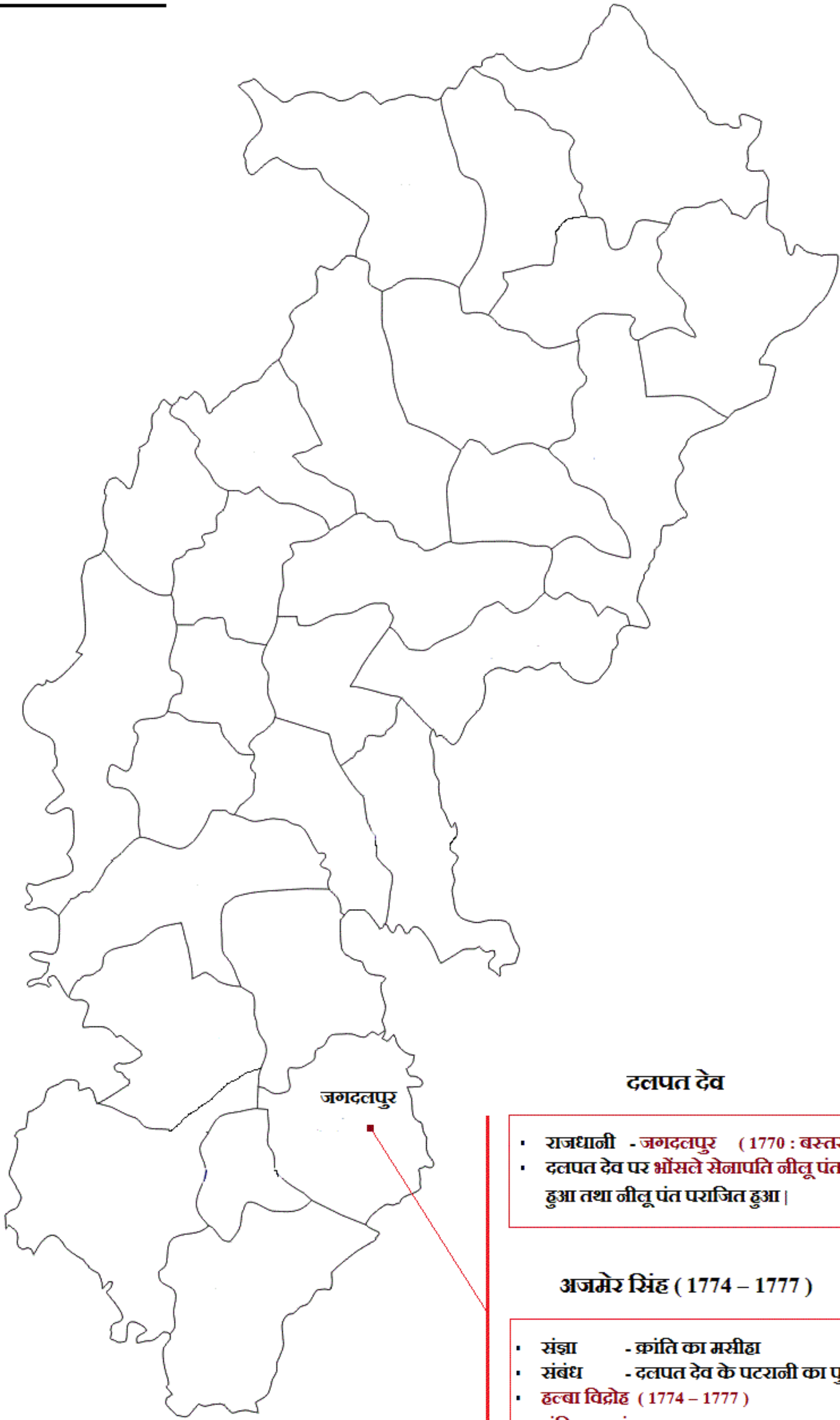

दलपत देव

- राजधानी - जगदलपुर (1770 : बस्तर से जगदलपुर)
- दलपत देव पर भोंसले सेनापति नीलू पंत का आक्रमण हुआ तथा नीलू पंत पराजित हुआ |

अजमेर सिंह (1774 – 1777)

- संज्ञा - क्रांति का मसीहा
- संबंध - दलपत देव के पटरानी का पुत्र
- हल्बा विद्रोह (1774 – 1777)
- अंतिम स्वतंत्र शासक

मराठा अधीन काकतीय वंश (1778 – 1800)

दरियादेव (1777 – 1800)

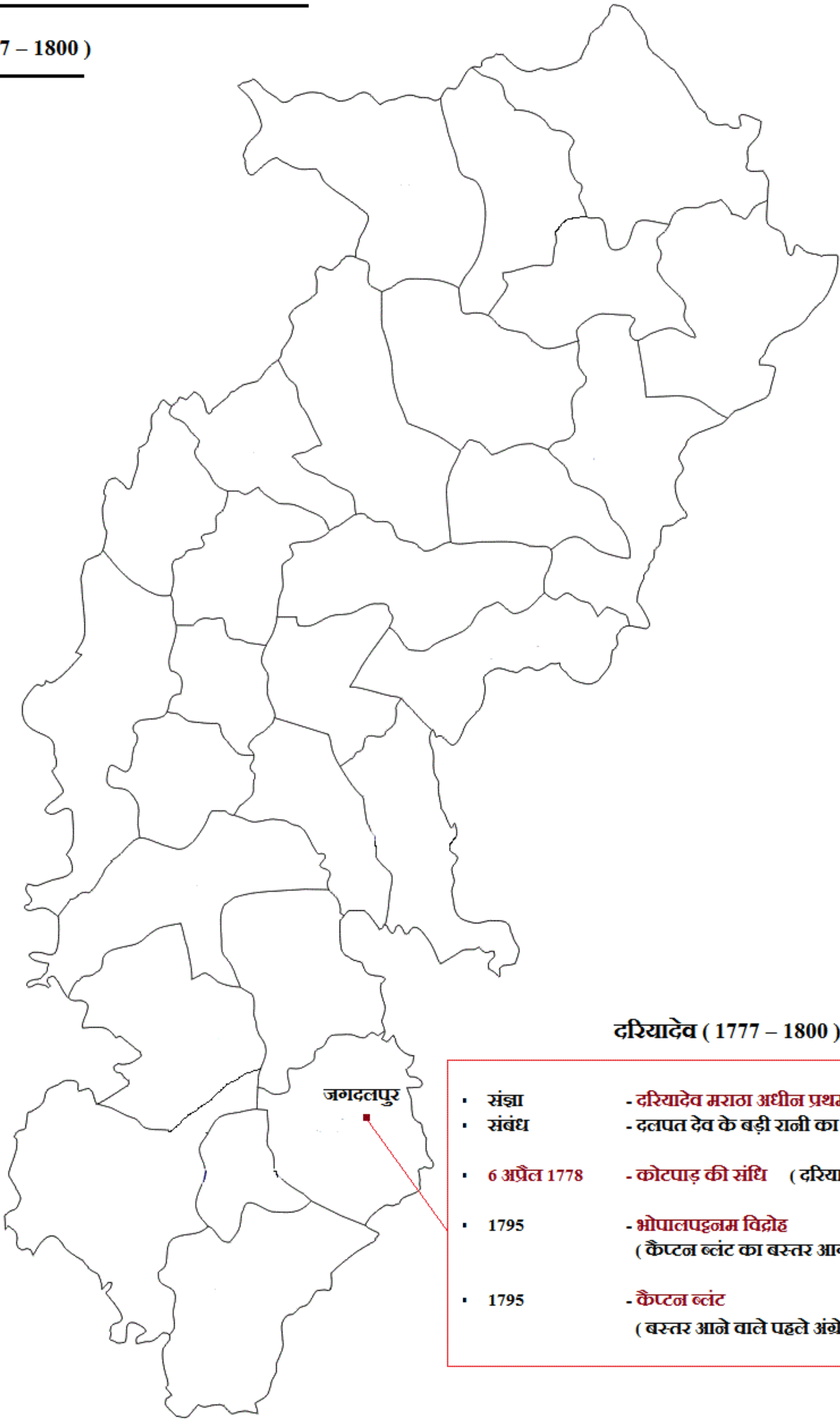

दरियादेव (1777 – 1800)

- संज्ञा - दरियादेव मराठा अधीन प्रथम शासक
- संबंध - दलपत देव के बड़ी रानी का पुत्र
- 6 अप्रैल 1778 - कोटपाड़ की संधि (दरियादेव व बिम्बजी भोंसलें)
- 1795 - भोपालपट्टनम विद्रोह (कैप्टन ब्लंट का बस्तर आगमन)
- 1795 - कैप्टन ब्लंट (बस्तर आने वाले पहले अंग्रेज)

मराठा अधीन काकतीय वंश (1778 – 1800)

दरियादेव (1777 – 1800)

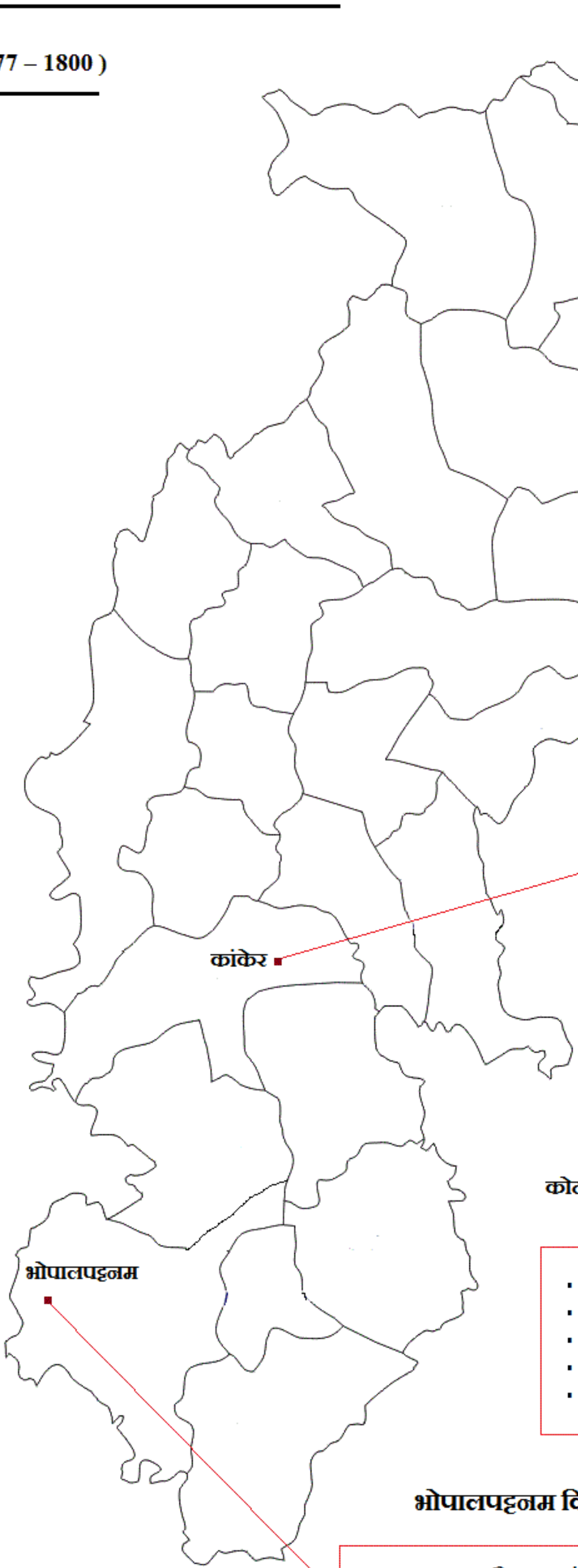

कैप्टन ब्लंट (1795)

- छत्तीसगढ़ आने वाले दूसरे अंग्रेज
- बस्तर आने वाले पहले अंग्रेज
- कांकेर तक ही आ पाए , बस्तर प्रवेश नहीं कर पाए

कोटपाड़ की संधि (6 अप्रैल 1778)

- संधि - दरियादेव व बिम्बजी भोंसलें
- समझौता - बस्तर का रतनपुर के अधीन छत्तीसगढ़ में विलय
- विशेष - बस्तर पहली बार छत्तीसगढ़ का अंग बना
- अधीनता - दरियादेव मराठा अधीन प्रथम शासक
- टकोली - 59000 टकोली देना स्वीकार्य

भोपालपट्टनम विद्रोह (1795)

- कारण - कैप्टन ब्लंट का बस्तर आगमन
- शासक - दरियादेव

आंग्ल - मराठा अधीन काकतीय वंश (1800 – 1854)

महिपाल देव (1800 – 1842)

- संबंध - दरियादेव का ज्येष्ठ पुत्र
- पुत्र - 1. भूपालदेव 2. दलगंजन सिंह
- 1818 - तृतीय आंग्ल – मराठा युद्ध
- 1824 – 25 - परलकोट विद्रोह
- 1830 - व्योमकोजी भोंसले के सेनापति रामचंद्र बाघ के नेतृत्व में बस्तर पर आक्रमण किया गया।
- विशेष
  - मराठा अधीन अंतिम शासक
  - आंग्ल – मराठा अधीन प्रथम शासक

भूपाल देव (1842 – 1853)

- नगर स्थापत्य - भोपालपट्टनम
- 1842 - तारापुर विद्रोह
- 1842 - मेरिया विद्रोह (माड़िया विद्रोह)
- आंग्ल – मराठा अधीन अंतिम शासक

ब्रिटिश शासन अधीन काकतीय वंश (1854 – 1947)

भैरमदेव (1853 – 1891)

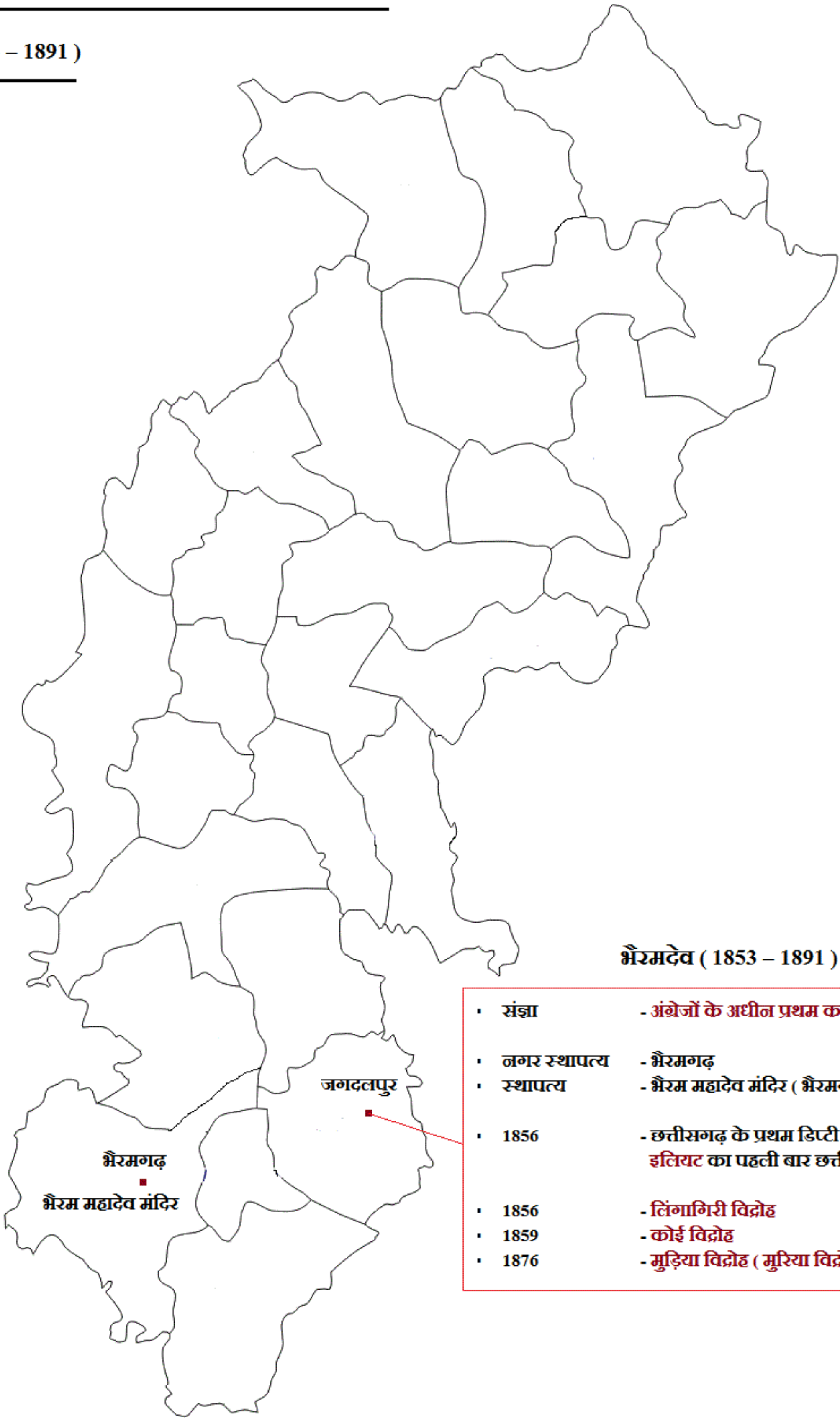

भैरमदेव (1853 – 1891)

- संज्ञा - अंग्रेजों के अधीन प्रथम काकतीय शासक
- नगर स्थापत्य - भैरमगढ़
- स्थापत्य - भैरम महादेव मंदिर (भैरमगढ़)
- 1856 - छत्तीसगढ़ के प्रथम डिप्टी कमिश्नर चार्ल्स सी. इलियट का पहली बार छत्तीसगढ़ आगमन
- 1856 - लिंगागिरी विद्रोह
- 1859 - कोई विद्रोह
- 1876 - मुड़िया विद्रोह (मुरिया विद्रोह)

ब्रिटिश शासन अधीन काकतीय वंश (1854 – 1947)

रूद्रप्रताप देव (1891 – 1921)

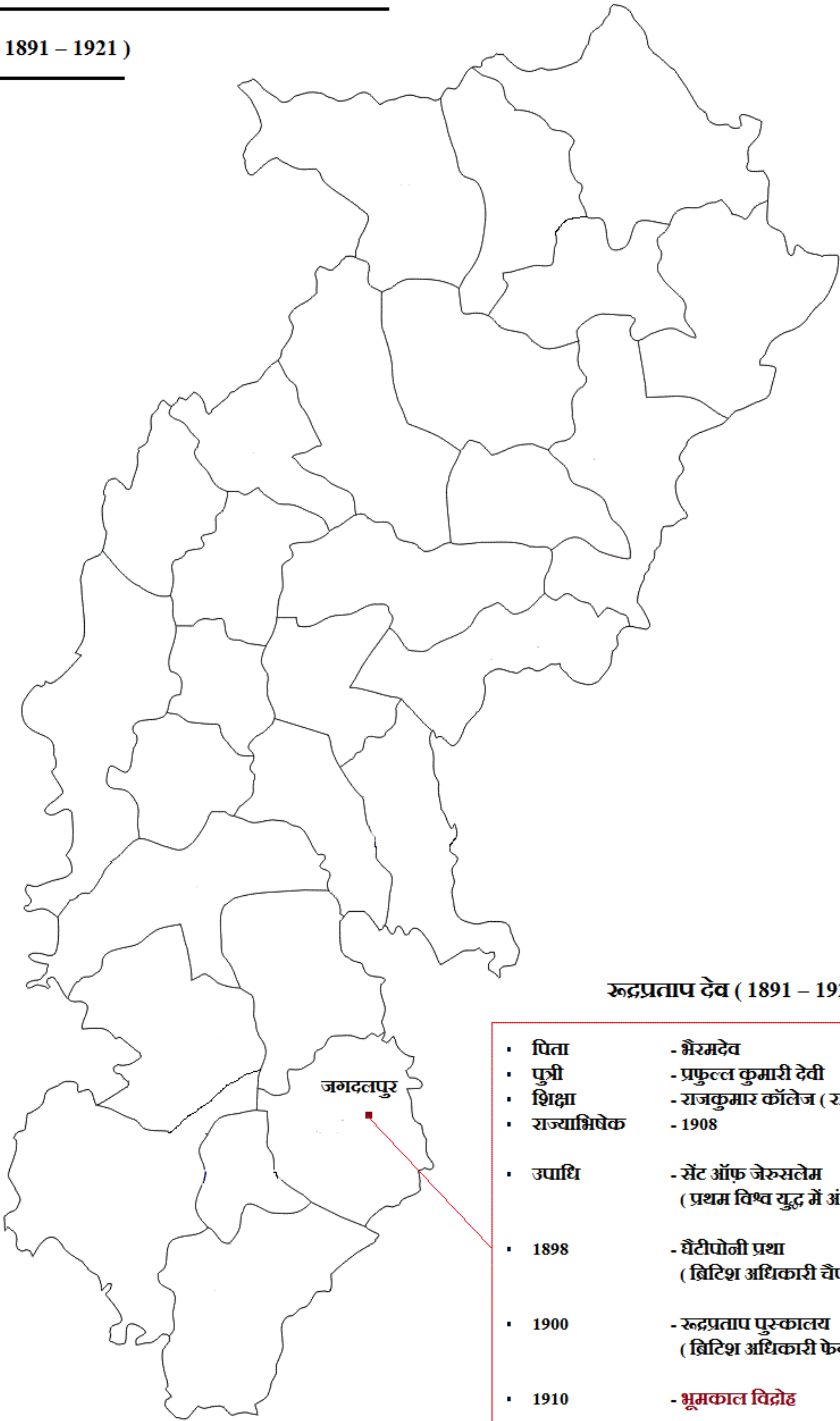

रूद्रप्रताप देव (1891 – 1921)

- पिता - भैरमदेव
- पुत्री - प्रफुल्ल कुमारी देवी
- शिक्षा - राजकुमार कॉलेज (रायपुर)
- राज्याभिषेक - 1908
- उपाधि - सेंट ऑफ़ जेरुसलेम (प्रथम विश्व युद्ध में अंग्रेजो की सहायता)
- 1898 - घैटीपोनी प्रथा (ब्रिटिश अधिकारी चैपमेन की रिपोर्ट)
- 1900 - रूद्रप्रताप पुस्कालय (ब्रिटिश अधिकारी फेगन व गेयर)
- 1910 - भूमकाल विद्रोह

ब्रिटिश शासन अधीन काकतीय वंश (1854 – 1947)

प्रफुल्लकुमारी देवी (1921 – 1936)

- संज्ञा - छत्तीसगढ़ की प्रथम महिला शासिका
- उपाधि - THE INDIAN WOMANHOOD
- पिता - रुद्रप्रताप देव
- पति - प्रफुल्लचंद भंजदेव (मयुरभंज का राजकुमार)
- पुत्र - प्रवीरचंद भंजदेव
- राज्याभिषेक - 1922 (12 वर्ष की आयु में)
- मृत्यु - 1936 (लंदन में) (अपेंडी साइटिस नामक रोग से)

प्रवीरचंद भंजदेव (1936 – 1947)

- अंतिम काकतीय शासक
- स्वतंत्रता के पश्चात् बस्तर का पहला शासक
- बस्तर के पूर्व विधायक
- 1948 - बस्तर रियासत का भारत संघ में विलय
- 1966 - गोलीकाण्ड में मृत्यु
- महाराजा प्रवीरचंद भंजदेव राजकीय सम्मान (तीरंदाजी के क्षेत्र में)

काकतीय वंशीय महत्वपूर्ण तथ्य

प्रथम एवं अंतिम शासक

क्र.	संस्थापक	शासक
1	संस्थापक	अन्नमदेव
2	वास्तविक संस्थापक	
3	अंतिम स्वतंत्र शासक	अजमेर सिंह
4	मराठा अधीन प्रथम शासक	दरियादेव
5	मराठा अधीन अंतिम शासक	महिपाल देव
6	आंग्ल - मराठा अधीन प्रथम शासक	महिपाल देव
7	आंग्ल - मराठा अधीन अंतिम शासक	भूपाल देव
8	ब्रिटिश शासन अधीन प्रथम शासक	भैरम देव
9	ब्रिटिश शासन अधीन अंतिम शासक	प्रवीरचंद भंजदेव
10	अंतिम शासक	
11	स्वतंत्रता के पश्चात् बस्तर का पहला शासक	

महारानी विशेष

क्र.	शासिका	विशेष
1	रानी चोरिस	छत्तीसगढ़ की प्रथम विद्रोहिणी
2	प्रफुल्लकुमारी देवी	छत्तीसगढ़ की प्रथम महिला शासिका

उपाधि

क्र.	शासक	उपाधि
1	अन्नमदेव	अन्नराज
2	हमीरदेव	हमीरुदेव , एमीराजदेव
3	भैरवदेव	भयरदेव
4	पुरुषोत्तम देव	रथपति
5	राजपाल देव (रक्षपाल देव)	प्रौढ़ प्रताप चक्रवर्ती
6	अजमेर सिंह	क्रांति का मसीहा
7	रूद्रप्रताप देव	सेंट ऑफ़ जेरूसलम (जेरूसलम के ईशा मसीह)
8	प्रफुल्लकुमारी देवी	THE INDIAN WOMANHOOD

काकतीय वंशीय महारानी

क्र.	शासक	महारानी (पत्नी)	विशेष
1	अन्नमदेव	सोनकुंवर चंदेलिन	
2	हमीरदेव	श्यामकुंवर बघेलिन	
3	भैरवदेव	मेघावती	**मेघावती** की स्मृति में प्रचलित **मेघा साड़ी** (मेघई गोहड़ी भृति) बस्तर में आज भी प्रचलित है |
4	नरसिंह देव	लक्ष्मीकुंवर बघेलिन	लक्ष्मीकुंवर बघेलिन ने अनेक तालाब व बगीचे बनवाए |
5	वीरसिंह देव	बदनकुंवर चंदेलिन	
6	राजपाल देव (रक्षपाल देव)	इंद्रकुंवर चंदेलिन	इंद्रकुंवर चंदेलिन का भाई चंदेल मामा

छत्तीसगढ़ आगमन

क्र.	शासक	वर्ष	ब्रिटिश अधिकारी	विशेष
1	दरियादेव	1795	कैप्टन ब्लंट	बस्तर आने वाले पहले अंग्रेज कांकेर तक ही आ पाया , बस्तर प्रवेश नहीं किया |
2	भैरमदेव	1856	चार्ल्स सी. इलियट	छत्तीसगढ़ के प्रथम डिप्टी कमिश्नर **चार्ल्स सी. इलियट** का पहली बार छत्तीसगढ़ आगमन

राजधानी

क्र.	क्रम	राजधानी	स्थापना	संस्थापक
1	प्रथम राजधानी	मंदोता	1324	अन्नमदेव
2	द्वितीय राजधानी	बस्तर	1468	पुरुषोत्तम देव
3	तृतीय राजधानी	जगदलपुर	1770	दलपत देव

नगर स्थापत्य

क्र.	शासक	नगर स्थापत्य	जिला
1	अन्नमदेव	दंतेवाड़ा	दंतेवाड़ा
2	भूपाल देव	भोपालपट्टनम	बीजापुर
3	भैरमदेव	भैरमगढ़	बीजापुर

स्थापत्य

क्र.	शासक	स्थापत्य		स्थान	जिला
1	अन्नमदेव		दंतेश्वरी (मणिकेश्वरी) माता मंदिर	तारला ग्राम	दंतेवाड़ा
2	वीरसिंह देव		राजपुर का किला	राजपुर	कोंडागांव
3	भैरमदेव	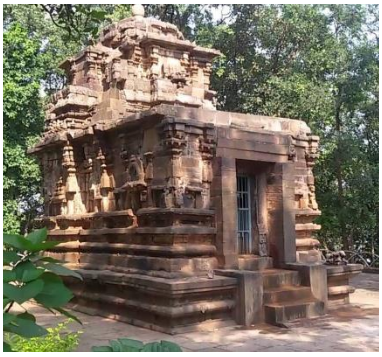	भैरम महादेव मंदिर	भैरमगढ़	बीजापुर
4	रूद्रप्रताप देव		रूद्रप्रताप पुस्कालय	जगदलपुर	बस्तर

नगर स्थापत्य

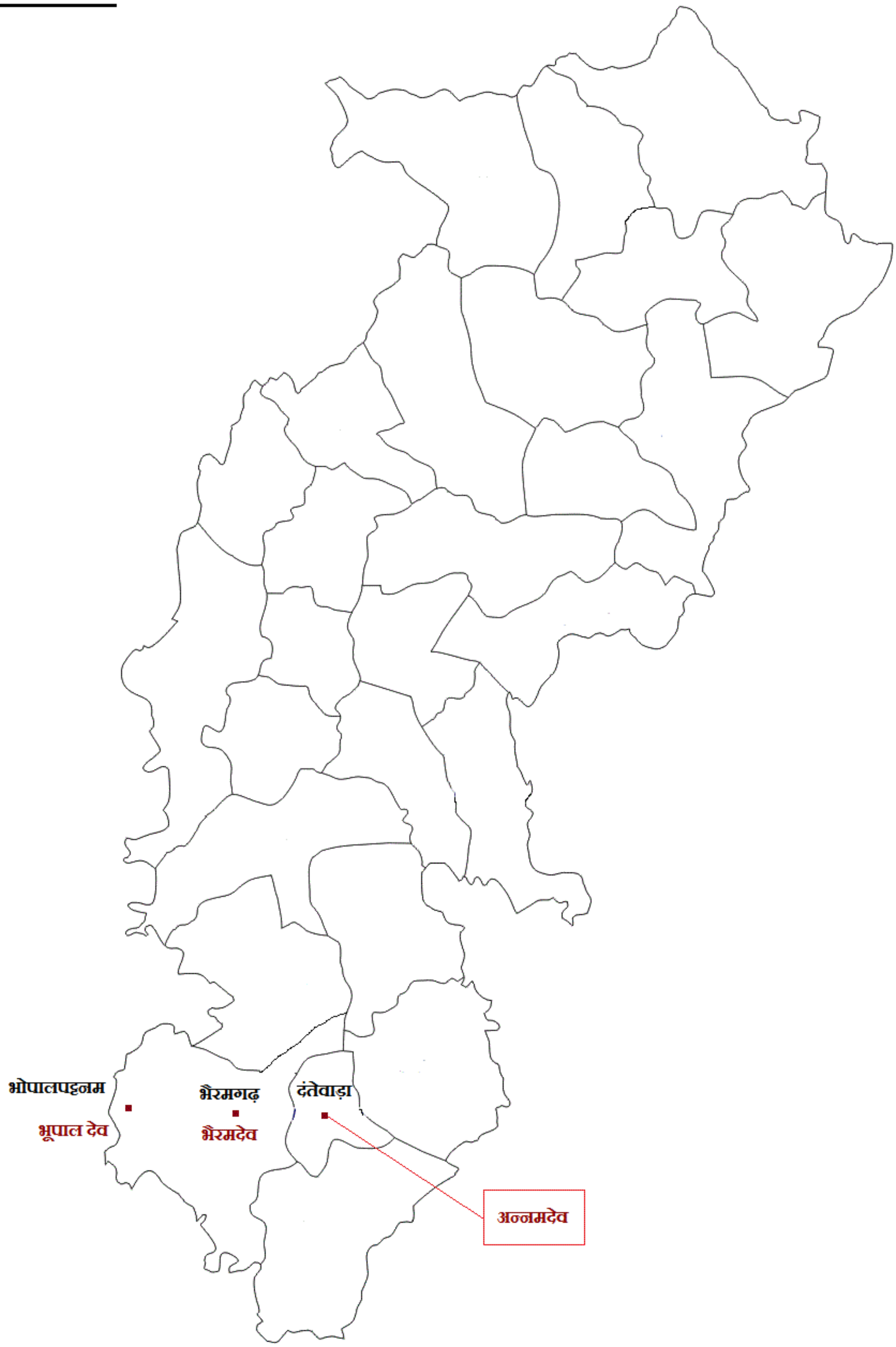

स्थापत्य

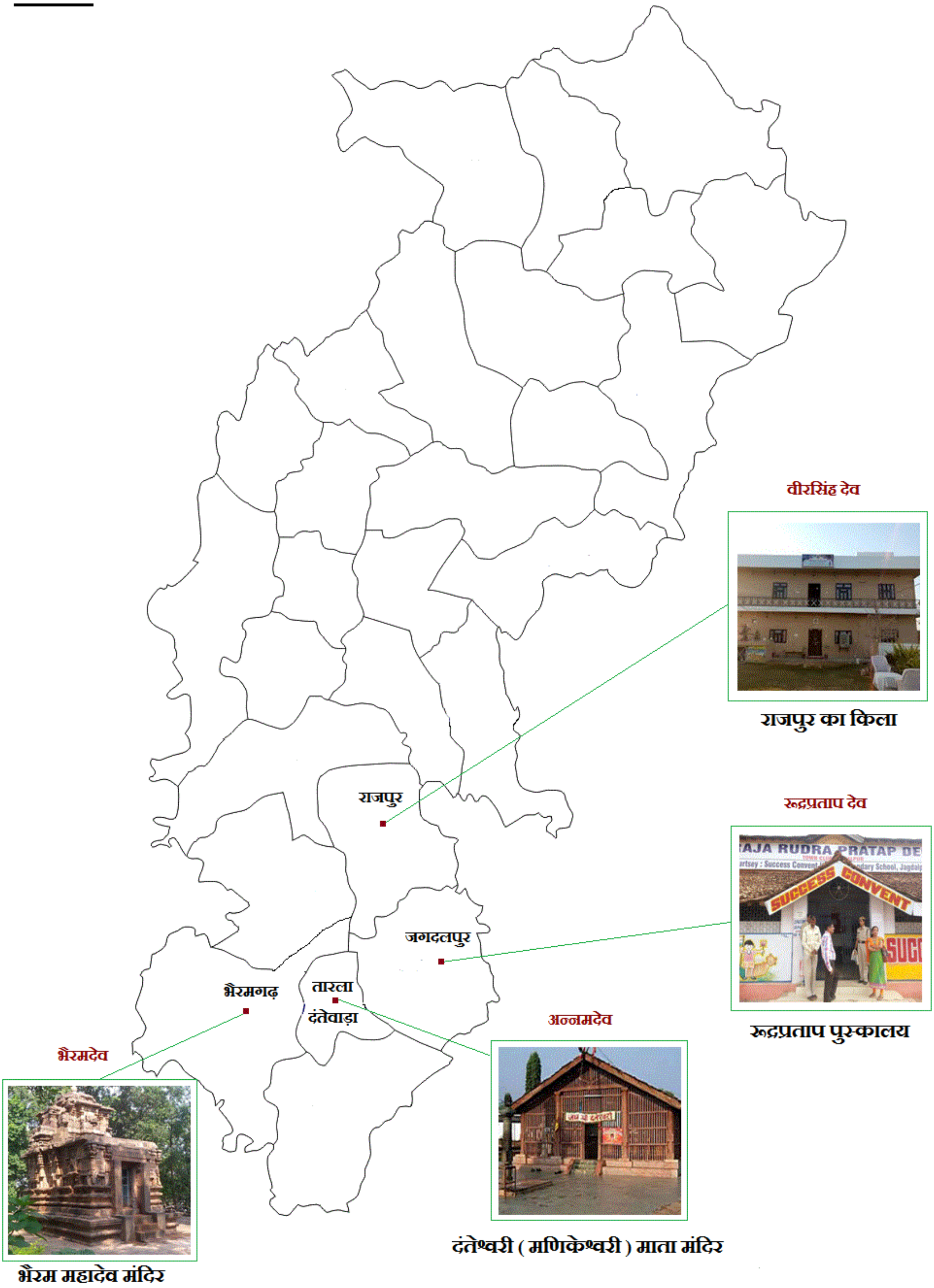
राजपुर
जगदलपुर
भैरमगढ़
तारला
दंतेवाड़ा
वीरसिंह देव
राजपुर का किला
रूद्रप्रताप देव
RAJA RUDRA PRATAP DE
SUCCESS CONVENT
रूद्रप्रताप पुस्कालय
अन्नमदेव
दंतेश्वरी (मणिकेश्वरी) माता मंदिर
भैरमदेव
भैरम महादेव मंदिर

दंतेश्वरी मंदिर (दंतेवाड़ा)

दंतेश्वरी मंदिर

दंतेश्वरी माता

- स्मारक - केंद्र संरक्षित स्मारक
- स्थान - तारला ग्राम (दंतेवाड़ा)
- नदी तट - शंखनी – डंकनी नदी के संगम पर स्थित मंदिर
- मंदिर - दंतेश्वरी (मणिकेश्वरी) माता मंदिर
- निर्माण काल - 11 वीं – 12 वीं शताब्दी
- निर्माता - अन्नमदेव (काकतीय वंश)
- काकतीय वंश की कुलदेवी - दंतेश्वरी देवी (मणिकेश्वरी देवी) [CGPSC MAINS 2011]

भैरम महादेव मंदिर (भैरमगढ़)

भैरम महादेव मंदिर (भैरमगढ़)

भैरम महादेव

- स्मारक - केंद्र संरक्षित स्मारक
- स्थान - भैरमगढ़ (जिला – बीजापुर)
- नदी तट - मरी
- मंदिर - प्राचीन शिव मंदिर
- निर्माता - भैरमदेव (छिंदकनाग वंश)

युद्ध (आक्रमण)

क्र.	काकतीय वंश शासक	विरुद्ध शासक	राजधानी	विवरण
1	अन्नमदेव	हरीशचन्द्र देव (छिंदकनागवंश)	बारसूर	▪ अन्नमदेव ने हरीशचन्द्र देव (छिंदकनागवंश के अंतिम शासक) को हराकर बस्तर में काकतीय वंश की स्थापना किया। ▪ अन्नमदेव ने शंखनी – डंकिनी नदी के संगम पर दंतेवाड़ा शहर बसाकर **दंतेश्वरी (मणिकेश्वरी) माता मंदिर** बनाया।
2	प्रतापराज देव	कुली कुतुबशाह	गोलगुण्डा	▪ प्रतापराज देव पर गोलगुण्डा का **कुली कुतुबशाह** ने आक्रमण किया तथा पराजित हुआ। ▪ कुली कुतुबशाह **छत्तीसगढ़ में आक्रमण करने वाला दूसरा मुस्लिम** था।
3	जगदीशराज देव	अब्दुल्ला कुतुबशाह	गोलगुण्डा	▪ जगदीशराज देव पर गोलगुण्डा का **अब्दुल्ला कुतुबशाह** ने आक्रमण किया तथा पराजित हुआ। ▪ अब्दुल्ला कुतुबशाह **छत्तीसगढ़ में आक्रमण करने वाला तीसरा मुस्लिम** था।
4	दलपत देव	**नीलू पंत** (भोंसला सेनापति)	नागपुर	▪ दलपत देव पर **भोंसले सेनापति नीलू पंत** का आक्रमण हुआ तथा नीलू पंत पराजित हुआ।
5	अजमेर सिंह	दरियादेव (बिम्बाजी भोंसलें)	रतनपुर	▪ 1777 - दरियादेव ने विक्रमदेव (जयपुर के शासक), बिम्बाजी भोंसलें तथा जॉनसन की सहायता से अजमेर सिंह पर आक्रमण किया। ▪ परिणामस्वरुप अजमेर सिंह पराजित हुआ तथा दरियादेव शासक बना। ▪ बिम्बाजी भोंसलें बस्तर में **आक्रमण करने वाला दूसरा मराठा था।**
6	महिपाल देव	**रामचंद्र बाघ** (व्योमकोजी भोंसलें का सेनापति)	नागपुर	▪ कारण - महिपाल देव ने भोंसलों को टकोली देना बंद कर दिया। ▪ युद्ध - **व्योमकोजी भोंसलें** के सेनापति **रामचंद्र बाघ** के नेतृत्व में बस्तर पर आक्रमण किया गया। ▪ परिणाम - महिपाल देव पराजित हुए तथा **सिहावा परगना** मराठों को देना पड़ा। ▪ रामचंद्र बाघ बस्तर में **आक्रमण करने वाला तीसरा मराठा मराठा था।**

युद्ध (आक्रमण)

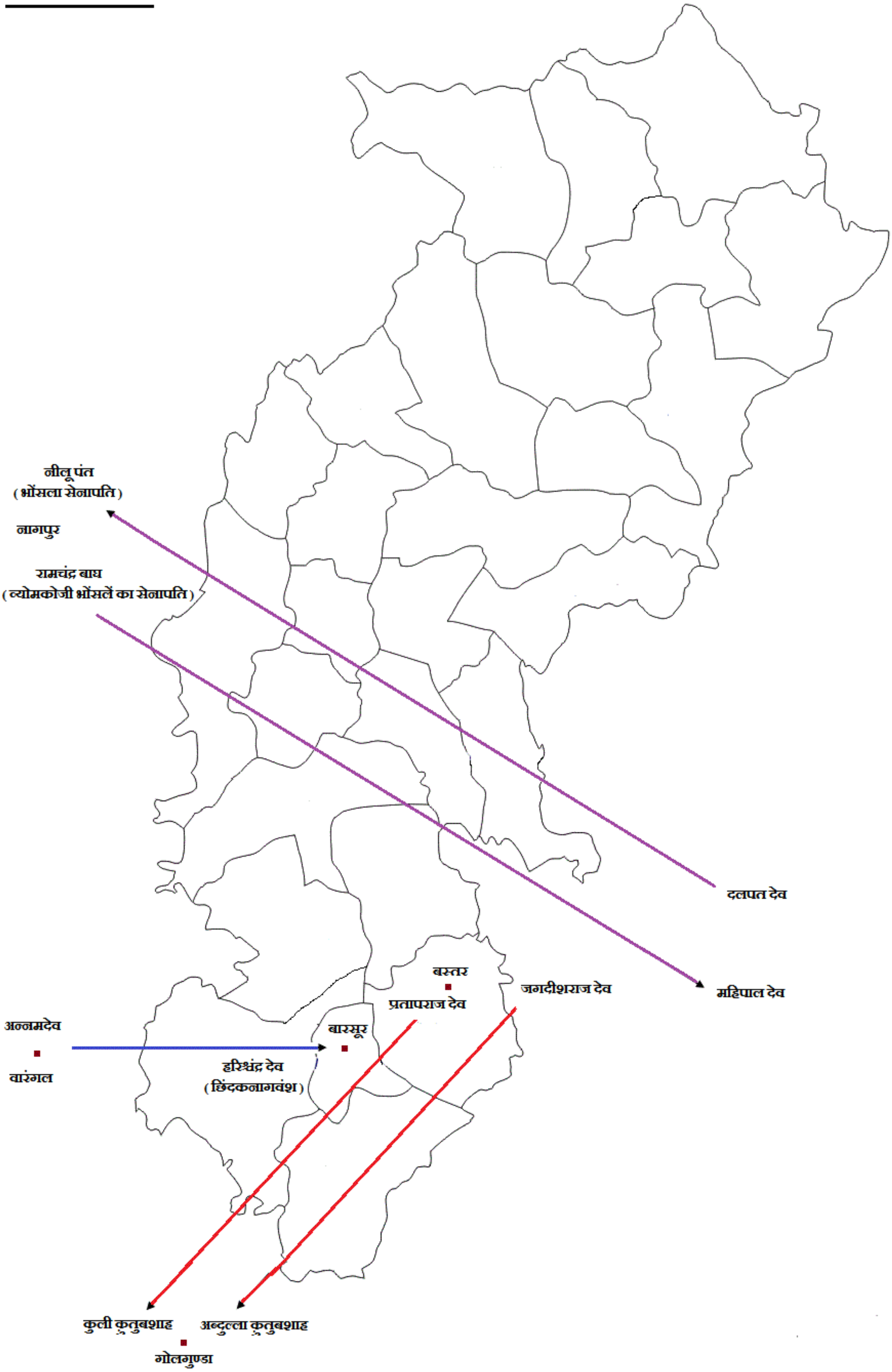
नीलू पंत
(भोंसला सेनापति)
नागपुर
रामचंद्र बाघ
(व्योमकोजी भोंसलें का सेनापति)
दलपत देव
बस्तर
जगदीशराज देव
महिपाल देव
प्रतापराज देव
अन्नमदेव
बारसूर
वारंगल
हरिश्चंद्र देव
(छिंदकनागवंश)
कुली क़ुतुबशाह
अब्दुल्ला क़ुतुबशाह
गोलगुण्डा

युद्ध (आक्रमण)

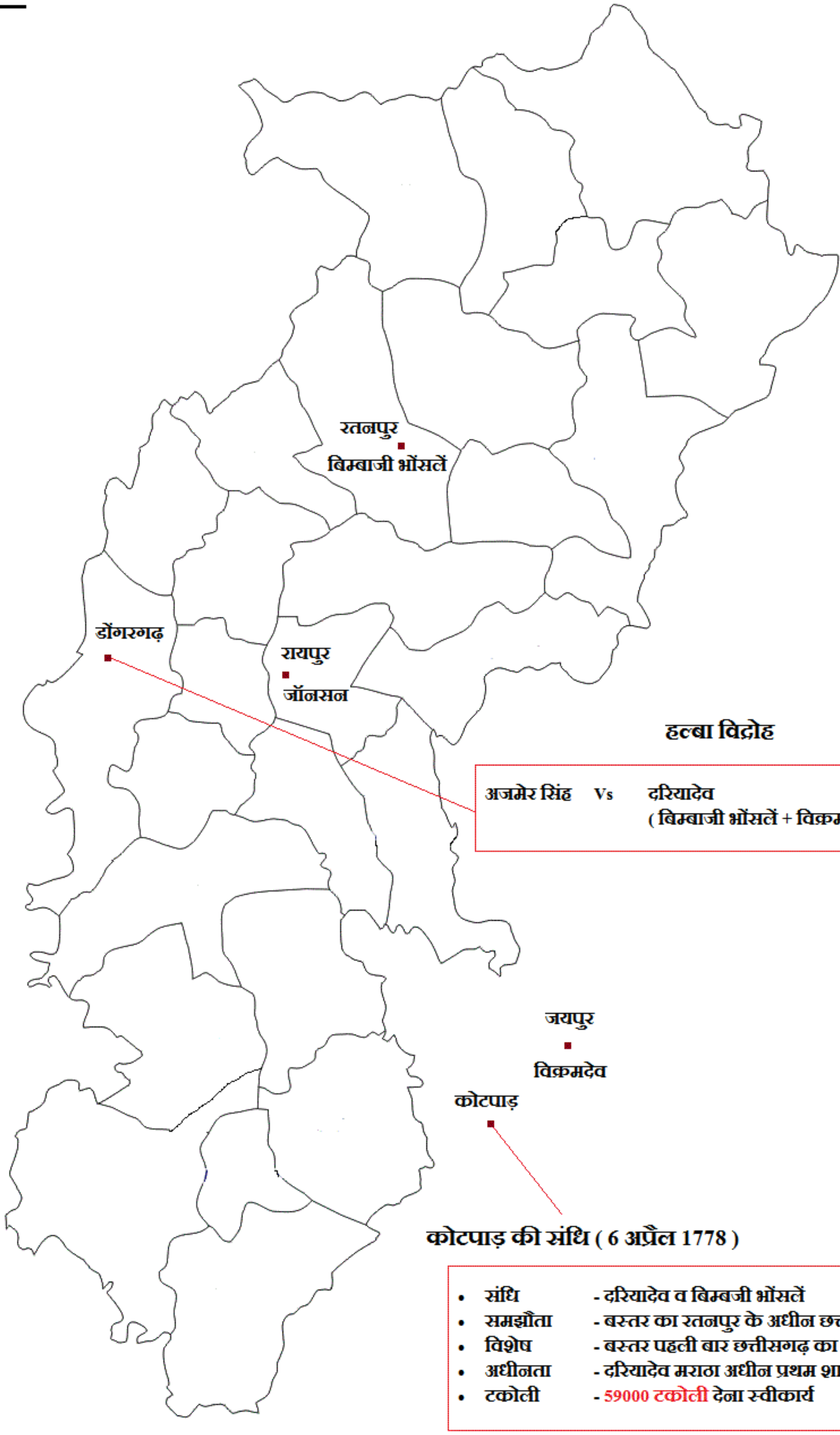

हल्बा विद्रोह

अजमेर सिंह Vs दरियादेव
(बिम्बाजी भोंसलें + विक्रमदेव + जॉनसन)

कोटपाड़ की संधि (6 अप्रैल 1778)

- संधि - दरियादेव व बिम्बजी भोंसलें
- समझौता - बस्तर का रतनपुर के अधीन छत्तीसगढ़ में विलय
- विशेष - बस्तर पहली बार छत्तीसगढ़ का अंग बना
- अधीनता - दरियादेव मराठा अधीन प्रथम शासक
- टकोली - 59000 टकोली देना स्वीकार्य

छत्तीसगढ़ में मुस्लिम आक्रमण

क्र.	शासक	मुस्लिम शासक	राजधानी	विवरण
1	बाहरेन्द्र साय (रतनपुर कल्चुरी वंश)	महमूद खिलजी	मांडू	▪ बाहरेन्द्र साय पर मांडू का **महमूद खिलजी** (पठान शासक) ने आक्रमण किया | ▪ बाहरेन्द्र साय ने पठानों को सोन नदी तक खदेड़ दिया | ▪ महमूद खिलजी **छत्तीसगढ़ में आक्रमण करने वाला पहला मुस्लिम** था |
2	प्रतापराज देव (काकतीय वंश)	कुली कुतुबशाह	गोलगुण्डा	▪ प्रतापराज देव पर गोलगुण्डा का **कुली कुतुबशाह** ने आक्रमण किया तथा पराजित हुआ | ▪ कुली कुतुबशाह **छत्तीसगढ़ में आक्रमण करने वाला दूसरा मुस्लिम** था |
3	जगदीशराज देव (काकतीय वंश)	अब्दुल्ला कुतुबशाह	गोलगुण्डा	▪ जगदीशराज देव पर गोलगुण्डा का **अब्दुल्ला कुतुबशाह** ने आक्रमण किया तथा पराजित हुआ | ▪ अब्दुल्ला कुतुबशाह **छत्तीसगढ़ में आक्रमण करने वाला तीसरा मुस्लिम** था |

बस्तर में भोंसला (मराठा) आक्रमण

क्र.	शासक	भोंसला शासक	राजधानी	विवरण
1	दलपत देव	**नीलू पंत** (भोंसला सेनापति)	नागपुर	▪ भोंसले सेनापति नीलू पंत बस्तर में आक्रमण करने वाला पहला मराठा था |
2	अजमेर सिंह	दरियादेव (बिम्बाजी भोंसलें)	रतनपुर	▪ बिम्बाजी भोंसलें बस्तर में आक्रमण करने वाला दूसरा मराठा था |
3	महिपाल देव	**रामचंद्र बाघ** (व्योमकोजी भोंसलें का सेनापति)	नागपुर	▪ व्योमकोजी भोंसलें के सेनापति रामचंद्र बाघ बस्तर में आक्रमण करने वाला तीसरा मराठा मराठा था |

छत्तीसगढ़ में मुस्लिम आक्रमण

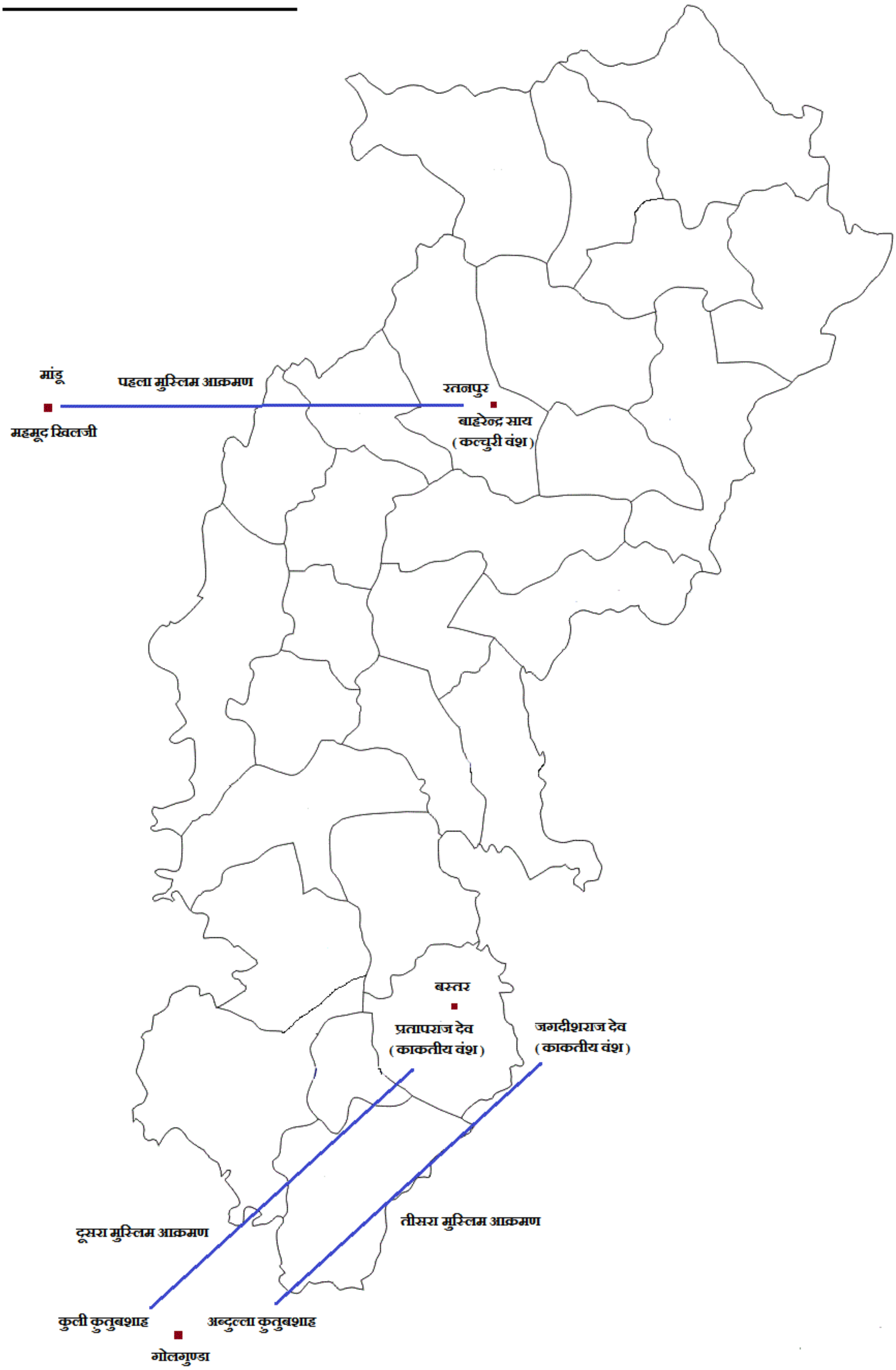

बस्तर में भोंसला (मराठा) आक्रमण

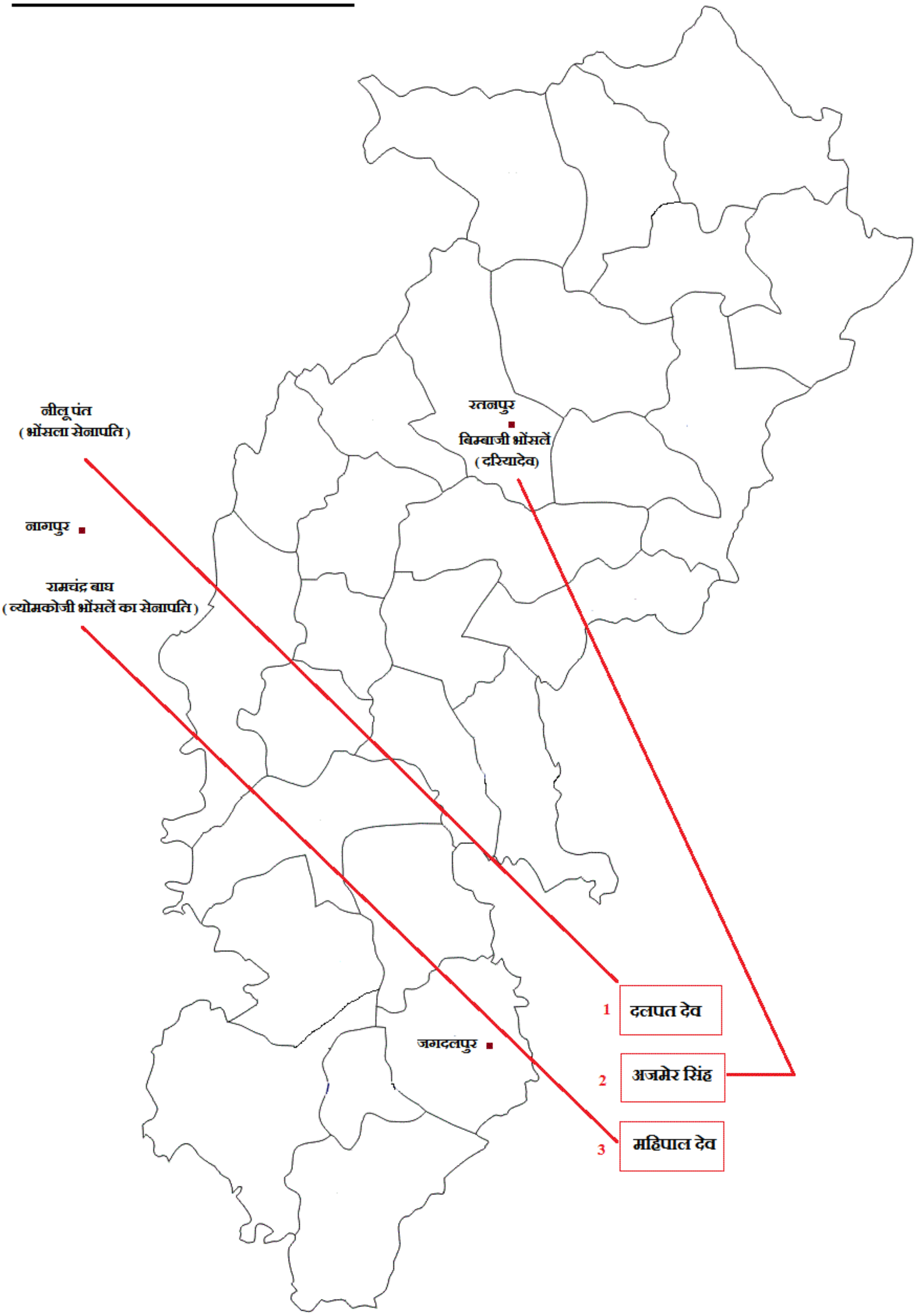

बस्तर का रथयात्रा (गोंचा पर्व)

बस्तर का रथयात्रा (गोंचा पर्व)

- प्रारंभ - 1468
- प्रारंभ कर्ता - पुरुषोत्तम देव (1468 – 1534)
- आयोजन स्थल - सिरहासार (जगदलपुर)
- आराध्य देवता - जगन्नाथ
- आयोजन - आषाण शुक्ल पक्ष द्वितीया
- कुल अवधि - 14 दिन
- विशेष - बस्तर दशहरा के बाद बस्तर का दूसरा प्रमुख पर्व

बस्तर का दशहरा

बस्तर दशहरा

- प्रारंभ - 1468
- प्रारंभ कर्ता - पुरुषोत्तम देव
- आयोजन स्थल - सिरहासार (जगदलपुर)
- आराध्य देवी - दंतेश्वरी देवी (मावली देवी)
- आयोजन - सावन अमावस्या (हरेली अमावस्या) से अश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी
- कुल अवधि - 75 दिन (विश्व का सबसे लम्बी अवधि तक मानाये जाने वाला पर्व) [CGPSC SEE 2017]
- प्रथम कार्यक्रम - पाटा जात्रा
- प्रमुख रस्म - 13 दिन तक (आश्विन अमावस्या से अश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी)
- प्रथम रस्म - काछिनगादी
- अंतिम रस्म - ओड़ाड़ी (गंगामुणा जात्रा)
- **विशेष**
  - बस्तर दशहरा छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर अंचल में आयोजित होने वाले पारंपरिक पर्वों में सर्वश्रेष्ठ पर्व है |
  - बस्तर दशहरा सम्पूर्ण भारत में आयोजित दशहरा से भिन्न है |
  - सम्पूर्ण भारत में दशहरा का आयोजन राम द्वारा रावण के वध को समर्पित है |
  - बस्तर दशहरा **दंतेश्वरी माता द्वारा महिषासुर के वध** को समर्पित है |
  - बस्तर के गोंचा तथा बस्तर दशहरा में रथ चलाने की प्रथा है |

क्र.	दशहरा	कारण	आयोजन
1	भारत का दशहरा (विजय दशमी)	राम द्वारा रावण का वध	अश्विन शुक्ल पक्ष 10 वीं
2	बस्तर का दशहरा	दंतेश्वरी माता द्वारा महिषासुर का वध	सावन अमावस्या (हरेली अमावस्या) से अश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी

बस्तर दशहरा की प्रमुख रस्में

क्र.	अवसर	प्रथा	कार्यक्रम
1	सावन अमावस्या (हरेली अमावस्या)	पाटा जात्रा	लकड़ी की पूजा व रथ का निर्माण
2	आश्विन अमावस्या (पितृमोक्ष अमावस्या)	काछिनगादी	काछिन देवी को गद्दी प्रदान करके रथ परिचालन व दशहरा पर्व की अनुमति प्राप्त करना
3	आश्विन शुक्ल पक्ष प्रथमा (नवरात्र का प्रथम दिवस)	जोगी बिठाई	हल्बा जाति का एक व्यक्ति द्वारा सिरहासार में 9 दिन तक व्रत रखकर योग साधना में बैठना (कलश स्थापना)
4	आश्विन शुक्ल द्वितीया से आश्विन शुक्ल सप्तमी	रथ जात्रा (रथ परिक्रमा)	दंतेश्वरी माता को रथ में विराजित कर प्रतिदिन शाम को नगर की परिक्रमा करना |
5	आश्विन शुक्ल अष्टमी (दुर्गा अष्टमी)	निशाजात्रा (दुर्गा अष्टमी)	निशाजात्रा में भक्तों का जुलुस इतवारी बाज़ार से पूजा मण्डप तक पहुचंता है |
6	आश्विन शुक्ल नवमी	जोगी उठाई	9 दिन पूर्व योग साधना में बैठे जोगी को भेंट प्रदान करके योग साधना से उठाया जाता है |
7		मावली परघाव	मावली माता का स्वागत करना
8	आश्विन शुक्ल दशमी (विजयादशमी)	भीतर रैनी	मावली माता को 8 पहियें वाला रैनी रथ (पूर्ववर्ती रथ) द्वारा कुम्हड़ाकोट ले जाना
9	आश्विन शुक्ल एकादशी	बाहिर रैनी	मावली माता को 8 पहियें वाला रैनी रथ (पूर्ववर्ती रथ) द्वारा कुम्हड़ाकोट से सिंहद्वार ले जाना
10	आश्विन शुक्ल द्वादशी	मुरिया दरबार	आमसभा का आयोजन
11	आश्विन शुक्ल त्रयोदशी	ओहाड़ी (गंगा मुणा यात्रा)	मावली माता की विदाई

पाटा जात्रा

- अवसर - **सावन अमावस्या (हरेली अमावस्या)**
- प्रारंभ - बस्तर दशहरा का प्रथम प्रथा
- प्रथा - रथ निर्माण हेतु **बिलोरी जंगल** से साल लकड़ी लाकर उसकी पूजा की जाती है |
- अर्पण - **7 मांगुर मछलियों** की बलि
- कार्य - रथ निर्माण

क्र.	कार्य	निर्माणकर्ता
1	रथ बनाने वाले बढ़ई	झार उमरगांव
2	रथ बनाने वाले लोहार	बेड़ा उमरगांव
3	रथ खींचने वाली रस्सी का निर्माण	केशपाल , करंजी , सोनाबाल गांव

काछिनगादी

- अर्थ - काछिन देवी को गद्दी प्रदान करना
- अवसर - आश्विन अमावस्या (पितृमोक्ष अमावस्या)
- पूजा - काछिन देवी (महरा जाति की इष्ट देवी) [CGVyapam FCPR 2016]
- काछिनगादी - बेल कांटों से तैयार झुला
- काछिन देवी - मिरगान जाति की 9 वर्ष की कुंवारी बालिका
- प्रथा - **काछिनगादी** पर मिरगान जाति की 9 वर्ष की कुंवारी बालिका **काछिन देवी** के रूप में बैठकर **रथ परिचालन व पर्व** की अनुमति देती है |
- प्रारंभ - बस्तर दशहरा का प्रथम रश्म

जोगी बिठाई

- अर्थ - हल्बा जाति का एक व्यक्ति सिरासार में 9 दिन तक व्रत रखकर योग साधना में बैठता है जिसे जोगी बिठाई कहते है |
- अवसर - आश्विन शुक्ल पक्ष प्रथमा (नवरात्र का प्रथम दिवस)
- स्थान - सिरहासार (जगदलपुर)
- जोगी - हल्बा जाति का एक व्यक्ति
- प्रमुख रस्म - कलश स्थापना [CGVyapam RI 2017]

रथ जात्रा (रथ परिक्रमा)

- अवसर - आश्विन शुक्ल द्वितीया से आश्विन शुक्ल सप्तमी
- कुल अवधि - 6 दिन
- प्रथा - दंतेश्वरी माता को रथ में विराजित कर प्रतिदिन शाम को नगर की परिक्रमा करना |
- प्रमुख रस्म - दंतेश्वरी माता की आराधना
- लोकनृत्य - मुण्डा जाति द्वारा **मार नृत्य**

क्र.	रथ	पहिया	खींचनें का कार्य
1	फूल रथ	4	अगरवरा व कचोरापाटी परगना के लोग
2	रैनी रथ	8	किलेपाल के माड़िया

निशाजात्रा (दुर्गा अष्टमी)

- अवसर - आश्विन शुक्ल अष्टमी (दुर्गा अष्टमी)
- प्रथा - निशाजात्रा में भक्तों का जुलुस इतवारी बाज़ार से पूजा मण्डप तक पहुचंता है |
- प्रमुख रस्म - दंतेश्वरी माता की आराधना

जोगी उठाई

- अवसर - आश्विन शुक्ल नवमी
- प्रथा - 9 दिन पूर्व योग साधना में बैठे जोगी को भेंट प्रदान करके योग साधना से उठाया जाता है |

मावली परघाव

- अर्थ - मावली माता का स्वागत करना
- अवसर - आश्विन शुक्ल नवमी [CGPSC SEE 2017]
- प्रथा - दंतेश्वरी माता की बड़ी बहन मावली माता की प्रतिमा को दंतेवाड़ा से बस्तर 4 माड़िया व्यक्तियों द्वारा डोली में लाया जाता है |

भीतर रैनी

- अर्थ - मावली माता को कुम्हड़ाकोट ले जाना
- अवसर - आश्विन शुक्ल दशमी (विजयादशमी)
- मान्यता - दंतेश्वरी देवी द्वारा महिषासुर का वध
- प्रथा - 8 पहियें वाला रैनी रथ (पूर्ववर्ती रथ) को नगर परिक्रमा करवाकर कुम्हड़ाकोट ले जाते है |

बाहिर रैनी

- अर्थ - मावली माता को कुम्हड़ाकोट से सिंहद्वार ले जाना
- अवसर - आश्विन शुक्ल एकादशी
- प्रथा - 8 पहियें वाला रैनी रथ (पूर्ववर्ती रथ) को कुम्हड़ाकोट से सिंहद्वार ले जाते है |

मुरिया दरबार

- अर्थ - आमसभा का आयोजन
- अवसर - आश्विन शुक्ल द्वादशी
- स्थान - सिरहासार (जगदलपुर)
- कार्यक्रम - मुरिया दरबार में ग्रामवासियों की समस्याओं पर चर्चा करके निराकरण करना |

ओहाड़ी (गंगा मुणा यात्रा)

- अर्थ - मावली माता की विदाई
- अवसर - आश्विन शुक्ल त्रयोदशी
- कार्यक्रम - गंगा मुणा यात्रा में दंतेवाड़ा से लायी गई मावली माता को बस्तर से दंतेवाड़ा विदा किया जाता है |

बस्तर का रथयात्रा (गोंचा पर्व)

बस्तर का रथयात्रा (गोंचा पर्व)

- प्रारंभ - 1468
- प्रारंभ कर्ता - पुरुषोत्तम देव (1468 – 1534)
- आयोजन स्थल - जगदलपुर
- आराध्य देवता - जगन्नाथ
- आयोजन - आषाण शुक्ल पक्ष द्वितीया
- कुल अवधि - 9 दिन
- विशेष - बस्तर दशहरा के बाद बस्तर का दूसरा प्रमुख पर्व

बस्तर दशहरा

बस्तर दशहरा

- प्रारंभ - 1468
- प्रारंभ कर्ता - पुरुषोत्तम देव
- आयोजन स्थल - सिरहासार (जगदलपुर)
- आराध्य देवी - दंतेश्वरी देवी (मावली देवी)
- आयोजन - सावन अमावस्या (हरेली अमावस्या) से अश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी
- कुल अवधि - 75 दिन
  (विश्व का सबसे लम्बी अवधि तक मानाये जाने वाला पर्व)
- प्रथम कार्यक्रम - पाटा जात्रा
- प्रमुख रस्म - 13 दिन तक
  (आश्विन अमावस्या से अश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी)
- प्रथम रस्म - काछिनगादी
- अंतिम रस्म - ओड़ाड़ी (गंगामुणा जात्रा)
- विशेष - बस्तर दशहरा छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर अंचल में आयोजित होने वाले पारंपरिक पर्वों में सर्वश्रेष्ठ पर्व है |

जनजातीय विद्रोह

क्र.	शासक	विद्रोह	प्रारंभ	स्थल	नेतृत्वकर्ता	दमनकर्ता	परिणाम
1	अजमेर सिंह	हल्बा विद्रोह	1774	डोंगर	अजमेर सिंह	जॉनसन	1777 : अजमेर सिंह को फांसी
2	दरियादेव	भोपालपट्टनम विद्रोह	1795	भोपालपट्टनम	आदिवासियों द्वारा		**कैप्टन ब्लंट** कांकेर तक आये लेकिन बस्तर प्रवेश नहीं कर पाए।
3	महिपालदेव	परलकोट विद्रोह	1824	परलकोट	गेंदसिंह	कैप्टन पेबे	20 जनवरी 1825 : गेंदसिंह को फांसी
4	भूपाल देव	तारापुर विद्रोह	1842	तारापुर	दलगंजन सिंह		मेजर विलियम्स द्वारा टकोली कर में वृद्धि को वापस लिया गया।
5		मेरिया विद्रोह / माड़िया विद्रोह	1842	दंतेवाड़ा	हिड़मा मांझी	कैम्पबेल	नरबली प्रथा का अंत
6	भैरम देव	लिंगागिरी विद्रोह	1856	लिंगागिरी	धुरवा राम माड़िया		5 मार्च 1856 : धुरवा राम को फांसी
7		कोई विद्रोह	1859	भेजी	नांगुल दोरला		एकमात्र सफल आंदोलन
8		मुड़िया विद्रोह / मुरिया विद्रोह	1876	मारेंगा	झाड़ा सिरहा	मैक जार्ज	8 मार्च 1876 : मुरिया दरबार
9	रुद्रप्रताप देव	भूमकाल विद्रोह	1910	पुसपाल	वीर गुण्डाधुर	कैप्टन गेयर	29 मार्च 1910 : वीर गुण्डाधुर फरार
10	राजा रामानुज प्रताप सिंहदेव	उरांव विद्रोह	1918	गोपाल ग्राम	उरांव जनजाति		
11		गोंड़ विद्रोह	1932	भाकुर्मा ग्राम	गोंड़ जनजाति		
12		पाइक विद्रोह	1817	उड़ीसा	कंवर जनजाति		CGPSC PRE 2018

जनजातीय विद्रोह के प्रतीक चिन्ह

क्र.	विद्रोह	नेतृत्वकर्ता	प्रतीक	नारा
1	परलकोट विद्रोह	गेंदसिंह	धावड़ा वृक्ष की टहनी	
2	लिंगागिरी विद्रोह	धुरवा राम माड़िया		बस्तर का महान मुक्ति संग्राम
3	कोई विद्रोह	नांगुल दोरला		"एक साल वृक्ष , एक सिर के बराबर"
4	मुड़िया विद्रोह / मुरिया विद्रोह	झाड़ा सिरहा	आम वृक्ष की टहनी	बस्तर का महान स्वाधीनता संग्राम
5	भूमकाल विद्रोह	वीर गुण्डाधुर	डारामिरी	"बस्तर बस्तर – वासियों का है"

हल्बा विद्रोह (1774 – 1777)

- नेतृत्व - अजमेर सिंह
- शासक - अजमेर सिंह
- स्थान - डोंगर
- कारण - उत्तराधिकार का युद्ध (अजमेर सिंह व दरियादेव)
- परिणाम - 1777 : अजमेर सिंह को फांसी

उत्तराधिकार का युद्ध

- अजमेर सिंह Vs दरियादेव + विक्रमदेव (जयपुर के शासक) + बिम्बाजी भोंसलें + जॉनसन
- दरियादेव ने विक्रमदेव (जयपुर के शासक) , बिम्बाजी भोंसलें तथा जॉनसन की सहायता से अजमेर सिंह पर आक्रमण किया |
- परिणामस्वरुप अजमेर सिंह पराजित हुआ तथा दरियादेव शासक बना |

कोटपाड़ की संधि (6 अप्रैल 1778)

- संधि - दरियादेव व बिम्बजी भोंसलें
- समझौता - बस्तर का रतनपुर के अधीन छत्तीसगढ़ में विलय
- विशेष - बस्तर पहली बार छत्तीसगढ़ का अंग बना
- अधीनता - दरियादेव मराठा अधीन प्रथम शासक
- टकोली - **59000 टकोली** देना स्वीकार्य

भोपालपट्टनम विद्रोह (1795)

- नेतृत्व - आदिवासियों द्वारा
- शासक - दरियादेव
- स्थान - भोपालपट्टनम
- कारण - **कैप्टन ब्लंट** का बस्तर आगमन
- परिणाम - **कैप्टन ब्लंट** कांकेर तक आये लेकिन बस्तर प्रवेश नहीं कर पाए |

परलकोट विद्रोह (1824 – 1825)

- प्रारंभ - 24 दिसम्बर 1824
- नेतृत्व - गेंदसिंह (परलकोट के जमींदार)
- शासक - महिपालदेव
- दमनकर्ता - कैप्टन पेबे (ब्रिटिश अधीक्षक – एग्नेयु)
- स्थान - परलकोट
- कारण - लगान के विरोध में (मराठा व अंग्रेज द्वारा के शोषण)
- प्रतीक चिन्ह - धावड़ा वृक्ष की टहनी
- गिरफ्तारी - 10 जनवरी 1825 : गेंदसिंह की गिरफ्तारी
- परिणाम - 20 जनवरी 1825 : गेंदसिंह को फांसी
- गेंदसिंह - छत्तीसगढ़ के प्रथम शहीद

तारापुर विद्रोह (1842 – 1854)

- प्रारंभ - 1842
- नेतृत्व - दलगंजन सिंह (तारापुर के जमींदार)
- शासक - भूपाल देव
- स्थान - तारापुर
- कारण - तारापुर परगना में टकोली कर में वृद्धि
- परिणाम - **मेजर विलियम्स** द्वारा टकोली कर में वृद्धि को वापस लिया गया |

मेरिया विद्रोह / माड़िया विद्रोह (1842 – 1863)

- प्रारंभ - 1842
- नेतृत्व - हिड़मा मांझी
- सहयोगी - श्याम सुंदर (दंतेश्वरी मंदिर के पुजारी)
- शासक - भूपाल देव
- दमनकर्ता - कैम्पबेल
- जांजकर्ता - मैकफर्सन
- स्थान - दंतेवाड़ा
- कारण - नरबली प्रथा समाप्त करने के विरोध में (वायसराय – एलिनबरो)
- मैकफर्सन - "ताड़ीपेन्नु या माटीदेव की पूजा संस्कार नरबली है |"
- मेरिया - दंतेश्वरी माता मंदिर में जिस व्यक्ति की बलि दी जाती है , उसे मेरिया कहते है |

लिंगागिरी विद्रोह (1856)

- प्रारंभ - 1856
- नेतृत्व - धुरवा राम माड़िया
- शासक - भैरम देव
- स्थान - लिंगागिरी
- कारण - बस्तर का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय
- संज्ञा - बस्तर का महान मुक्ति संग्राम
- चित्तलवार का युद्ध - 3 मार्च 1856
- परिणाम - 5 मार्च 1856 : धुरवा राम माड़िया को फांसी
- धुरवा राम माड़िया - छत्तीसगढ़ का दूसरा शहीद / बस्तर का दूसरा शहीद

कोई विद्रोह (1859)

- प्रारंभ - 1859
- नेतृत्व - नांगुल दोरला (पोतेकला के जमींदार)
- सहयोगी - रामभोई (भोपालपट्टनम के जमींदार)
  - जुग्गा राजू (भेजी परगना के जमींदार)
- शासक - भैरम देव
- स्थान - भेजी
- कारण - साल वृक्ष की कटाई
- नारा - "एक साल वृक्ष , एक सिर के बराबर"
- परिणाम - एकमात्र सफल आंदोलन

मुड़िया विद्रोह / मुरिया विद्रोह (1876)

- प्रारंभ - 1876
- नेतृत्व - झाड़ा सिरहा
- शासक - भैरम देव
- दमनकर्ता - मैक जार्ज
- स्थान - मारेंगा
- कारण - दीवान गोपीनाथ कपड़दार का आतंक
- संज्ञा - बस्तर का स्वाधीनता संग्राम
- प्रतीक चिन्ह - आम वृक्ष की टहनी
- **परिणाम**
  - 2 मार्च 1876 - **बस्तर में काला दिवस** मनाया गया |
  - 8 मार्च 1876 - मैक जार्ज ने जगदलपुर में **मुरिया दरबार** का आयोजन किया |

भूमकाल विद्रोह (1910)

- प्रारंभ - 1910
- नेतृत्व - वीर गुण्डाधुर (नेतानार के जमींदार)
- सहयोगी - रानी स्वर्णकुंवर + दीवान लालकालेंद्र सिंह
- शासक - रुद्रप्रताप देव
- मुखबीर - सोनू मांझी
- दमनकर्ता - कैप्टन गेयर
- स्थान - पुसपाल बाज़ार
- कारण - दीवान बैजनाथ पण्डा का आतंक
- प्रतीक चिन्ह - डारामिरी (आम की टहनी + लाल मिर्च + मिट्टी का ढेला + धनुष + भाला)
- नारा - "बस्तर बस्तर – वासियों का है"
- **परिणाम**
  - विद्रोहियों व अंग्रेज के मध्य अंतिम सामना अलवार में हुआ |
  - 29 मार्च 1910 - वीर गुण्डाधुर फरार

उरांव विद्रोह (1918)

- प्रारंभ - 1918
- नेतृत्व - सम्पूर्ण उरांव जनजाति
- शासक - रामानुज प्रताप सिंहदेव
- स्थान - गोपाल ग्राम (कोरिया रियासत)

गोंड़ विद्रोह (1932)

- प्रारंभ - 1932
- नेतृत्व - सम्पूर्ण गोंड़ जनजाति
- शासक - रामानुज प्रताप सिंहदेव
- स्थान - भाकुर्मा ग्राम (सरगुजा रियासत)

पाइक विद्रोह (1817)

- पाइक - कंवर की उपजाति CGPSC PRE 2018
- विद्रोह क्षेत्र - उड़ीसा
- नेतृत्व - बक्शी जलबन्धु
- उद्देश्य - पाइक जनजाति द्वारा ब्रिटिश सरकार के शोषण के विरुद्ध
- विशेष - 1857 की क्रांति का पूर्वगामी

जनजातीय विद्रोह

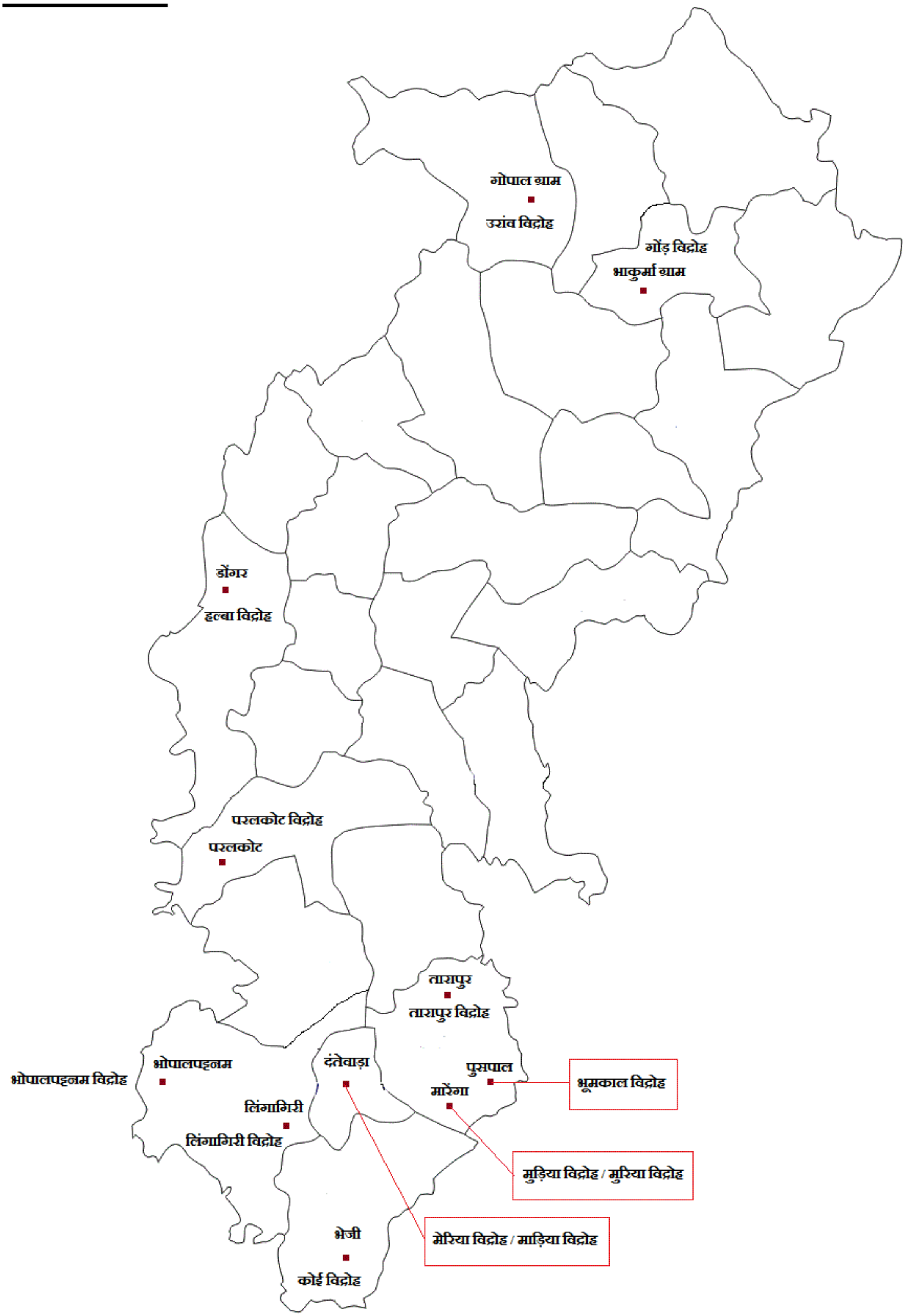
गोपाल ग्राम
उरांव विद्रोह
गोंड़ विद्रोह
भाकुर्मा ग्राम
डोंगर
हल्बा विद्रोह
परलकोट विद्रोह
परलकोट
तारापुर
तारापुर विद्रोह
भोपालपट्टनम विद्रोह
भोपालपट्टनम
दंतेवाड़ा
पुसपाल
भूमकाल विद्रोह
मारेंगा
लिंगागिरी
लिंगागिरी विद्रोह
मुड़िया विद्रोह / मुरिया विद्रोह
मेरिया विद्रोह / माड़िया विद्रोह
भेजी
कोई विद्रोह

जनजातीय विद्रोह

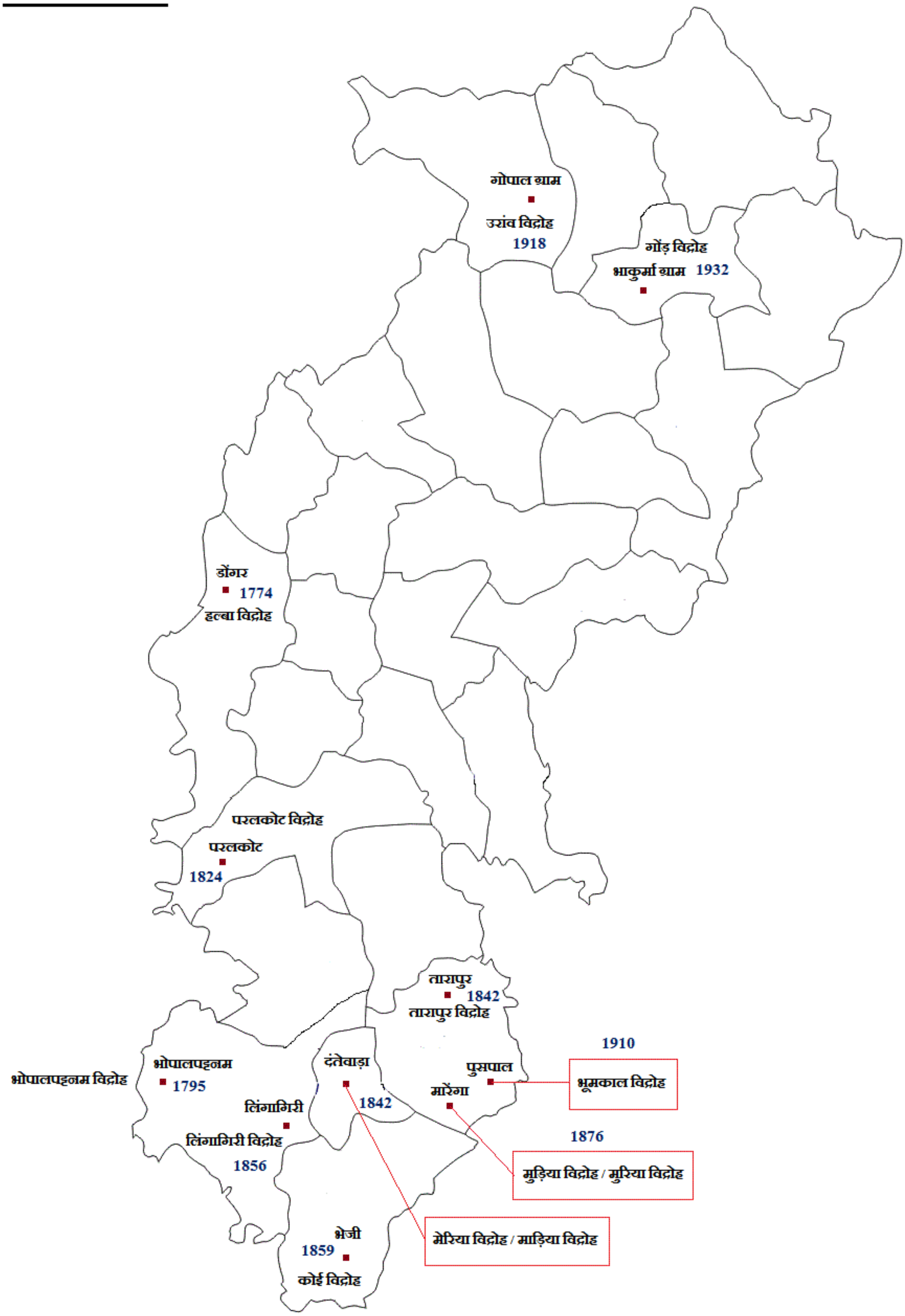
गोपाल ग्राम
उरांव विद्रोह
1918
गोंड़ विद्रोह
भाकुर्मा ग्राम 1932
डोंगर
1774
हल्बा विद्रोह
परलकोट विद्रोह
परलकोट
1824
तारापुर
1842
तारापुर विद्रोह
1910
भोपालपट्नम विद्रोह
भोपालपट्नम
1795
दंतेवाड़ा
1842
पुसपाल
भूमकाल विद्रोह
मारेंगा
लिंगागिरी
लिंगागिरी विद्रोह
1856
1876
मुड़िया विद्रोह / मुरिया विद्रोह
भेजी
1859
कोई विद्रोह
मेरिया विद्रोह / माड़िया विद्रोह

जनजातीय विद्रोह

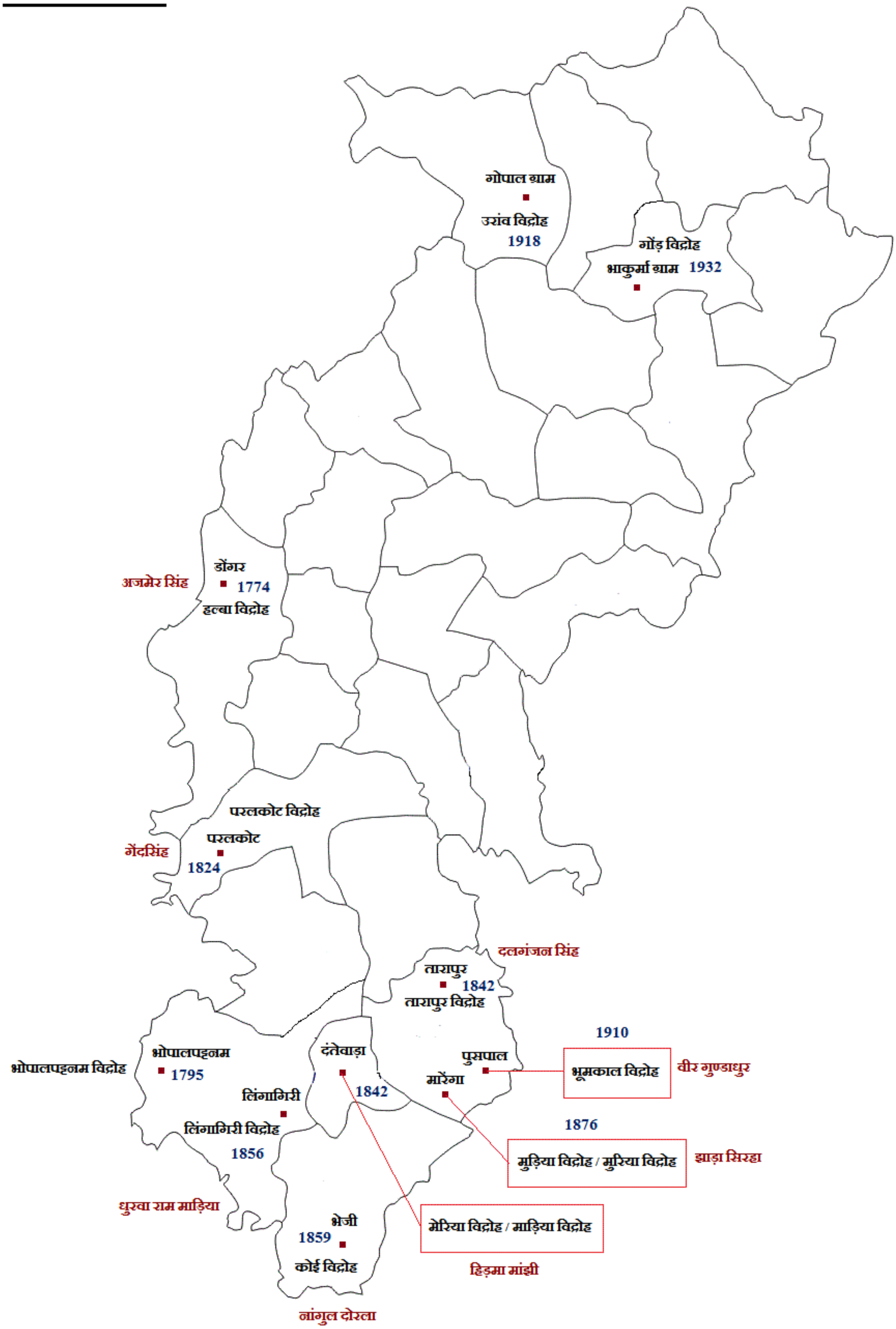

गोपाल ग्राम
उरांव विद्रोह
1918
गोंड़ विद्रोह
भाकुर्मा ग्राम
1932
डोंगर
1774
हल्बा विद्रोह
अजमेर सिंह
परलकोट विद्रोह
परलकोट
1824
गेंदसिंह
दलगंजन सिंह
तारापुर
1842
तारापुर विद्रोह
1910
भोपालपट्टनम विद्रोह
भोपालपट्टनम
1795
दंतेवाड़ा
1842
पुसपाल
मारेंगा
भूमकाल विद्रोह
वीर गुण्डाधुर
लिंगागिरी
लिंगागिरी विद्रोह
1856
1876
मुड़िया विद्रोह / मुरिया विद्रोह
झाड़ा सिरहा
धुरवा राम माड़िया
भेजी
1859
कोई विद्रोह
मेरिया विद्रोह / माड़िया विद्रोह
हिड़मा मांझी
नांगुल दोरला

जनजातीय विद्रोह

शासक

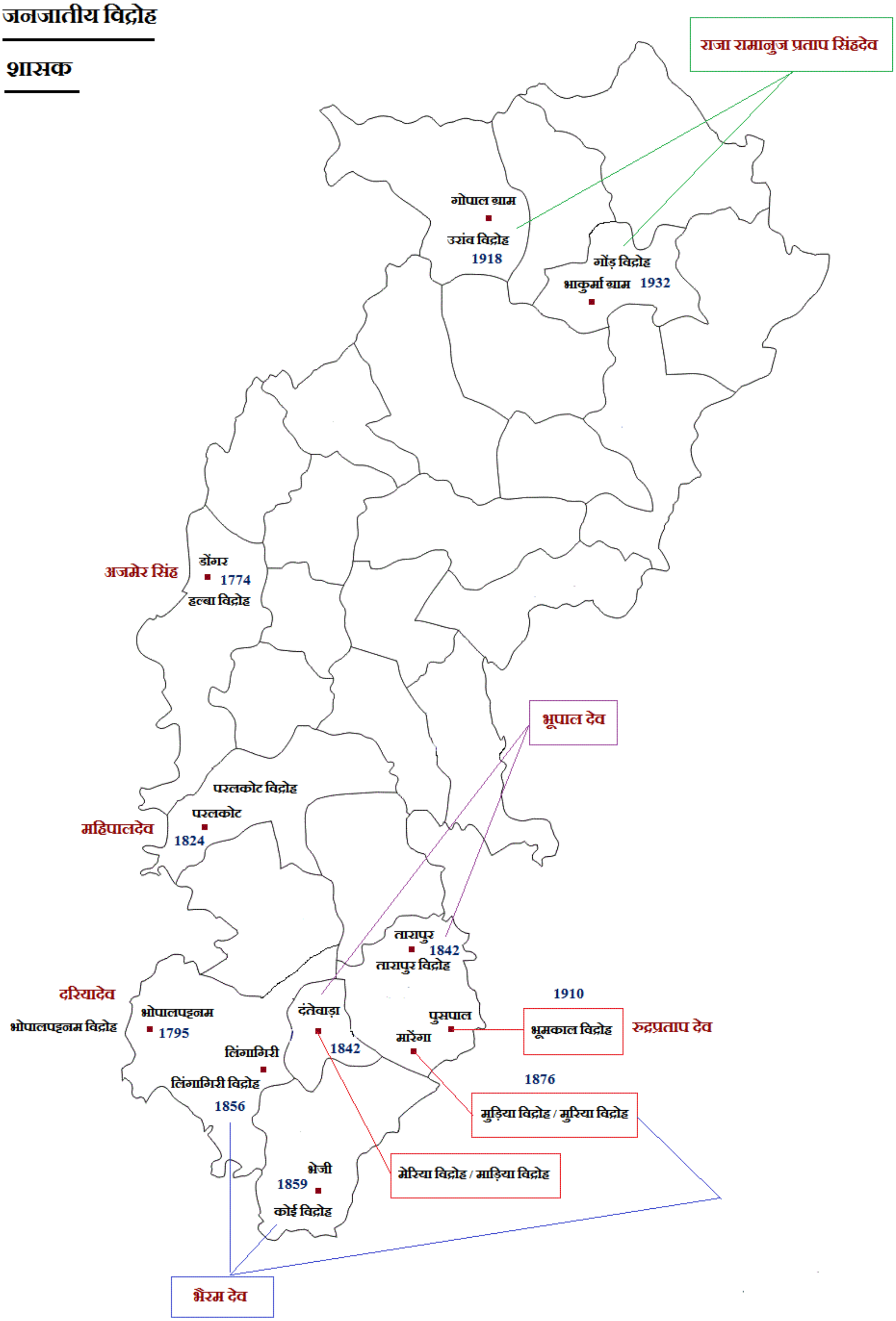

जनजातीय विद्रोह

दमनकर्ता

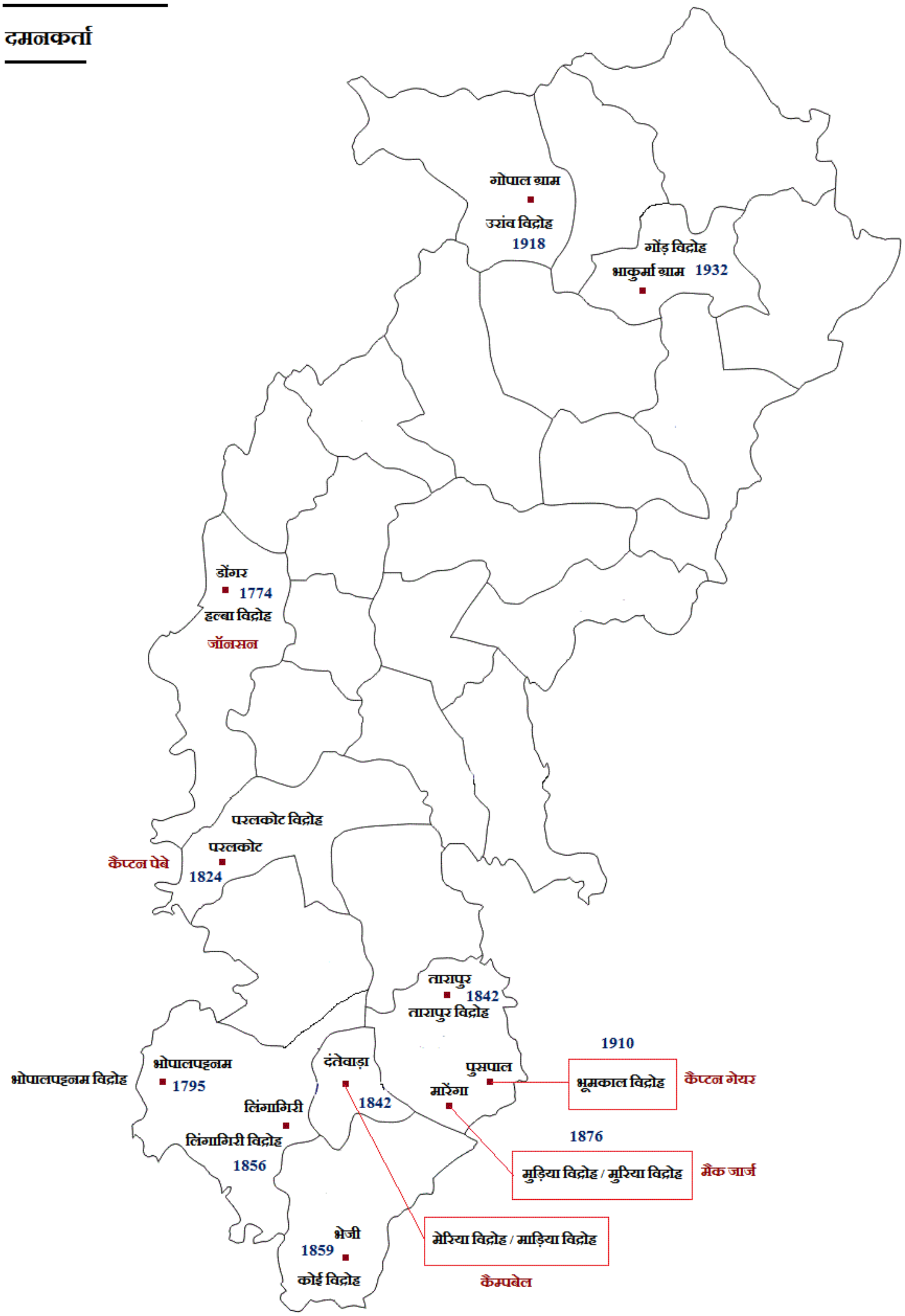

जनजातीय विद्रोह

दमनकर्ता

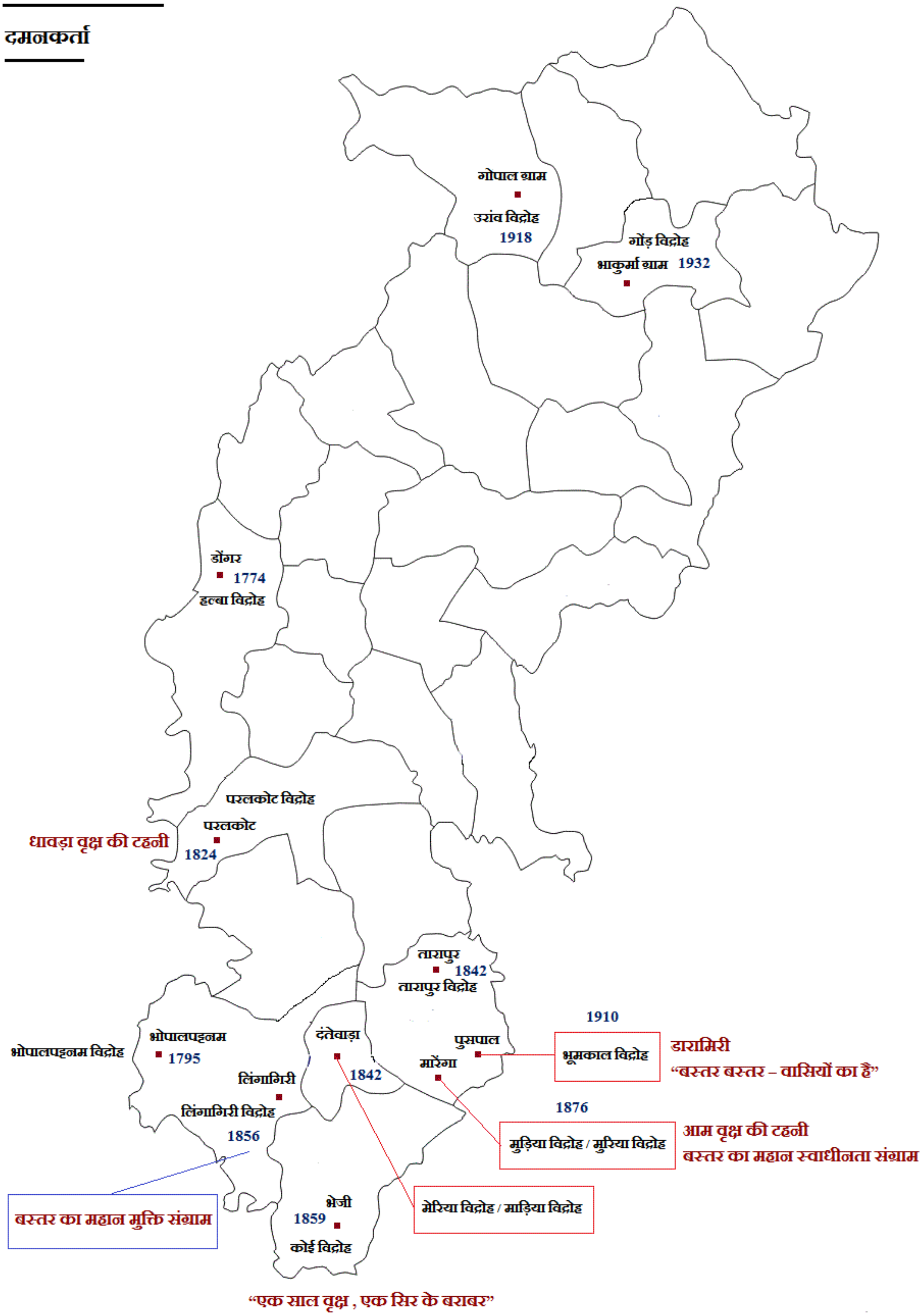

हल्बा विद्रोह (1774 – 1777)

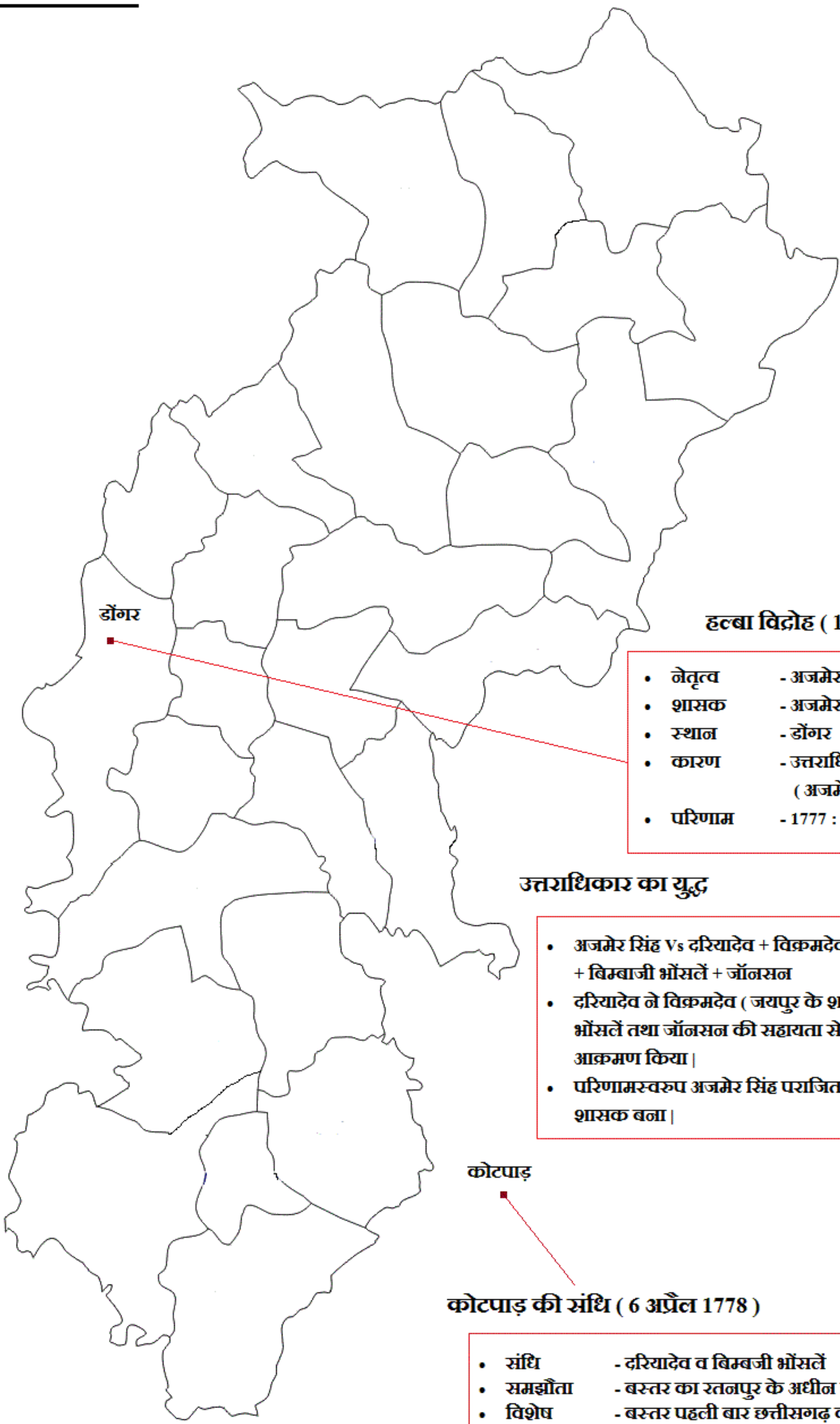

हल्बा विद्रोह (1774 – 1777)

- नेतृत्व - अजमेर सिंह
- शासक - अजमेर सिंह
- स्थान - डोंगर
- कारण - उत्तराधिकार का युद्ध (अजमेर सिंह व दरियादेव)
- परिणाम - 1777 : अजमेर सिंह को फांसी

उत्तराधिकार का युद्ध

- अजमेर सिंह Vs दरियादेव + विक्रमदेव (जयपुर के शासक) + बिम्बाजी भोंसलें + जॉनसन
- दरियादेव ने विक्रमदेव (जयपुर के शासक) , बिम्बाजी भोंसलें तथा जॉनसन की सहायता से अजमेर सिंह पर आक्रमण किया |
- परिणामस्वरुप अजमेर सिंह पराजित हुआ तथा दरियादेव शासक बना |

कोटपाड़ की संधि (6 अप्रैल 1778)

- संधि - दरियादेव व बिम्बजी भोंसलें
- समझौता - बस्तर का रतनपुर के अधीन छत्तीसगढ़ में विलय
- विशेष - बस्तर पहली बार छत्तीसगढ़ का अंग बना
- अधीनता - दरियादेव मराठा अधीन प्रथम शासक
- टकोली - 59000 टकोली देना स्वीकार्य

भोपालपट्टनम विद्रोह (1795)

भोपालपट्टनम विद्रोह (1795)

- नेतृत्व - आदिवासियों द्वारा
- शासक - दरियादेव
- स्थान - भोपालपट्टनम
- कारण - कैप्टन ब्लंट का बस्तर आगमन
- परिणाम - कैप्टन ब्लंट कांकेर तक आये लेकिन बस्तर प्रवेश नहीं कर पाए |

परलकोट विद्रोह (1824 – 1825)

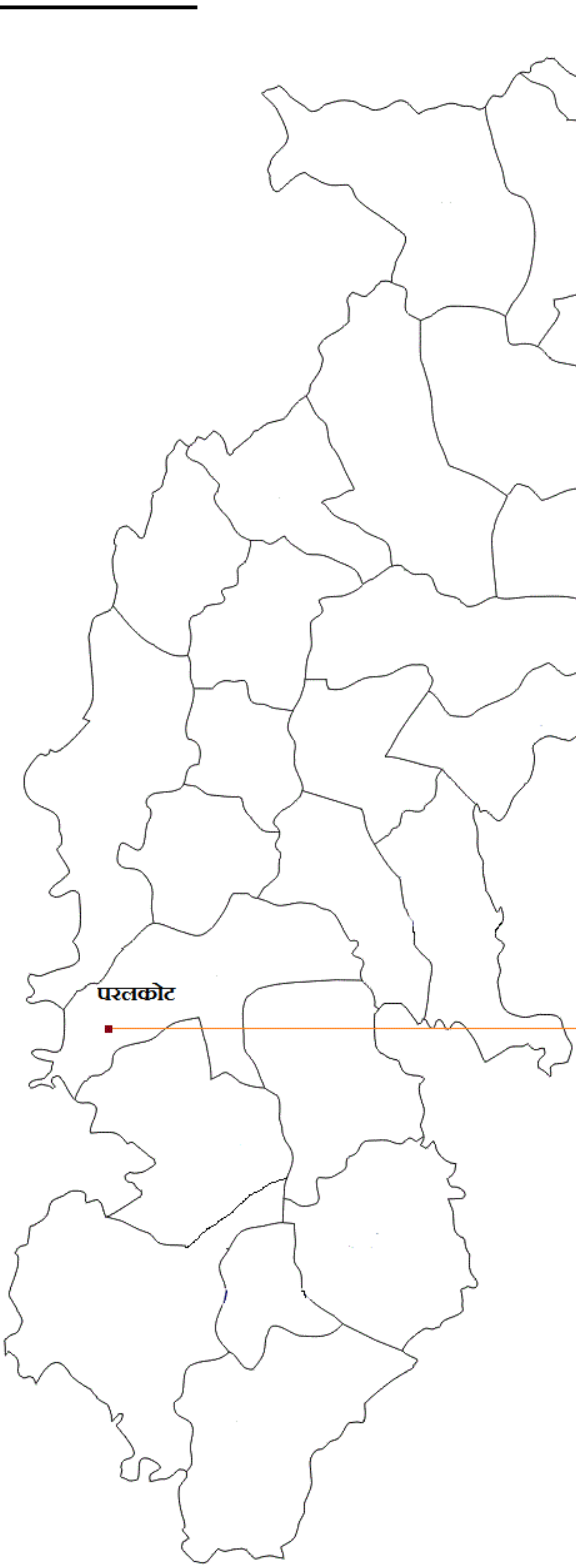

परलकोट विद्रोह (1824 – 1825)

- प्रारंभ - 24 दिसम्बर 1824
- नेतृत्व - गेंदसिंह (परलकोट के जमींदार)
- शासक - महिपालदेव
- दमनकर्ता - कैप्टन पेबे (ब्रिटिश अधीक्षक – एग्नेयु)
- स्थान - परलकोट
- कारण - लगान के विरोध में
  (मराठा व अंग्रेज द्वारा के शोषण)
- प्रतीक चिन्ह - धावड़ा वृक्ष की टहनी
- गिरफ्तारी - 10 जनवरी 1825 : गेंदसिंह की गिरफ्तारी
- परिणाम - 20 जनवरी 1825 : गेंदसिंह को फांसी
- गेंदसिंह - छत्तीसगढ़ के प्रथम शहीद

तारापुर विद्रोह (1842 – 1854)

तारापुर विद्रोह (1842 – 1854)

- **प्रारंभ** - 1842
- **नेतृत्व** - दलगंजन सिंह (तारापुर के जमींदार)
- **शासक** - भूपाल देव
- **स्थान** - तारापुर
- **कारण** - तारापुर परगना में टकोली कर में वृद्धि
- **परिणाम** - मेजर विलियम्स द्वारा टकोली कर में वृद्धि को वापस लिया गया |

मेरिया विद्रोह / माड़िया विद्रोह (1842 – 1863)

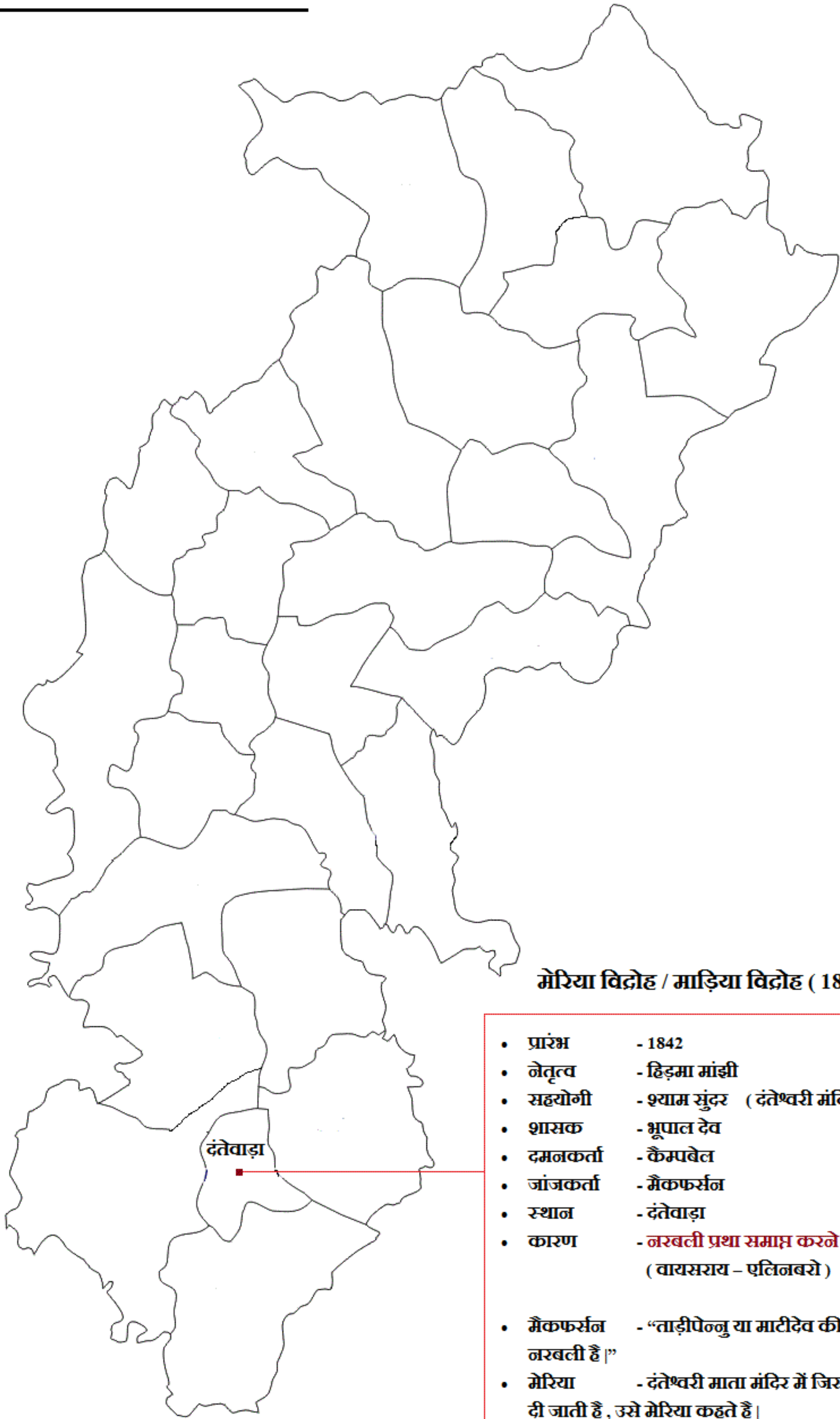

मेरिया विद्रोह / माड़िया विद्रोह (1842 – 1863)

- प्रारंभ - 1842
- नेतृत्व - हिड़मा मांझी
- सहयोगी - श्याम सुंदर (दंतेश्वरी मंदिर के पुजारी)
- शासक - भूपाल देव
- दमनकर्ता - कैम्पबेल
- जांजकर्ता - मैकफर्सन
- स्थान - दंतेवाड़ा
- कारण - नरबली प्रथा समाप्त करने के विरोध में (वायसराय – एलिनबरो)
- मैकफर्सन - "ताड़ीपेन्नु या माटीदेव की पूजा संस्कार नरबली है।"
- मेरिया - दंतेश्वरी माता मंदिर में जिस व्यक्ति की बलि दी जाती है , उसे मेरिया कहते है।

लिंगागिरी विद्रोह (1856)

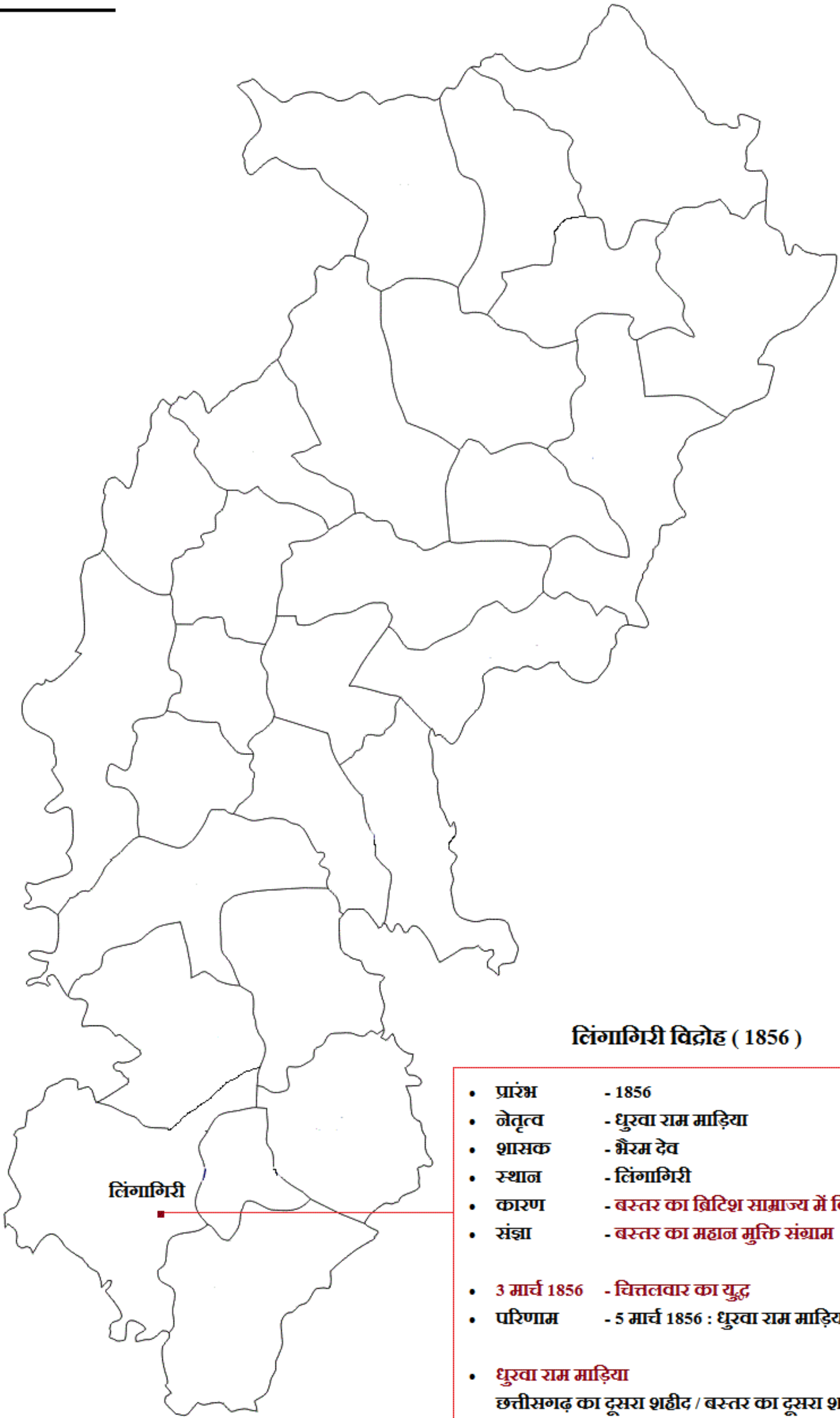

लिंगागिरी विद्रोह (1856)

- प्रारंभ - 1856
- नेतृत्व - धुरवा राम माड़िया
- शासक - भैरम देव
- स्थान - लिंगागिरी
- कारण - बस्तर का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय
- संज्ञा - बस्तर का महान मुक्ति संग्राम
- 3 मार्च 1856 - चित्तलवार का युद्ध
- परिणाम - 5 मार्च 1856 : धुरवा राम माड़िया को फांसी
- धुरवा राम माड़िया
  छत्तीसगढ़ का दूसरा शहीद / बस्तर का दूसरा शहीद

कोई विद्रोह (1859)

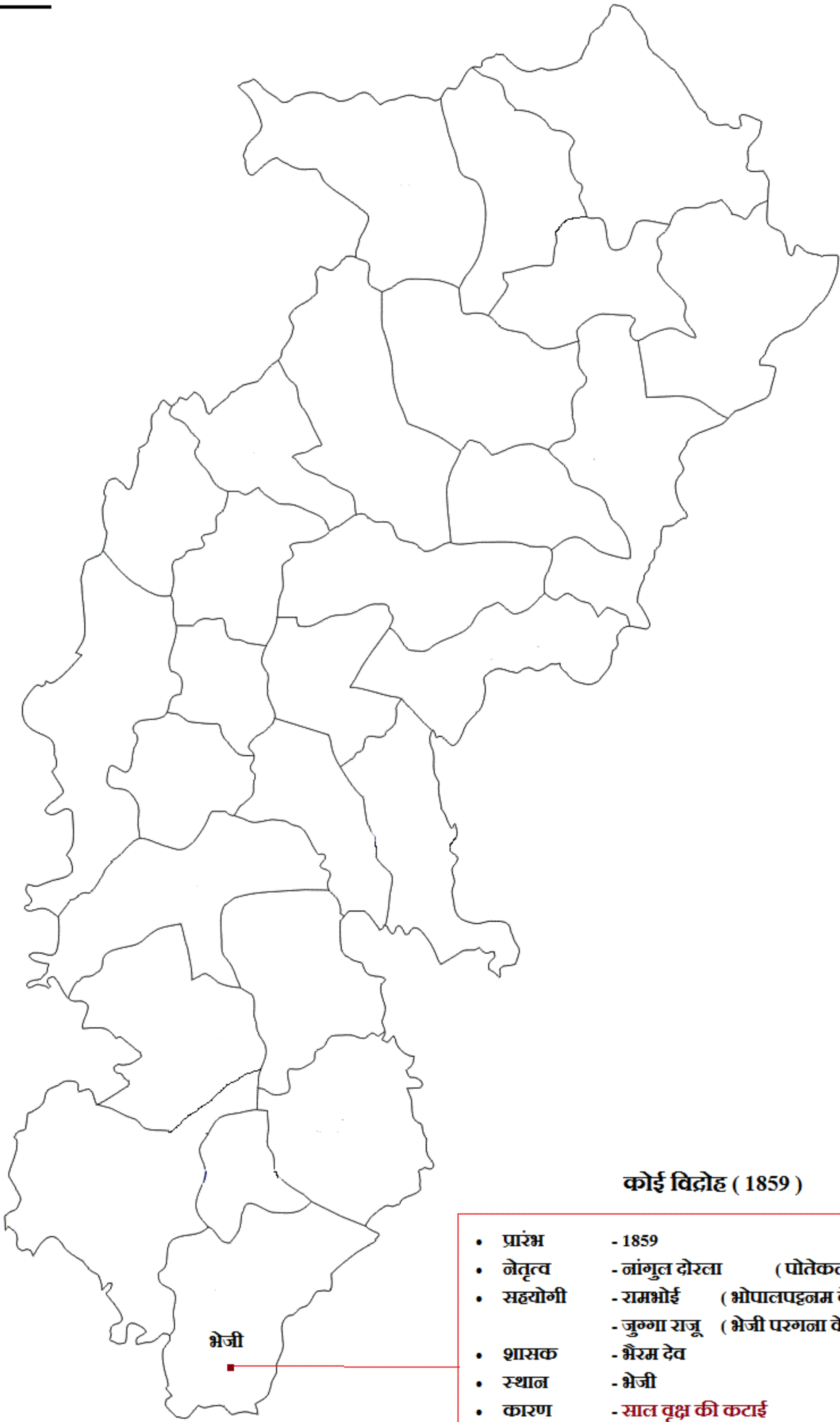

कोई विद्रोह (1859)

- प्रारंभ - 1859
- नेतृत्व - नांगुल दोरला (पोतेकला के जमींदार)
- सहयोगी - रामभोई (भोपालपट्नम के जमींदार)
  - जुग्गा राजू (भेजी परगना के जमींदार)
- शासक - भैरम देव
- स्थान - भेजी
- कारण - साल वृक्ष की कटाई
- नारा - "एक साल वृक्ष , एक सिर के बराबर"
- परिणाम - एकमात्र सफल आंदोलन

मुड़िया विद्रोह / मुरिया विद्रोह (1876)

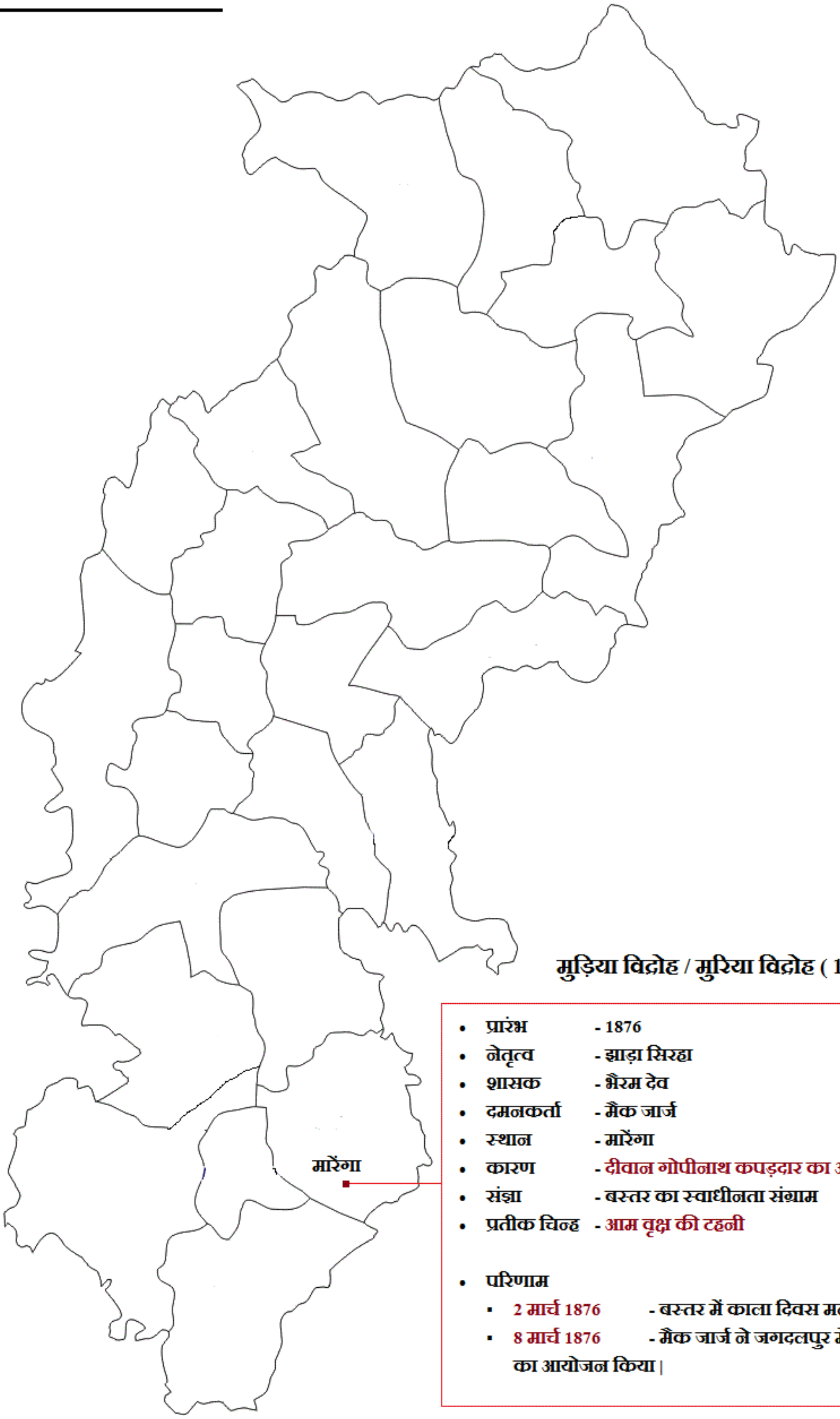

मुड़िया विद्रोह / मुरिया विद्रोह (1876)

- प्रारंभ - 1876
- नेतृत्व - झाड़ा सिरहा
- शासक - भैरम देव
- दमनकर्ता - मैक जार्ज
- स्थान - मारेंगा
- कारण - दीवान गोपीनाथ कपड़दार का आतंक
- संज्ञा - बस्तर का स्वाधीनता संग्राम
- प्रतीक चिन्ह - आम वृक्ष की टहनी
- परिणाम
  - 2 मार्च 1876 - बस्तर में काला दिवस मनाया गया |
  - 8 मार्च 1876 - मैक जार्ज ने जगदलपुर में मुरिया दरबार का आयोजन किया |

भूमकाल विद्रोह (1910)

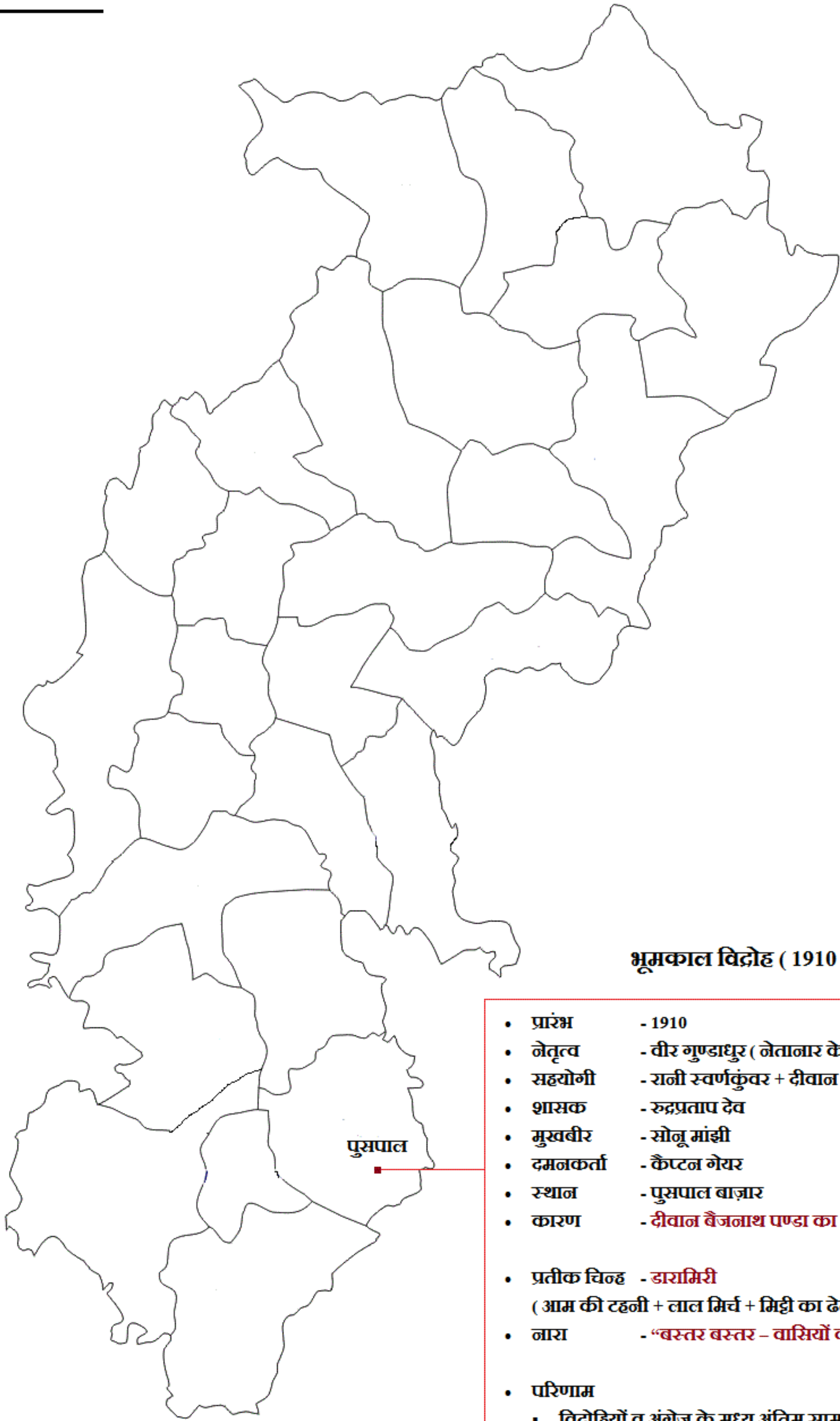

भूमकाल विद्रोह (1910)

- प्रारंभ - 1910
- नेतृत्व - वीर गुण्डाधुर (नेतानार के जमींदार)
- सहयोगी - रानी स्वर्णकुंवर + दीवान लालकालेंद्र सिंह
- शासक - रुद्रप्रताप देव
- मुखबीर - सोनू मांझी
- दमनकर्ता - कैप्टन गेयर
- स्थान - पुसपाल बाज़ार
- कारण - दीवान बैजनाथ पण्डा का आतंक

- प्रतीक चिन्ह - डारामिरी
  (आम की टहनी + लाल मिर्च + मिट्टी का ढेला + धनुष + भाला)
- नारा - "बस्तर बस्तर – वासियों का है"

- परिणाम
  - विद्रोहियों व अंग्रेज के मध्य अंतिम सामना अलवार में हुआ |
  - 29 मार्च 1910 - वीर गुण्डाधुर फरार

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

---------------------- काकतीय वंश ----------------------

सामान्य परिचय

1. इस राज्य के इस क्षेत्र में काकतीय वंश ने शासन किया था :

(A) सरगुजा (B) छुईखदान
(C) बस्तर (D) जशपुर
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGVyapam Asst. Account Officer 2017]

उत्तर (C)

काकतीय वंश

- शासनकाल - 1324 – 1947
- शासन क्षेत्र - बस्तर
- संस्थापक - अन्नमदेव
- वास्तविक संस्थापक - अन्नमदेव
- अंतिम स्वतंत्र शासक - अजमेर सिंह
- अंतिम शासक - प्रवीरचंद भंजदेव

राजधानी

- प्रथम राजधानी - मंदोता (अन्नमदेव)
- द्वितीय राजधानी - बस्तर (पुरुषोत्तम देव)
- तृतीय राजधानी - जगदलपुर (दलपत देव)

महत्वपूर्ण तथ्य

- धर्म - शैव धर्म
- मंदिर - शिव / माता
- कुलदेवी - दंतेश्वरी देवी
- साक्ष्य - दंतेवाड़ा अभिलेख
- अधीनता - मराठा वंश
- समकालीन वंश , छिंदकनाग वंश - मराठा वंश , फणिनाग

2. दंतेवाड़ा की देवी दंतेश्वरी निम्न में से किस राजवंश की कुलदेवी थी ?

(A) काकतीय (B) चालुक्य
(C) सातवाहन (D) कल्चुरी
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC MAINS 2011]

उत्तर (A)

काकतीय वंश

- शासनकाल - 1324 – 1947
- शासन क्षेत्र - बस्तर
- संस्थापक - अन्नमदेव
- वास्तविक संस्थापक - अन्नमदेव
- अंतिम स्वतंत्र शासक - अजमेर सिंह
- अंतिम शासक - प्रवीरचंद भंजदेव

राजधानी

- प्रथम राजधानी - मंदोता (अन्नमदेव)
- द्वितीय राजधानी - बस्तर (पुरुषोत्तम देव)
- तृतीय राजधानी - जगदलपुर (दलपत देव)

महत्वपूर्ण तथ्य

- धर्म - शैव धर्म
- मंदिर - शिव / माता
- कुलदेवी - दंतेश्वरी देवी
- साक्ष्य - दंतेवाड़ा अभिलेख
- अधीनता - मराठा वंश
- समकालीन वंश , छिंदकनाग वंश - मराठा वंश , फणिनाग

3. काकतीय वंश के वास्तविक संस्थापक थे :

(A) अन्नमदेव (B) अजमेर सिंह
(C) दरियादेव (D) भूपाल देव
(E) महिपाल देव

उत्तर (A)

काकतीय वंश

- संस्थापक - अन्नमदेव
- वास्तविक संस्थापक - अन्नमदेव
- अंतिम स्वतंत्र शासक - अजमेर सिंह
- मराठा अधीन प्रथम शासक - दरियादेव
- मराठा अधीन अंतिम शासक - महिपाल देव
- ब्रिटिश अधीन प्रथम शासक - भैरम देव
- ब्रिटिश अधीन अंतिम शासक - प्रवीरचंद भंजदेव
- अंतिम शासक - प्रवीरचंद भंजदेव

4. काकतीय वंश के अंतिम स्वतंत्र शासक थे :
(A) अन्नमदेव (B) अजमेर सिंह
(C) दरियादेव (D) भूपाल देव
(E) महिपाल देव

उत्तर (B)

काकतीय वंश

- संस्थापक - अन्नमदेव
- वास्तविक संस्थापक - अन्नमदेव
- अंतिम स्वतंत्र शासक - अजमेर सिंह
- मराठा अधीन प्रथम शासक - दरियादेव
- मराठा अधीन अंतिम शासक - महिपाल देव
- ब्रिटिश अधीन प्रथम शासक - भैरम देव
- ब्रिटिश अधीन अंतिम शासक - प्रवीरचंद भंजदेव
- अंतिम शासक - प्रवीरचंद भंजदेव

5. काकतीय वंश के अंतिम शासक थे :
(A) अन्नमदेव (B) अजमेर सिंह
(C) दरियादेव (D) प्रवीरचंद भंजदेव
(E) महिपाल देव

उत्तर (D)

काकतीय वंश

- संस्थापक - अन्नमदेव
- वास्तविक संस्थापक - अन्नमदेव
- अंतिम स्वतंत्र शासक - अजमेर सिंह
- मराठा अधीन प्रथम शासक - दरियादेव
- मराठा अधीन अंतिम शासक - महिपाल देव
- ब्रिटिश अधीन प्रथम शासक - भैरम देव
- ब्रिटिश अधीन अंतिम शासक - प्रवीरचंद भंजदेव
- अंतिम शासक - प्रवीरचंद भंजदेव

स्थापत्य

6. दंतेश्वरी मंदिर कहाँ स्थित है ?
(A) सरगुजा (B) दुर्ग
(C) दंतेवाड़ा (D) रायगढ़
(E) बिलासपुर

[CGPSC LIBRARIAN 2008]

उत्तर (C)

"अन्नराज" की उपाधि से सुसज्जित अन्नमदेव ने 1324 में छिंदकनागवंश के अंतिम शासक हरीशचन्द्र देव को पराजित कर बस्तर में काकतीय वंश की स्थापना किया | दंतेवाड़ा शिलालेख के अनुसार इन्होनें शंखनी – डंकिनी नदी के संगम पर दंतेवाड़ा नगर स्थापत्य कर वहां दंतेश्वरी देवी मंदिर का निर्माण किया | यह मंदिर काकतीय वंश की कुलदेवी मणिकेश्वरी देवी को समर्पित है | यह एक केंद्र संरक्षित स्मारक है |

बस्तर दशहरा का आयोजन प्रतिवर्ष सावन अमावस्या (हरेली अमावस्या) से अश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी के अवसर पर सिरहासार (जगदलपुर) में किया जाता है | यह पर्व दंतेश्वरी देवी (मावली देवी) को समर्पित है | बस्तर दशहरा में दंतेश्वरी देवी की रथयात्रा का आयोजन किया जाता है | इस पर्व में मुण्डा जनजाति द्वारा 'मार नृत्य' अपनी सांस्कृतिक दृष्टि का परिचायक है |

7. मां दंतेश्वरी मंदिर कहाँ स्थित है ?
(A) दंतेवाड़ा (B) बारसूर
(C) भोरमदेव (D) चंद्रपुर
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGVyapam BOARD COORDINATOR 2008]

उत्तर (A)

"अन्नराज" की उपाधि से सुसज्जित अन्नमदेव ने 1324 में छिंदकनागवंश के अंतिम शासक हरीशचन्द्र देव को पराजित कर बस्तर में काकतीय वंश की स्थापना किया | दंतेवाड़ा शिलालेख के अनुसार इन्होनें शंखनी – डंकिनी नदी के संगम पर दंतेवाड़ा नगर स्थापत्य कर वहां दंतेश्वरी देवी मंदिर का निर्माण किया | यह मंदिर काकतीय वंश की कुलदेवी मणिकेश्वरी देवी को समर्पित है | यह एक केंद्र संरक्षित स्मारक है |

बस्तर दशहरा का आयोजन प्रतिवर्ष सावन अमावस्या (हरेली अमावस्या) से अश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी के अवसर पर सिरहासार (जगदलपुर) में किया जाता है | यह पर्व दंतेश्वरी देवी (मावली देवी) को समर्पित है | बस्तर दशहरा में दंतेश्वरी देवी की रथयात्रा का आयोजन किया जाता है | इस पर्व में मुण्डा जनजाति द्वारा 'मार नृत्य' अपनी सांस्कृतिक दृष्टि का परिचायक है |

8. भैरम महादेव मंदिर स्थित है :
(A) बस्तर (B) सुकमा
(C) कांकेर (D) बीजापुर
(E) दंतेवाड़ा

उत्तर (D)

काकतीय वंश के शासक भैरमदेव बीजापुर में भैरमगढ़ शहर की स्थापना किया तथा भैरमगढ़ में भैरम महादेव मंदिर की स्थापना किया |

युद्ध (आक्रमण)

9. तृतीय आंग्ल – मराठा युद्ध के समय काकतीय वंश के शासक थे :
(A) दरियादेव (B) महिपाल देव
(C) भूपाल देव (D) भैरम देव
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (B)

तृतीय आंग्ल – मराठा युद्ध 1818 के समय काकतीय वंश के शासक महिपाल देव थे | तृतीय आंग्ल – मराठा युद्ध के पश्चात् सहायक संधि के तहत मराठा वंश का विलय हो गया | महिपाल देव आंग्ल - मराठा अधीन प्रथम शासक थे |

10. छत्तीसगढ़ में आक्रमण करने वाला पहला मुस्लिम कौन था ?
(A) मांडू का महमूद खिलजी
(B) गोलकुंडा का कुली कुतुबशाह
(C) गोलकुंडा का अब्दुल्ला कुतुब शाह
(D) इलाहबाद के परवेज खां
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (A)

मांडू का महमूद खिलजी छत्तीसगढ़ में आक्रमण करने वाला पहला मुस्लिम था | महमूद खिलजी ने रतनपुर के कल्चुरी वंश के शासक बाहरेन्द्र साय पर आक्रमण किया और पराजित हुआ |

11. छत्तीसगढ़ में आक्रमण करने वाला दूसरा मुस्लिम कौन था ?
(A) मांडू का महमूद खिलजी
(B) गोलकुंडा का कुली कुतुबशाह
(C) गोलकुंडा का अब्दुल्ला कुतुब शाह
(D) इलाहबाद के परवेज खां
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (B)

गोलकुंडा का कुली कुतुबशाह छत्तीसगढ़ में आक्रमण करने वाला दूसरा मुस्लिम था | कुली कुतुबशाह ने काकतीय वंश के शासक प्रतापराज देव पर आक्रमण किया और पराजित हुआ |

12. छत्तीसगढ़ में आक्रमण करने वाला तीसरा मुस्लिम कौन था ?
(A) मांडू का महमूद खिलजी
(B) गोलकुंडा का कुली कुतुबशाह
(C) गोलकुंडा का अब्दुल्ला कुतुब शाह
(D) इलाहबाद के परवेज खां
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (C)

गोलकुंडा का अब्दुल्ला कुतुब शाह छत्तीसगढ़ में आक्रमण करने वाला तीसरा मुस्लिम था | अब्दुल्ला कुतुब शाह ने काकतीय वंश के शासक जगदीशराज देव पर आक्रमण किया और पराजित हुआ |

13. बस्तर क्षेत्र में आक्रमण करने वाला प्रथम भोंसला सेनापति था :
(A) नीलू पंत (B) रामचंद्र बाघ
(C) भास्कर पंत (D) धरम पंत
(E) महिपाल देव

उत्तर (A)

नीलू पंत का आक्रमण

दलपत देव पर **भोंसले सेनापति नीलू पंत** का आक्रमण हुआ तथा नीलू पंत पराजित हुआ |

रामचंद्र बाघ का आक्रमण

- कारण - महिपाल देव ने भोंसलों को टकोली देना बंद कर दिया |
- युद्ध - **व्योमकोजी भोंसलें** के सेनापति **रामचंद्र बाघ** के नेतृत्व में बस्तर पर आक्रमण किया गया |
- परिणाम - महिपाल देव पराजित हुए तथा **सिहावा परगना** मराठों को देना पड़ा |

14. बस्तर क्षेत्र में भोंसला सेनापति नीलू पंत ने किस काकतीय वंश के शासक पर आक्रमण किया था ?

(A) अजमेर सिंह (B) दलपत देव
(C) दिकपाल देव (D) दरिया देव
(E) महिपाल देव

उत्तर (B)

नीलू पंत का आक्रमण

दलपत देव पर **भोंसले सेनापति नीलू पंत** का आक्रमण हुआ तथा नीलू पंत पराजित हुआ |

रामचंद्र बाघ का आक्रमण

- कारण - महिपाल देव ने भोंसलों को टकोली देना बंद कर दिया |
- युद्ध - **व्योमकोजी भोंसलें** के सेनापति **रामचंद्र बाघ** के नेतृत्व में बस्तर पर आक्रमण किया गया |
- परिणाम - महिपाल देव पराजित हुए तथा **सिहावा परगना** मराठों को देना पड़ा |

15. बस्तर क्षेत्र में व्योमकोजी भोंसलें के सेनापति रामचंद्र बाघ ने किस काकतीय वंश के शासक पर आक्रमण किया था ?

(A) अजमेर सिंह (B) दलपत देव
(C) दिकपाल देव (D) दरिया देव
(E) महिपाल देव

उत्तर (E)

नीलू पंत का आक्रमण

दलपत देव पर **भोंसले सेनापति नीलू पंत** का आक्रमण हुआ तथा नीलू पंत पराजित हुआ |

रामचंद्र बाघ का आक्रमण

- कारण - महिपाल देव ने भोंसलों को टकोली देना बंद कर दिया |
- युद्ध - **व्योमकोजी भोंसलें** के सेनापति **रामचंद्र बाघ** के नेतृत्व में बस्तर पर आक्रमण किया गया |
- परिणाम - महिपाल देव पराजित हुए तथा **सिहावा परगना** मराठों को देना पड़ा |

बस्तर दशहरा

16. बस्तर दशहरा का आयोजन कितनें दिनों तक होता है ?

(A) 72 दिन (B) 73 दिन
(C) 74 दिन (D) 75 दिन
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC SEE 2017]

उत्तर (E)

बस्तर दशहरा

- प्रारंभ - 1468
- प्रारंभ कर्ता - पुरुषोत्तम देव
- स्थल - सिरहासार (जगदलपुर)
- आराध्य देवी - दंतेश्वरी देवी (मावली देवी)
- आयोजन - सावन अमावस्या (हरेली अमावस्या) से अश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी
- कुल अवधि - 75 दिन
- कार्यक्रम - पाटा जात्रा
- प्रमुख रस्म - 13 दिन तक (आश्विन अमावस्या से अश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी)
- प्रथम रस्म - काछिनगादी
- अंतिम रस्म - ओड़ाड़ी (गंगामुणा जात्रा)

17. मावली परघाव का आयोजन कब किया जाता है ?

(A) आश्विन शुक्ल नवमी (B) आश्विन शुक्ल दशमी
(C) आश्विन शुक्ल अष्टमी (D) कार्तिक शुक्ल नवमी
(E) कार्तिक शुक्ल दशमी

[CGPSC SEE 2017]

उत्तर (A)

मावली परघाव बस्तर दशहरा में आयोजित होने वाली एक प्रमुख रस्म है | इसका अर्थ - मावली माता का स्वागत करना | इसका आयोजन बस्तर दशहरा के दौरान आश्विन शुक्ल नवमी के अवसर पर सिरहासार (जगदलपुर) में किया जाता है | इसमें दंतेश्वरी माता की बड़ी बहन मावली माता की प्रतिमा को दंतेवाड़ा से बस्तर 4 माड़िया व्यक्तियों द्वारा डोली में लाया जाता है |

18. जोगी बिठाई का प्रमुख रस्म है :

(A) काछिन देवी को गद्दी प्रदान (B) लकड़ी की पूजा

(C) मावली माता की विदाई (D) कलश स्थापना

(E) मावली माता का स्वागत करना

[CGVyapam RI 2017]

उत्तर (D)

जोगी बिठाई बस्तर दशहरा में आयोजित होने वाली एक प्रमुख रस्म है | इसका अर्थ - हल्बा जाति का एक व्यक्ति सिरासार में 9 दिन तक व्रत रखकर योग साधना में बैठता है जिसे जोगी बिठाई कहते है |

इसका आयोजन बस्तर दशहरा के दौरान आश्विन शुक्ल पक्ष प्रथमा (नवरात्र का प्रथम दिवस) के अवसर पर सिरहासार (जगदलपुर) में किया जाता है | इसमें प्रमुख रस्म "कलश स्थापना" है |

19. बस्तर दशहरा के दौरान आश्विन अमावस्या के अवसर पर किस देवी या देवता की पूजा की जाती है ?

(A) दंतेश्वरी देवी (B) मणिकेश्वरी

(C) मावली देवी (D) काछिन देवी

(E) भगवान जगन्नाथ

[CGVyapam FCPR 2016]

उत्तर (D)

काछिनगादी बस्तर दशहरा में आयोजित होने वाला प्रथम रस्म है | इसका अर्थ - काछिन देवी को गद्दी प्रदान करना | काछिनगादी एक बेल कांटों से तैयार झुला होता है | इसका आयोजन बस्तर दशहरा के दौरान आश्विन अमावस्या के अवसर पर सिरहासार (जगदलपुर) में किया जाता है | इसमें काछिन देवी की पूजा की जाती है | काछिनगादी पर मिरगान जाति की 9 वर्ष की कुंवारी बालिका काछिन देवी के रूप में बैठकर रथ परिचालन व पर्व की अनुमति देती है |

20. बस्तर दशहरा का आयोजन प्रारंभ होता है :

(A) आषाण अमावस्या (B) सावन अमावस्या

(C) भाद्र अमावस्या (D) अश्विन अमावस्या

(E) कार्तिक अमावस्या

उत्तर (B)

बस्तर दशहरा

- प्रारंभ - 1468
- प्रारंभ कर्ता - पुरुषोत्तम देव
- स्थल - सिरहासार (जगदलपुर)
- आराध्य देवी - दंतेश्वरी देवी (मावली देवी)
- आयोजन - सावन अमावस्या (हरेली अमावस्या) से अश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी
- कुल अवधि - 75 दिन
- कार्यक्रम - पाटा जात्रा
- प्रमुख रस्म - 13 दिन तक (आश्विन अमावस्या से अश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी)
- प्रथम रस्म - काछिनगादी
- अंतिम रस्म - ओड़ाड़ी (गंगामुणा जात्रा)

---------------------- ALL THE BEST ----------------------

मुख्य परीक्षा आधारित महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

Question 1. **अन्नमदेव की भूमिका पर प्रकाश डालिए | (अंक : 2 , शब्द सीमा : 30)**

"अन्नराज" की उपाधि से सुसज्जित अन्नमदेव ने 1324 में छिंदकनागवंश के अंतिम शासक हरीशचन्द्र देव को पराजित कर बस्तर में काकतीय वंश की स्थापना किया | इन्होनें मंदोता को अपनी राजधानी बनाया | दंतेवाड़ा शिलालेख के अनुसार इन्होनें शंखनी – डंकिनी नदी के संगम पर दंतेवाड़ा नगर स्थापत्य कर वहां दंतेश्वरी देवी मंदिर का निर्माण किया | यह मंदिर काकतीय वंश की कुलदेवी मणिकेश्वरी देवी को समर्पित है |

Question 2. **पुरुषोत्तम देव की भूमिका पर प्रकाश डालिए | (अंक : 2 , शब्द सीमा : 30)**

पुरुषोत्तम देव ने 1468 में जगन्नाथ पुरी की यात्रा पेट के बल पहुंचकर भगवान जगन्नाथ का दर्शन किया | पुरी के शासक ने पुरुषोत्तम देव को 'लाहरू रथपति' की उपाधि से सुसज्जित किया तथा 16 पहियों वाला रथ प्रदान किया | पुरुषोत्तम देव ने 1468 में बस्तर का दशहरा तथा बस्तर का रथयात्रा (गोंचा पर्व) का प्रारंभ किया | बस्तर का दशहरा तथा गोंचा पर्व में रथ चलाने की प्रथा की शुरुवात की | इन्होने अपनी राजधानी मंदोता से बस्तर में स्थानांतरित किया |

Question 3. **दंतेश्वरी देवी मंदिर को रेखांकित कीजिये | (अंक : 8 , शब्द सीमा : 100)**

"अन्नराज" की उपाधि से सुसज्जित अन्नमदेव ने 1324 में छिंदकनागवंश के अंतिम शासक हरीशचन्द्र देव को पराजित कर बस्तर में काकतीय वंश की स्थापना किया | दंतेवाड़ा शिलालेख के अनुसार इन्होनें शंखनी – डंकिनी नदी के संगम पर दंतेवाड़ा नगर स्थापत्य कर वहां दंतेश्वरी देवी मंदिर का निर्माण किया | यह मंदिर काकतीय वंश की कुलदेवी मणिकेश्वरी देवी को समर्पित है | यह एक केंद्र संरक्षित स्मारक है |

बस्तर दशहरा का आयोजन प्रतिवर्ष सावन अमावस्या (हरेली अमावस्या) से अश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी के अवसर पर सिरहासार (जगदलपुर) में किया जाता है | यह पर्व दंतेश्वरी देवी (मावली देवी) को समर्पित है | बस्तर दशहरा में दंतेश्वरी देवी की रथयात्रा का आयोजन किया जाता है | इस पर्व में मुण्डा जनजाति द्वारा 'मार नृत्य' अपनी सांस्कृतिक दृष्टि का परिचायक है |

मूल्यांकन – दंतेश्वरी देवी मंदिर का प्राकृतिक सौंदर्य के साथ ही अपनी वास्तुकला की पृष्ठभूमि के लिए भी अद्वितीय है | यह मंदिर छत्तीसगढ़ की सुंदरता का प्रतीक है | इसका छत्तीसगढ़ पर्यटन में अतुलनीय योगदान है | छत्तीसगढ़ राजस्व में इसका महत्वपूर्ण योगदान है |

Question 4. **गोंचा पर्व की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर सांस्कृतिक परिदृश्य को रेखांकित कीजिये | (अंक : 8 , शब्द सीमा : 100)**

पुरुषोत्तम देव ने 1468 में जगन्नाथ पुरी की यात्रा पेट के बल पहुंचकर भगवान जगन्नाथ का दर्शन किया | पुरी के शासक ने पुरुषोत्तम देव को 'लाहरू रथपति' की उपाधि से सुसज्जित किया तथा 16 पहियों वाला रथ प्रदान किया | पुरुषोत्तम देव ने 4 पहिएं भगवान जगन्नाथ को अर्पित कर दिए और 12 पहिएं के रथ साथ बस्तर वापस आये | उनका बस्तर में भव्य स्वागत किया गया | पुरुषोत्तम देव ने 1468 में बस्तर का दशहरा तथा बस्तर का रथयात्रा (गोंचा पर्व) का प्रारंभ किया | बस्तर का दशहरा तथा गोंचा पर्व में रथ चलाने की प्रथा की शुरुवात की |

गोंचा पर्व का आयोजन प्रतिवर्ष आषाण शुक्ल पक्ष द्वितीया के अवसर पर किया जाता है | यह पर्व भगवान जगन्नाथ को समर्पित है | गोंचा पर्व में भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा का आयोजन किया जाता है | इस पर्व में गोंचा नृत्य अपनी सांस्कृतिक दृष्टि का परिचायक है |

मूल्यांकन - यह बस्तर दशहरा के बाद बस्तर का दूसरा प्रमुख पर्व है | यह पर्व छत्तीसगढ़ नहीं वरन सम्पूर्ण भारत के श्रद्धालुओं की आस्था का परिचायक है | इसे बस्तर की रथयात्रा की संज्ञा से भी सुशोभित किया जाता है |

Question 5. बस्तर दशहरा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर सांस्कृतिक परिदृश्य को रेखांकित कीजिये | (अंक : 8 , शब्द सीमा : 100)

पुरुषोत्तम देव ने 1468 में जगन्नाथ पुरी की यात्रा पेट के बल पहुंचकर भगवान जगन्नाथ का दर्शन किया | पुरी के शासक ने पुरुषोत्तम देव को 'लाहरू रथपति' की उपाधि से सुसज्जित किया तथा 16 पहियों वाला रथ प्रदान किया | पुरुषोत्तम देव ने 4 पहिएं भगवान जगन्नाथ को अर्पित कर दिए और 12 पहिएं के रथ साथ बस्तर वापस आये | उनका बस्तर में भव्य स्वागत किया गया | पुरुषोत्तम देव ने 1468 में बस्तर का दशहरा तथा बस्तर का रथयात्रा (गोंचा पर्व) का प्रारंभ किया | बस्तर का दशहरा तथा गोंचा पर्व में रथ चलाने की प्रथा की शुरुवात की |

बस्तर दशहरा का आयोजन प्रतिवर्ष सावन अमावस्या (हरेली अमावस्या) से अश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी के अवसर पर सिरहासार (जगदलपुर) में किया जाता है | इसका आयोजन 75 दिनों तक होता है अर्थात् यह विश्व का सबसे लम्बी अवधि तक मानाये जाने वाला पर्व है | यह पर्व दंतेश्वरी देवी (मावली देवी) को समर्पित है | बस्तर दशहरा में मावली देवी की रथयात्रा का आयोजन किया जाता है | इस पर्व में मुण्डा जनजाति द्वारा 'मार नृत्य' अपनी सांस्कृतिक दृष्टि का परिचायक है |

मूल्यांकन - बस्तर दशहरा छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर अंचल में आयोजित होने वाले पारंपरिक पर्वों में सर्वश्रेष्ठ पर्व है | बस्तर दशहरा सम्पूर्ण भारत में आयोजित दशहरा से भिन्न है | सम्पूर्ण भारत में दशहरा का आयोजन राम द्वारा रावण के वध को समर्पित है जबकि बस्तर दशहरा दंतेश्वरी माता द्वारा महिषासुर के वध को समर्पित है |

Question 6. पाटा जात्रा को रेखांकित कीजिये | (अंक : 4 , शब्द सीमा : 60)

पाटा जात्रा बस्तर दशहरा का प्रथम प्रथा है | इसका अर्थ - लकड़ी की पूजा व रथ का निर्माण | इसका प्रारंभ सावन अमावस्या (हरेली अमावस्या) के अवसर पर सिरहासार (जगदलपुर) में किया जाता है | इसमें रथ निर्माण हेतु बिलोरी जंगल से साल लकड़ी लाकर उसकी पूजा की जाती है | इसमें 7 मांगुर मछलियों का अर्पण किया जाता है | सामान्यतया रथ बनाने वाले बढ़ई झार उमरगांव के , रथ बनाने वाले लोहार बेड़ा उमरगांव के तथा रथ खींचने वाली रस्सी का निर्माण करने वाले केशपाल , करंजी , सोनाबाल गांव के होते है |

मूल्यांकन - बस्तर दशहरा छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर अंचल में आयोजित होने वाले पारंपरिक पर्वों में सर्वश्रेष्ठ पर्व है |

Question 7. काछिनगादी को रेखांकित कीजिये | (अंक : 4 , शब्द सीमा : 60)

काछिनगादी बस्तर दशहरा में आयोजित होने वाला प्रथम रस्म है | इसका अर्थ - काछिन देवी को गद्दी प्रदान करना | काछिनगादी एक बेल कांटों से तैयार झुला होता है | इसका आयोजन बस्तर दशहरा के दौरान आश्विन अमावस्या के अवसर पर सिरहासार (जगदलपुर) में किया जाता है | इसमें काछिन देवी की पूजा की जाती है | काछिनगादी पर मिरगान जाति की 9 वर्ष की कुंवारी बालिका काछिन देवी के रूप में बैठकर रथ परिचालन व पर्व की अनुमति देती है |

मूल्यांकन - बस्तर दशहरा छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर अंचल में आयोजित होने वाले पारंपरिक पर्वों में सर्वश्रेष्ठ पर्व है |

Question 8. जोगी बिठाई को रेखांकित कीजिये | (अंक : 2 , शब्द सीमा : 30)

जोगी बिठाई बस्तर दशहरा में आयोजित होने वाली एक प्रमुख रस्म है | इसका अर्थ - हल्बा जाति का एक व्यक्ति सिरासार में 9 दिन तक व्रत रखकर योग साधना में बैठता है जिसे जोगी बिठाई कहते है | इसका आयोजन बस्तर दशहरा के दौरान आश्विन शुक्ल पक्ष प्रथमा (नवरात्र का प्रथम दिवस) के अवसर पर सिरहासार (जगदलपुर) में किया जाता है | इसमें प्रमुख रस्म "कलश स्थापना" है |

Question 9. **मावली परघाव को रेखांकित कीजिये | (अंक : 2 , शब्द सीमा : 30)**

मावली परघाव बस्तर दशहरा में आयोजित होने वाली एक प्रमुख रस्म है | इसका अर्थ - मावली माता का स्वागत करना | इसका आयोजन बस्तर दशहरा के दौरान आश्विन शुक्ल नवमी के अवसर पर सिरहासार (जगदलपुर) में किया जाता है | इसमें दंतेश्वरी माता की बड़ी बहन मावली माता की प्रतिमा को दंतेवाड़ा से बस्तर 4 माड़िया व्यक्तियों द्वारा डोली में लाया जाता है |

Question 10. **परलकोट का विद्रोह को रेखांकित कीजिये | (अंक : 4 , शब्द सीमा : 60)**

24 दिसम्बर 1824 को लगान के विरोध में परलकोट के जमींदार गेंदसिंह के नेतृत्व में परलकोट विद्रोह का शुभारम्भ किया गया | यह विद्रोह काकतीय वंश के शासक महिपालदेव के शासनकाल में हुआ | इस विद्रोह का प्रतीक चिन्ह 'धावड़ा वृक्ष की टहनी' थी | कैप्टन पेबे द्वारा इस विद्रोह का दमन किया गया तथा 10 जनवरी 1825 को गेंदसिंह की गिरफ्तारी हुई | 20 जनवरी 1825 को गेंदसिंह को फांसी दिया गया |

मूल्यांकन – इस विद्रोह के समापन के साथ नागरिकों में एकता व राष्ट्रीय चेतना की भावना का विकास हुआ | इस विद्रोह की विफलता में भी एक नई क्रांति की ऊर्जा का संचार हुआ | गेंदसिंह छत्तीसगढ़ के प्रथम शहीद है |

Question 11. **मुड़िया विद्रोह को रेखांकित कीजिये | (अंक : 4 , शब्द सीमा : 60)**

"बस्तर का स्वाधीनता संग्राम" की संज्ञा से सुसज्जित मुड़िया विद्रोह का शुभारंभ 1876 में दीवान गोपीनाथ कपड़दार के आतंक विरोध में झाड़ा सिरहा के नेतृत्व में मारेंगा (सुकमा) से किया गया | यह विद्रोह काकतीय वंश के शासक भैरम देव के शासनकाल में हुआ | इस विद्रोह का प्रतीक चिन्ह 'आम वृक्ष की टहनी' थी | मैक जार्ज द्वारा इस विद्रोह का दमन किया गया | 2 मार्च 1876 को बस्तर में 'काला दिवस' मनाया गया | 8 मार्च 1876 को मैक जार्ज ने जगदलपुर में 'मुरिया दरबार' का आयोजन किया |

मूल्यांकन – इस विद्रोह के समापन के साथ नागरिकों में एकता व राष्ट्रीय चेतना की भावना का विकास हुआ | इस विद्रोह की विफलता में भी एक नई क्रांति की ऊर्जा का संचार हुआ | इस विद्रोह के नायक झाड़ा सिरहा आज भी इतिहास के पन्नों पर अपनी ऊर्जा प्रफुल्लित करते हुए प्रतीत होते है |

Question 12. **भूमकाल विद्रोह को रेखांकित कीजिये | (अंक : 8 , शब्द सीमा : 100)**

"बस्तर बस्तर – वासियों का है" के नारे के साथ 1910 में दीवान बैजनाथ पण्डा के आतंक विरोध में वीर गुण्डाधुर के नेतृत्व में पुसपाल बाज़ार से भूमकाल विद्रोह का शुभारंभ किया गया | रानी स्वर्णकुंवर व दीवान लालकालेंद्र सिंह इस विद्रोह में प्रमुख सहयोगी थे |

यह विद्रोह काकतीय वंश के शासक रुद्रप्रताप देव के शासनकाल में हुआ | इस विद्रोह का प्रतीक चिन्ह 'डारामिरी' (आम की टहनी + लाल मिर्च + मिट्टी का ढेला + धनुष + भाला) थी | सोनू मांझी की मुखबरी से कैप्टन गेयर द्वारा इस विद्रोह का दमन किया गया | विद्रोहियों व अंग्रेज के मध्य अंतिम सामना अलवार में हुआ | 29 मार्च 1910 वीर गुण्डाधुर फरार हो गये |

मूल्यांकन – इस विद्रोह के समापन के साथ नागरिकों में एकता व राष्ट्रीय चेतना की भावना का विकास हुआ | इस विद्रोह की विफलता में भी एक नई क्रांति की ऊर्जा का संचार हुआ | इस विद्रोह के नायक वीर गुण्डाधुर आज भी इतिहास के पन्नों पर अपनी ऊर्जा प्रफुल्लित करते हुए प्रतीत होते है | इस राज्य में वीर गुण्डाधुर राजकीय सम्मान खेलरत्न पुरुस्कार है |

RAKESH SAO

CSE (BIT , Durg)

DIRECTOR (PSC ACADEMY)

FOR COMPLETE NOTES VISIT

WWW.PSCACADEMY.IN

STEPS TO DOWNLOAD PDF NOTES

(1) www.pscacademy.in

(2) CLICK ON "DOWNLOAD"

(3) CLICK ON "PSC ACADEMY SPECIAL"

PSC ACADEMY

(RAIPUR)

2016 TOP 10 SELECTIONS

NISHANT TIWARI
CGPSC 2016
7TH POST RANK

PUNESHWAR VERMA
STATE ENGG SERVICES
2ND RANK

CHANDRAKANT BAGHEL
FOOD INSPECTOR
10TH RANK

SURESH PIPRE
ACF 2016
3RD RANK (CAT)

CGPSC NEW BATCHES START FROM 1ST OCTOBER

CGPSC PRE / CG VYAPAM	TIME - 5PM TO 7PM
CGPSC MAINS	TIME - 7PM TO 9PM

DOWNLOAD ALL STUDY MATERIALS FROM
WWW.PSCACADEMY.IN

PSC ACADEMY
BESIDE DENA BANK, GOL CHOWK,
ROHANIPURAM, D.D. NAGAR,
NEAR NIT RAIPUR, RAIPUR (C.G.)

CONTACT 9827112187
9302766733

RAKESH SAO
CSE (BIT , Durg)
DIRECTOR

PSC ACADEMY

(BILASPUR)

2016 TOP 10 SELECTIONS

NISHANT TIWARI
CGPSC 2016
7TH POST RANK

PUNESHWAR VERMA
STATE ENGG SERVICES
2ND RANK

CHANDRAKANT BAGHEL
FOOD INSPECTOR
10TH RANK

SURESH PIPRE
ACF 2016
3RD RANK (CAT)

CGPSC NEW BATCHES START FROM 1ST NOVEMBER

CGPSC PRE / CG VYAPAM	TIME - 5PM TO 7PM
CGPSC MAINS	TIME - 7PM TO 9PM

DOWNLOAD ALL STUDY MATERIALS FROM
WWW.PSCACADEMY.IN

PSC ACADEMY BILASPUR

IN FRONT OF SARASWATI SHISHU MANDIR SCHOOL, NEAR BSNL OFFICE, MASJID CHOWK, RAJ KISHOR NAGAR, BILASPUR

CONTACT 9827112187
9302766733

RAKESH SAO
CSE (BIT , Durg)
DIRECTOR